

65/1/11
P.M.

30.05.1958
3/1/58

बलचनमा (21)

(मैथिली)

NOT FOR ISSUE

मूल लेखक

ना गा जु न

मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता

चुन्नी दोसर दिन भीरगरे हमरा उडोलक आ कहलक जे फूल बाबू सँ ई काज भऽ सकत । छोटका मालिक हुनके सँ कनी दबेल भऽ सकैत छथि । चुन्नीक ई विचार हमरा बड़ नीक लागल । हम चुपचाप लहेरियासराय पहुँचि गेलहुँ, गाड़ीयो ठीक समय पर भेटि गेल छल । लोक सब सँ पुकारी कऽ कऽ बरहमपूरा आ ओतऽ सँ आतरम पहुँचलहुँ । पहुँचला मे कनिको कष्ट नहि भेल ।

दूपहरक समय रहैक । आतरमक अंगनई मे एकटा बड़का आनक माछ छलैक । माछ तर एकटा कमलक (कमल) आसनी पर पलथी मारने फूल बाबू मगन भऽ कऽ चरखा काटि रहल छलाह ।

फूलबाबूक पैर पकड़ि कऽ हम कामए लगलहुँ । एकाएक पैर पकड़ने हमरा कमेत देखि फूलबाबूक मोन अकचका गेलैन आ हाथक पीर (पुनी) छूटि गेलैन सूत सेहो टूटि गेलैन । फूलबाबूक दाढ़ी मोझ तथा केश बड़ पैघ पेश छलैनह । देह उधारे छलैन । ठेहुन भरि खधरक धोती पहिरने छलाह । बाबू भैया केँ आइ तक हम एहन फकीर भेष मे नहि देखलैन छलियैन । फूल बाबू ठीक महातमा जकाँ हमरा वृक्षि पड़लाह । आव तऽ बेरागी बरहमचारी लोकनि केँ बिना देखाक धोती पहिरैत देखैत छियैन । अपना जनकपूरे मे एहि तरहक कसेकी बेरागी-बरहमचारी भेटतह । चोरोत, मटिहानी आगे

कतेक महँधान अपना लोकनिक दिस अछि । ओतऽ बेरागी लोकनिक पलटन सेहो रहैत छैन जकरा लोक नागा कहैत छै । ओ सब खूब मेंही मलमलक धोती घेंट सँ बान्हिक ढोर मे लपेटने रहैत छथि तकरा बेरागीलोकनि बरहमगांती कहैत छथिन ।

आतरम मे पहुँचिकऽ फूलबाबू के ओहि भेय मे जे हम देखलियैन तऽ भीतरक सब सरथा (श्रद्धा) उमड़ि आएल । एना तऽ प्रथमे जखन हम हुनका मालिकाइनक ओहि ठाम देखने छलियैन तखने हमर मोन हुनका मे गड़ि गेल छल । बाद मे चारि छोमात ओ हमरा पटना मे संगे रखलैन । बड़ा परेम सँ रखैत छलाह, जेना बाप बेटा केँ रखैत छैक आ आव एहि भेष मे देखिकऽ हमरा चोटेल मोन के एहन लागल जे इएह फूलबाबू हमर उद्धार करथि तऽ करथि नहि तऽ छोटका मालिकक परकोप सँ छुटकारा पाबक बार कोनो रस्ता नहि अछि । से हम हुनकर दूनु पैर छानिकऽ लुद्धत माटि पर परि रहलहुँ आ हिचुकि-हिचुकि कातऽ लगलहुँ ।

फूलबाबू हमरा उठा लेलनि । बेर-बेर पृच्छ लगलाह जे कि भेलो—बाबू कोन संकट तोरा ऊपर आवि गेलोक अछि ? माए तऽ ने दुखित झोक बलचनमा तोरा बहिन के तऽने किछु भऽ गेलोक अछि ।

हमर हिचुकी बन्धे ने होइत छल । बड़ीकालतक ओ हमरा देह पर हाथ फेरैत रहलाह । आँगुर सँ कतेक बेर नौर पोखलनि । हमर दशा देखिकऽ हुनकर चेहरा सपेता मालदह जकाँ भऽ गेलैन । ओहि दिन हमरा बूझऽ मे आएल जे दिल भरल हो, आ मारी ठेस लागल हो तऽ खूब कानक चाही । बड़ सँ मोन हलुक होइत छैक । बहुत नौर अहेला पर हमरो मोन जखन हलुक भेल तखन हिचकी बंद भेल ।

फूलबाबू दोतए सँ उठलाह, खादीक लच्छी आ पीर बला पधिया अपने

छटा लेलनि। आसनी आ चरखा हम लऽ लेलियनि। ओ आगां-आगां चललाह आ हम पाछां। दुनू गोटे ओइ कुटी मे अणलहुं जतए फूलबाध रहैन छलाह। फूलबाध मोने-मोने सोचने हेताह—खेत-पीत, एमहर-ओमहरक बात करत, धूमि-धामि कऽ आश्रमक चीज बस्तु देखत, मोन हलुक भऽ जेतैक तखन अपने सब बात कहि देत।

कहिए चुकल छिथ जे फूल बाधक स्वभाव बड़ नीठ रहैन। हुनका बात सँ मधु चुबैत छलैन, हुनका बाँलि सँ दूधक ठंढा भार पुहारा बनिकऽ बहइत छलैन। देखहो मे बहुत सुन्दर रहिय।

अपना कुटी मे जखन ओ पहुँचलाह तऽ दिनक एगारह बालि चूकल रहैक ओ काठक बबसा मे सुतक लच्छी सम्भारह लगलाह। उन चार दिन देखैत छलहुं। ई कुटी एक बड़का फूसक घरक एक छोट कोठली रहैक। कौंसक पातर बेवाक एक कमरा के दोसर कमरा सँ पराक करैत छलैक। खम्हेली शीशोके रहैक। बरैहो मे नाम आ पातर तखुआक व्यवहार कैल गेल रहैक। ऊपर चार खटू सँ छाड़ल गेल रहैक। कौंसक देवाल सँ काटिकऽ लोकोन खिड़की बनाओल गेल रहैक। ओसारा सँ बातीक जाफरी सँ बीच-बीच मे बेर देल गेल रहैक। बाँसक पहन कारीगरी अइ तँ पहिने हम कतौ नइ देखने छलियैक। फूलबाधक कमरा मे मामूली बसु-जात रहैन। सत एकटा खाट आ काठक एक बबसा। आगामि दू-दूटा ईंट राखिकऽ काठक एक तखता राखल छलैक ओहि पर गोठ दम-चारहेक पोथी। एक कोन मे माटिक घोल पानि सँ भरल राखल रहैक। छोट छिन कलगइयो लोटा हैथो रहैक। दुनू किनार मे दोरी बानहल अगमनीक नाँव पर बाँसक लगगा लटकैत छलैक। ओहि पर पचहरवीं रूपर का एक छोट छिन अंगपोछा लटकल दुखा-इत छलैक। शीशामे मद्धल तीन सूखत तीन दिस लटकैत छलैक। ओह

दिग बाँलि गइने देखलनि तऽ फूलबाध अपन गरबनि ईहेथेय बजलाह—महात्मा गाँधी छथि।

महात्माजीक नाँव सुनने तऽ हम बबस्ते रही आ सुननो एना रही जे सरकार बहादुर सँ केथो लोहा लऽ सकैत अछि तऽ गाँधी महात्मा लऽ सकैत छथि, अंग्रेज बहादुर के ओ नाक मे कोड़ी बान्हि देलखीन अछि। सरकार हुनका सँ हरान-हरान अछि। गाँधी के पकड़नाइ आ पानि मे आगि लगैनाइ दुनू मुश्किल अछि। महात्माजीक अकसर लोकनि बहलखाना मे राखि बैठ छैनह, मुदा भैया दोसर दिन हुनका दोसर ठाँव खराम पहीन कऽ टहलैत देखि सरकार बहादुर के पेटक पानि डोलऽ लगैत छैक। बगवई मे पकड़ि कऽ बंद कैलकनि तऽ लोक महात्माजी के कलकत्ता मे देखलकैन। बहमबाबाब मे पकड़ल गेलाह तऽ मद्रास मे मीटिंग करैत पाओल गेलाह। मनिवार ककाक मुँह सँ सुनने रही जे गाँधी महतमा के पूनाक जेलर खिसिया कऽ कोरू मे गोति देलकनि आ दू मोन सरिसो पेरवाक लेल कहलकैन। जेलर गोच्छे होयत जे दुसर-पातर कमजोर आदमी छथि, कोरू मे कि बहता, माफीनामा लिखि कऽ बेल जेताह। मुदा भैया, मनिवार कका कहलैन जे गाँधी बाबाक हाथ लगिते देरी अपनहि दुनू मोन सरिसो करू तेल मे बदलि गेलैक। मनिवार कका कहैत छलाह—कारी पड़ाइ जकाँ दूटा बड़का बड़का बेताल गाँधी महतमा के दालो दात भऽ कऽ हुनका संग चलैत छैन। ओहि बेताल लोकनिक ई खेल रहैक—एहि तरहक अजीब बात सँ भरल गाँधी-महतमाक नाँव अखन हमरा जिला जवार मे फैललनि, तखन हमरा कान मे हुनकर नाँव पड़ल। हम सोचैत रही जे गाँधी महतमा केहन हेताह। मुदा हुनका मे किछु नहि बावए। सोचि-सोचि कऽ रहि जाइत छलहुं। से बाद फोटो मे देखलियैन तऽ मोन सँ सन्तोष भेल। माथक केश छड़ल, कान छोट-छोट

आ गइल, नाहर कपार चेहरा कनेक नीचा दिग कइल गइल। ई रूप देखिने हमरा अतगुल लागल जे ई महतमा गाँधी छथि। ई तऽ अमन हमरा चुभान बसा सन गेल छथि। दोसर कोटी रोषदायक रहैक। बड़िया अंगा पहिरने आ माथ पर मुठ्ठा बन्धने। बड़का-बड़का मोड़। तेज-तरङ्गल आँखि—ई के छथि हम फूल बाबू सँ पुछलियेन। उत्तर भेटल—लोकमान तिलक। तऽ इहो कांग्रेस के भारी अफसर छथि। ओ कहलनि जे—नहि, छथि नहि। दिन भर खगंधास भऽ गेलैन मुदा बड़का भारी नेता छलन्ह।

तेसर कोटी दिस हाथ रेखा कऽ फूल बाबू कहलनि—ई तऽ अपना अइ ठामक राजिन्दर बाबू छथि। अपना अइठाम—दरभंगाक। फूल बाबू ईथि कऽ कहलनि दुन पागल कहाँ के। अपने अइठामक माने खाली अपने जिला अन्धार नइ होइ छइ। एकर माने होइ छइ अपन प्रांत, अपन कमिश्नरी, अपन जिला, अपन थाना, अपन इलाका आ अपन देश। अइ भारत देश मे छोटे नमहर नो चीज छैक। हमरा लोकनि कतए रहैत छी ते बिहार प्रांत कहबैत छैक। एकरा अन्दर उड़ीसा सेहो मिसल छैक। छोटानागपुर, भोजपुरी, तिरहुत आ मगहक इलाका सामिल छैक। राजिन्दर बाबू अपना के रहऽ बला छथि आ गाँधी महतमाक बड़का भारी चेला छथि। आला दरसाके वकील छलन्ह। बहुत बड़िया प्रैक्टिस रहैन। ते, इजार मोफिल रहैन। खानदानी रोक-दाव रहैन, जमीनदारी ठाढ़-बाट। सब छोड़ि-छाड़ि कऽ गाँधी महतमा के पाछाँ कबीर भऽ गेलाह अछि।

फूल बाबू एना तऽ थम बजैत छलाह मुदा कलनी-कलनी जेना बोलथक ठेकी फुजि जाइत छैक ओहिना हुनको भुँहक ठेकी फुजि जाइत छैन आ तखन गँवा हुनका के दुनिया भरिक अलम-गलम सुनि लऽ। एहन समय मे किछु बार पुछलाह आगि मे घी देनाइ बूझन्ह। अहीजेल हम चुप रहलहूँ।

ओ बजिते दलाह कि चंटी बजले। हम अकचका गेलहूँ। फूल बाबू कहलनि भोजनक बनावट छैक। बिकओ बूझन्ह। हमरा मलिकान मे भोज-मात होइते रहैत छलैक। टोल-परोस आ कहियो-कहियो छत्रसे गौमक बाभन देवता प्रांत खएवालेल अवैत रहैत। बूढ़, नेना, दुआन सब कैथी जखन आवि आवि तऽ कैथी घरेया आवि कऽ जोर सँ ई आवाज लगबितथि जे बिकओ हो। बिकओ हो। ते बिकओ के माने हमरा बूझल रहए मुदा भोजनक बनावटिक लेल चंटी बजा कऽ ई बिकओ हमरा लेल एकदम नब बात छल। मालिक कहलनि चल संगे खाएव। एतऽ ऊँच नीचक मंझट नहि छैक। गाँधी महतमा के गुन मानऽ बला आश्रम निवासी ने झूत-झूत मानैत छैक आऽने ऊँच नीच। तत कहै छिअ भैया फूल बाबूक ई बात सुनि कऽ हमरा बड़ा अतगुल भेल, सोने-माने ईसी आवि गेल। ऊँच नीचक भेद बहुत दिन सँ चलि अएलेक अछि आ बराबरि रहतेक। चारि आदमी के मानला सँ की होइत-जाइत छैक। फूल बाबू कहलनि जे लोटा लऽले आ जल्दी चल।

बासमक भनधा पर दोहरा कात पधुआर दिस रहैक। दू चारक छोट छिन पर, कौकनक टाट आ शीशीक दू टा खाम्ह छलैक। बड़ेरी पर टिकल चार, आ पाछा दिस घुँवा बहार देवाक लेल जाफरी बला खिड़की छलैक। खैवाक बास्ते एक चार बला नाम एकचारी। ताड़क पातक छोट-छोट बासनी ओइठाम ओछाओल छलइक। एक पौंती मे मालिक जा कऽ बसत गेलाह। आरो दस बारह बाबू लोकनि छलाह। अपना सन हम एसगरे रही। कए गोटे हमरा मालिक सँ पुछलखिन—बधाकऽ अपलह अछि। फूल बाबू ओइ बेचारी के बाहाँ बेकारे सतबडत छियइक हम बूझि गेलियह जे ई इशारा बाबू लोकनि के ककरा दिस रहैन। बूझलह भइया। ई इशारा रहैक फूल बाबूक स्त्री दिस। हुनका फूल बाबू नइहर मे छोड़ि देने रहयिन।

अपने आसुरम में वहराविक जीवन बिता रहल छलाह। फूल बाबू हुनका लोकनि के कहलखिन आहाँ लोकनि कहिना अलगदण्डू मारइत छी। ई हमरा पर सँ नहि पीतीक ओइदाम में आइल अछि। हुनके लोकनिक बहिषा ब्यैन्ह।

एक दोसर बाबू हंसइत कहलखिन—तऽ आहाँक आरहे कोनो दोसर दुलहिन ठीक होइत अछि अइ पर सब बाबू भडभाड कऽ हँसि पड़लाह।

आगाँ में पुरइतक पात परतल जा चुकल छलइक। पानि भरि-भरि कऽ गिलास राखल जा चुकल छलइक। बाबाजी महाराज आव भात परसइत रहथि। हम देखल जे उभर घोआइल खइक बपड़ा पहिने चिखन चुन-मुन नेइरा-मोहरा चला ओइ बाबू लोकनिक सोफा में भनमिया करि'कुल जकाँ लगइत छलइक। बड़ पातर टाँग, नाम बेह, धँसल ओखि आ डोंड में मइल बीती लपेटने रहे। जनक सेहो मइल रहैक। छातीक हड्डो देखाइत छलइक।

हम सोचल जे पैग सँ अंगरेज बहादुर, बलि जेतइ तऽ फेर इऐइ बाबू भइवा लोकनि अकसर बगताइ आ तखन अइ बाबाजी महाराजक सेहो उछार मऽ जेतनि। झिम्का हड्डो पर भावत चढ़तनि आ चेहरा पर चिकनई अएतनि। बूढ़ सभा मऽ गेलापर पढ़ि-गुन तऽ ई को सकताइ मुदा बाँकी भाराम सुमीवा हिनको भेटतइन। सोराज मेला पर कि हेतइक? इ बात पटना मे एक बेर हम महेन बाबू सँ पूछने रहियनि। ओ नि बधाव देने छलाह भइवा से कि कहिय? महेन बाबू इएह कहने छलाह जे सोराज मेला पर समक विनु फिरतइक, समक माग चमकतइक। हमरो, तोरी।

पात पर भात परतल गेलैक। दोतरक बाटी मे राइरिफ बाखि। बिना मिरचाइक आबुक सरकारी झुलैक। एक-एक काँक रिवाज भेटल छल। बाबू लोकनि भोजनक समय अजेत-बहियाइत रहलाह। हमर तऽ सोने ठीक नइ

रहे, कोनो तरहें हम कोर मारि लेलहुँ आ हाथ रोकि कऽ बैठ गेलहुँ। देखल, जे ओ पात मे दँड नहि झोड़ने रहथि। उठैत बेर पात केँ लपेटि कऽ सब केओ बाहर बहरेलाइ आ एक नमहर दाकी मे राखि देलखिन। हाथ मुँह बीबाक हेतु कोनो खात जगह नइ झुलैक, पैग मैदान रहैक।

फूल बाबू आ हम खाकऽ ओही कौठली मे अयलहुँ। फूल बाबू बिना ओझाइन के खात पर ओचरा गेला आ हमरो बैस जेल कहलनि। फूल बाबू केँ सुगरीक कवरा आ दहिनी खैवाक टोक रहैत मुदा अइ आश्रम मे आएला पर तऽ ओ इहो छोड़ि देने रहथि। एसहर-ओमहर ओखि मारि कऽ कुटी मे हम देखल तऽ थूतो नगरि नहि आएल, हँ खराम अवश्य रहैत। तखन हमरा फूल बाबूक पटनावला जीवन मोन पड़ल। कितिम-कितिमक गांजी, कमोज, कुत्ता, पाँच-पाँच, छो-छो कोट, तीन तीन जोड़ जूता, चारि-चारि जोड़ धोती, दू बीलिया, दू छोटा अंगपोछा, इध तन मोल मुन्नर मुसहरी, ओझाइन मे गवाबला लजर कम्मल, मुन्नर सतरांजी, तोसक, जहाँच, बीन गो गेलथा। हमर फूल बाबू राजा जकाँ रहैत छलाह, आब फकीर मऽ गेलाह अछि। मोन मे बड़ फकोट भेल। मुदा संगे-संग सर्वा से हो बड़ लागल।

कती काल बाद फूल बाबू पुछलनि जे कियाक अएलह अछि। फेर तऽ हम एक-एकटा पऽ सब बात कहि देलियनि। अंत मे पुछलियनि—छोटका मालिक थाना मे रिपोर्ट कऽ देलखिन अछि, हमरा ऊपर चोरीक क्षप्राथ लगाइलनि अछि। दरोघा तऽ नइ मानतैक। की तऽ घूस सेते वा बात के आगा बढ़ा देतैक। अइ पं हमरा छुटकारा कोना हैत?

एतेक बात सुनियो सेला पर फूल बाबूक मुँह सँ एको आखर नहि फुट-हनि। हमरा सब बात के ओ पीवि गेलाह। हम सोचल जे छोटका मालिक हिनकर फूका लागैत अछिन, इ पढ़ि तिवारिम कऽ देताह तऽ छोटका मालि-

कक मोन ठंढा भ जएतैन । थाना मे जे गान मालिक रिपोर्ट कऽ देलखीन अछि मे शांति खतम भऽ जाएत । फूल बाबू पुनी लीलि कऽ हमरा कऽ देताह अथवा कीनो दोसर आदमी के मालिकक ओइ ठान पड़ीथीन । कहुमा हो, काज तऽ हमर भइए जायत । मुदा फूल बाबू तऽ अगम कुँवा बनि गेलाह, जाइ मे तकली सँ लोक केँ डर लगैत छैक ।

हम माँचल जे आइ बाबू माँचि-माँचि कऽ कीनो बात कहलाह । मोर केँ जखन हम जाए लागव तऽ कीनो पुनी जकर देताह । हम बहुत बात सोचने रही । यदि फूल बाबूक इच्छा ऐतैन तऽ हम माल पुस्तक अपन ओइ ओड़ि कऽ हुनके गुलामी करव । फूल बाबूक मोन ऐतैन तऽ रिवमीक गोना जइदी कराकऽ माएक संग हम पटना चलि जाएव, ओतऽ रिक्शा खीच कऽ वा दीघा घाट पर जहाजक माला हो कऽ माएक छा अपन जिनगी सुदृश्य करव । नइ जी फूल बाबूक इएह राय ऐतैन कि कटिहार, मिलीमुड़ी वा जलपारे गूडी आकऽ चटकल मे मचरी करी तऽ ओही करव । एहि तरहक बहुत बात सोचि कऽ हम आश्रम पहुँचल रही । हमरा इही भरोला रहे कि फूल बाबू जखन गाँधी महतमा के चेला बनि गेलाह अछि तऽ हमरा मालिक के एहि जोर छुत्तमक बान्ते ओ दु बात जरूर कहथीन । गाँधी महतमा नइ बड़ा लाट सँ बेराइत छथि नइ छोटा लाट सँ, नइ सरकार सँ आ नइ अमला सँ । मरीयक पच्छ होत छथीन । फूल बाबूक सोही गाँधी महतमाक चेला भऽ हमरा वास्ते कि एतवी नहि करताह, कि अपना फूफा-फूफी के कमे बुझा बेथीन । ओइ दिन फेर फूल बाबू हमरा सोला मे गुँइ नइ फोललनि । हम बड़ी काल तक खल रहलहुँ । जेठक पास रहैक । आश्रम एक बड़ेका कलमबागक बीच मे रहला सँ ठंढा रहैक । कुटीक बाहर ओगारा मे एक सीतलपाटी पड़ल रहैक, टूट-फूटल सन । ओच पर हम चित भऽ कऽ जे

पड़लहुँ मे तकने निन झूठल जखन गोर्खियाँ लुभक करैत रहथि, सँझ होबई बला छलैक ।

ओखि नहोत उठलहुँ आ फूल बाबूक कुटीक नगरीक पहुँचलहुँ । भिजिर चढ़ल रहैक आ हुनू दरवाजा बन्द रहैक । हम कोइली फोकि कऽ भीतर नइ गेलहुँ, एतहर ओतहर घूमेन रहलहुँ । एतेक मे फेर घंटी बजलैक । ई की छैक ? देखल जे एक चौमुहाँ दलान मे बाबू भैया लोकनि जमा भऽ रहल अथि । हमहू ओतहरे गेलहुँ ।

दरवाजा तमहर नइ रहैक । मुदा ओकरा दलान नइ कहि मंडप कहौ तऽ बढ़िया । चौकोर मंडप, डांड भारि ऊँच । ऊपर चढ़वाक लेल चारि ईँट राखि कऽ तोक सीढ़ी बनल रहैक । खबुरक पातक बनल बड़कीटा सीतल-पाटी ओछाएल रहैक, हंसक रूप मे लोक सब बैस गेलाह । तब बाबू भैया रहथि । हमर छोदकी मलिकाइन सन चेहरा-मोहरावाली एक स्त्रीमन सेहो रहथिन । पच्छिम दिस कमलक एक चितकावर आतनी राखल रहैक । ओइ पर अंधेर छमिरवला भीती धारी एक बाबू बैस गेलाह । एकर बाबू तब एक शबाज मे श्लोक पढ़ऽ लगलाह । हमर हिम्मत नइ मेल जे मंडप मे जाकऽ बैसौ । नीचे फराक ठाह रहलहुँ । कनोकाक बाद ओ महिला भजन गावऽ लगलीह । बाकी बाबू-भैया ओकर गाओल पद के दोहरावए लगलाह ।

अधिक किछु नहि बुझलोपर एतेक तऽ हम बुझि गेलहुँ जे गाँधी महतमाक पूजा पाठक इएह तरीका छैन्ह । हमर फूलबाबू सेहो भजन भऽ कऽ भजन गाबैत रहथि । आशा जल जे राति मे भोजनक उपरान्त फूलबाबू किछु बजलाह । भूषा नइ बजलाह, तऽ कछमछा कऽ आ कनी नरमी सँ हुन-पुछलियैन—सरकार हमर निस्तार केना हेतै ?

अइपर कनीकाल गुम रहिकऽ फूल बाबू बजलाह—हमरा तऽ आव गाँव-

घर से कोनी सम्बन्ध नई रहल। माए आ बाबूजी आव सेहो हमरा सँ हारि मानि लेलेन अछि। पहिने चिट्ठी लेखिकऽ बात-विचार पूछैत छलाह। अखन हमरा दिस सँ बरोबर ओ उदासी देखलनि तऽ आव ओइतरहक बात चिट्ठी मे नई लिखैत छथि। पीसीक ओइटाग हम दू बरख सँ नई गेलहुं अछि। पीसा सँ भेंटकएला हमरा तीन बरख भऽ गेल। बालचन, आव लोही कहऽ जे एहना हालत मे हमरा कोनो बातक तोरा मालिक पर कतेक प्रभाव पड़ैत।

अन्हरिया राति रहैक। दोसर फुटी सँ खनिऽ खलारक आवाज उठैक तऽ पहिल रातिक इच्छुक निर्जनता फाटि जाइत छलैक। लगपासक गाँव सँ कुकुरक मुकनाइ लाफ-गाफ सुनाइत छलैक। राति अधिक नहि डेढ़ पहर बीतल हैतैक। सुदा आगरम मे रहऽ अछाक लेल दिन मे सुतनाइ मना रहैक। नींदक भीक सँ गरमी दिस मे आगरमक बाबू-भैया कोनो मोरचा लेत छलाह? जेतेत छह भैया? कोनो-कोनो मोराजी बाबू जरखा चलाकऽ दुपहरिया बितबैत छलाह कोनो बाबू बड़का ओमारा घर टहलि-भूमिकऽ अपन नीत पचबैत छलाह। कोनो कोनो बाबू दू-तीन गोटे मित्रिका गीता व रमाएन तऽ बेसेत छलाह। एगो बाबू एहन रहथि कि छोट-छोट शीशी मे सँ दबाइक सरितबा दाना निकालथि आ गनि-गनि कऽ ओही शीशी मे फेर ओही शाना डँ रखैत जाथि। इहो आलस बाँची पचेबाक एक उपाय छलैक।

माने ई कि दिन मरि सुतऽ पर आगरम मे बड़ कठिन पहरा रहे। अही सँ सौँक-सकाले बाबू भैया लोकनि भोजन कऽ कऽ अपन-अपन ओखैन पर डेर भऽ जाइत छलाह। मोरे एकदम अनरोखे घंटी बजे आ चठनाइ जरूरी भऽ जाइक।

हम सोचल जे अखन मालिक के सुतऽ देवाक चाही, मोर भेतापर बाकी गप्प करव। सुदा फूलबाबू तऽ इ कहिकऽ बात खतम कऽ देलेन जे ई तऽ तोहर आगक झगड़ा छोक, बहिषा-महतो केँ। एकर निधदारा सेहो लोही दूनु गोटे, कऽ लेवे। अइ मे इनर कोनो जरूरतिनहि। ओजा कऽ अपन मालिक के हाथ पर पकड़। ओ तोड़ा माक कऽ देखुन। फूलबाबू सँ हमरा अइ बातक उमीद नई छल। भरोला रहए जे ओ हमरा बचावक कोनो ने कोनो रहला जरूर निकालताह।

केहन भीखा मे हम पड़ल रही। हमर सब मोह क्षमभरि मे दूट गेल। लाफ-गाफ झुकाए लागल जे बाबू भैया लोकनि ओतवे कालतक हमरा लोकनिक पच्छ लेताह जावत तक हुनका लोकनिक अपन मतलब रहैत। देखह मे फूलबाबू एक छोटका पुरजी अपना पीसाक नाँव सँ हमरा द दीक्षि तऽ लऽमे हुनकर म्हातम कि बिगारि जैतनि। अन्हार छलैक सुकैत नहि छल। सुदा हमरा लाफ लाफ बुझ मे आएल जे फूल बाबूक माथा भारी भऽ गेलैन अछि आ गेरुआ पर एक दिस चुड़कि गेलैन अछि। भैया! हो भैया! पीसा आ तरबेटाक सम्बन्ध बाप बेटाक सम्बन्ध बूझह। अइ सम्बन्ध मे ओइ छोटका पुरजी तऽ खरोच नई पड़ि जैतनि। मोराजी भऽ गेल छलाह तेँ कि, छलाहता आखिर बाबू-भैया ने। गरीब-बड़बाक दुःख ई लोकनि की दुखिन।

सच बूझल भाई तखन हमरा मोन मे ई बात बँस गेल जे जेना अंगरेज पहाड़ सँ सोराज लेबाक हेतु बाबू भैया लोकनि एक भऽ रहल छथि, हल्ला-फुल्ला आऽ कगड़ा कंकट मचा रहल छथि ओहिना जन बनिहार, कुली-मजूर आ बहिषा खजाल केँ अपना हकक लेल बाबू भैया सँ लड़ऽ पड़ैत।

फूलबाबू सँ कनिनो भरोसा नई रहल। कनीकाल अन्हार मे हम

बसल रहलहुँ। केर बाहर जा कऽ बोधारा आ बोहि टूटल पटिया दिस बढ़लहुँ। निपट अन्हार छलैक। पैर सँ टटोरिकऽ पटिया भेटल आ ओइ पर पड़ि रहलहुँ। ओइ के बाद कखन नीन आबि गेल आ केना मोर भऽ गेलैक से बूझ मे नहि आएल।

ओखि मलिकऽ घडलहुँ आ फूल बाधूक कोठली दिस गेलहुँ तऽ देखल जे जिनिर कदल छैक। केदार बन्द रहैक। बाबू नहाए गेल गेताऽ हमरू पोखरि दिस बढ़लहुँ। एतए कनेक आखरमक विषय से तोरा लोकनि के कहि देत छिथऽ।

ई आखरम दस बीघा जमीनक हाता मे पसरल छलैक। ताकिन बरहनपुरा, धाना लेहरिवासराय जिला दरभंगा। अइतमक बहुत बड़का जमीनार बाबू शुभंकर भूँहार खनवान के रहथि। नीक जमीनार मे हुनकर मनवी रहैत। अस्सी-नब्बे हजारक मलगुजारी बसल होनि। जेद हजार बीघा घनहर खेत अपना जोत मे रहैत। ओजू आ कलमी आम बाग पचासो बीघा मे छलैत। केरवनी, खदोर सब रहैत। गाय, बरद घोड़ा आ महीनक चर छलैत। ओगार पचासो बीघा जंगल रहैत। आठ-दस छोट नगहर पोखरि रहनि। गुमश्ता, बराहिल, अमला-फमला, नोकर-चाकर देवान जी मुनशी जी सब रहैत।

बूढ़ा मालिक इलाका भरि मे राजा बाबू कहाइत छलाह। दूटा बेटा रहैत। एक हीराजी, आ दोसर मानिकजी। हीराजीक दोसर नाँव छलैत, किशुन बल्लभ, नारायण ठाकुर। मानिक बाधूक नाँव छलैत राधा बल्लभ नारायण ठाकुर।

मानिक जी पढ़ मे बड़ा तेज रहथि। कलकत्ता मे रहि कऽ बी० ए० तक पढ़ने छलाह। ओकरा बाद गौधी जीक शहरि मे हमरा फूलबाबू जकाँ

बल्लभनमा

मानिक जी सेहो थहि गेलाह। जग-बालिस्टर नइ बनि कऽ अपना जिलाक नेता बनि गेलाह। अपन बरबारी नाँव मानिक जी छोड़िकऽ ओ सोफे राधा बाबू कहबैत छलाह। बड़ा पक्का कांटेली छलाह। एहन पक्का कि बाप आ बड़का भाई सँ झगड़ा कऽ कऽ आखरमक लेल एतेक टा अहाता ओ दफानि नेने छलाह। वैह ओइ आखरमक सबे-सर्वा रहथि। हुनका पाछों सोराजी बाबू लोकनिक एक छोटा पलटैन रहैत। शुरू-शुरू मे हिनकर शाहखर्ची अइ शिक्षा मे गौधी महतमाक काज आगा बढ़ावऽ मे काफ़ी मदद केलकैक। नकरा बाबू बाप आ बड़का भाई इस्टेट सऽ एको पैसा देनाइ रोकि देलखिन। वइ सँ नाराज भए राधा बाबू घरक लोक सब सँ असहयोग कऽ देलनि। असहयोग कि होइत छैक भाई ?

गौधी महतमा ई तरीका निकालने रहथि जे शत्रु यदि बली हो तऽ तों हाठी सँ ओकर मुकबिला नइ कऽ सकैत छहक, ई ओकरा सँ बगनाइ-झुकरनाइ थप कऽ जे ओकरा कोनो काज मे मदद नहि पहुँचावह, शत्रु दखिन दिस मुँह कऽ कऽ डाढ़ रहेतऽ तो मुँह फेरि कऽ उतर दिह कऽ लऽ। सहयोग क बर्ष होइत छैक, संग घेनाइ, संग मे बुटि गेनाइ।

से भैया राधा बाबू अपना घरक लोक सब सँ असहयोग कऽ देने रहथीन। एतेकतक कि हुनकर धातवच्चा तक मानिक मे रहैत-रहैत। हुनकर स्त्री अपना नहर मे रहऽ लगलैत। भगवानक परताप सँ समुर सेहो हुनक बड़का सारी जमीनदार रहैत। आ भैया, राजा अपना बाल-बच्चाक विवाह रजे-खनवान मे करैत अछि। राधा बाबू के नगद पचास हजार तिलक कदल रहैत। हाथी, घोड़ा, पालकी, खवास, जमीन-जजात सब दरेज मे भेटल रहैत। राधा बाबू जखन सोराजी बनला तऽ हुनका बाल-बच्चा के सम्भारऽ मे समुरक धन बहुत मदद केलकैत। जिला भरि मे दु-तीन बाबू भैया अपना

बल्लभनमा

अपना स्त्री के परदा से बाहर निकालने छलाह। ओहि मे सँ एक छलाह राधा बाबू। हुनका मासिक जखन अपना पुतोहक बेपर्सीक विषय मे सुनलैन तऽ हुनकर विभाग पथरा गेलैन। ओहि कोन्हिया गेलैन। ओ राधा बाबू के कडा पटोलखीन जे छधाहीक अन्दर पैर नहि राखए। बापे सँ असहयोग शुरू भेल रहैक, बेठा असहयोगक अंत कऽ भेलकैन। राधाबाबूक माए मरलैन तँयो ओ घरक लोक के संग नहि भेलखीन। लोक सब कहैत छलैन जे राधा बाबू अकरी नास्तिक भऽ गेलन्हि अछि। माएके मरला पर ते केश कटौलनि आ ते अशीच मानलैन। आनरमक पथ काज पहिने जकाँ करैत रहलाह। जखन हुनकर माए मरल रहैत तखन खाना मधेपुर आ फुलपरासक दिस बड़ जोर वाढ़ि आएल रहैक। आठमी-अन, भाल-मवेशी सबक बड़ खराब दशा भऽ गेल छलैक। राधा बाबू चारि ठा डेही कऽ कऽ ओइ इलाका मे अपना सगीक संग रिलीफक काज कऽ रहल रहथि।

सँभ्र कऽ मंडप मे फराक आसनी पर जे बाबू बैस कऽ पूजा-पाठ करैत रहथि आ पाछाँ भगन भऽ कऽ भजन गथथि वैह राधा रहथि। पोखरि दिस जथा काल मे ओही राधा बाबू सँ हमर भेंट भऽ गेल। बकि कऽ पुछलनि—धातुक छै कि स्वार। स्वार छी तरकार—हम कहलियैन। ओ चारि डेग आगाँ बढि अपलाह। हम गरहनि टेढ़ कऽ कऽ हुनका दिस देखैत रहलहुँ। एकाएक रुकि कऽ राधा बाबू पाछा सँ हमरा दिस देखैत रहलाह आ कहलनि—आसरम मे रहबे। तोरा अपना संग रखबो, किछु पढ़ियो लीखि जाएबे। दल-पाँच रुपैया ऊपर सँ दऽ देबो, घर गूढा देल करिबे। हम किछु कहलियैन नहि। एकदम गुन-गुन रहि गेलहुँ। ओहुर सँ ओहुर पकरक बेधा करैत रही।

राधा बाबू एकदम लंगीच आबि हमरा कण्ठा पर अपन हाथ रखलैन

बलचनमा

तऽ बड़ नीक लागत। नहाकऽ आएल रहथि, हथेली हेनाल भऽ गेल छलैन। हम सुति कऽ उठल छलहुँ। राति भरिक गरमी देहपर होलैत छल। कन्हा पर हुनकर ठंडा हाथ हमरा बड़ नीक लगैत छल। एक नजरि हुनका दिस देखि कऽ फेर हम अपन पयनी नीचा खसा लेलहुँ।

कौ बात छै—बाबू पुछलनि। हम फेर चुपे रहलहुँ। आव बार लग मे आवि कऽ ओ हमर दुइदी लठोलनि। साज आ किन्नक सँ भरल हमरा ओहि मे अपन ओखि दैत ओ बजलाह—नहि रहबे आसरम मे।

माथ हिला कऽ जखन हम हँ कहलियैन तऽ ओ ओड़ि देलैन। फेर कहलैन जो हम भूल बाबू सँ बात कऽ लेब।

हम पोखरिक भीड़ पर पहुँचलहुँ। दुपुल पुरान पोखरि छलैक। हरियर कचोर पानि। चारु दिस सिमिटक पक्का घाट। भीड़ पर तीन दिस कलमी आमक गाछ, एक दिस शीशोक सुन्दर पांती देखि कऽ किछु काल तक ओही ठाम भोज गइल रहल। भीड़ सँ नीचा उतरि कऽ खेल मे दीसा फिरलहुँ आ पोखरिक एक कोन मे जतऽ पैरक बेन्ह बनल छलैक आबि कऽ खोच कएलहुँ। पक्का घाट पर आबि कऽ हाथ मटिअएलहुँ। आमक पल्लव ताकि कऽ बातमनि कएलहुँ ओकरा चीर कऽ बिभिया चनेलहुँ आ जीह केँ साफ कएलहुँ।

कण्ठा हमरा नामूलिए छल। आठ हाथक मैल पुरान धोती छल। बेह पर गंजी आ दू हाथक अंगपोछा। धोती फेरि कऽ पहिरल लेल राखि लेलहुँ। बराहोरि मे अंगपोछा के बान्हि डाँड़ मे लपेटि कऽ पोखरि मे नहाय लेल स्तरलहुँ। कहबी छै, 'आन गामक पोखरि आ अपना गामक गाँझी' बेरावन होइत छैक। हमरो पानि मे जाइत किछु डर भेल। मुदा हम ईहल तऽ बनिते छलहुँ तखन डर कथी के। ई ओइ नमहर पोखरि वा झील मे अवश्य डरबाक चाही, नाइ मे, गोहि, बीच, बरिवाल, सीस वा बड़का-बड़का रू,

बलचनमा

सुना आ भाकुर माछ रहैत छैक। ई नाँव धारक बात नइ भेला सँ बड़ पोखरि मे गोहि बङ्गियाल भइए नइ सकैत छैक, से निश्चिन्त भइ कइ बड़ी काल तक पानि मे बोहियाइत रहलहुँ। ऐलमाइ आ बोहियेनाइ दू फराक बात छैक भैया। हाथ-पैर मारैत जाइ तइ ऐलमाइ भेलइ। एता बेसीकाल अथाह पानि मे कैल जाइत छैक। गरमीक दिन मे अधिक काल तक ठरा-बटक मत्ता लेवाक हेतु लोक थाह पानि मे पड़ल रहैत अछि; सउँसे घर पानि मे रहैत छैक आ साथ ऊपर। एकरे बोहियेनाइ कहैत छैक। बुझलहुँ भैया।

मीन जखन निरपित भइ गेल आ देह हेमाल भइ गेल सखन बाहर भेलहुँ। जह्नी-जह्नी घोंती पहीर कइ अंगपोछा खिचलहुँ आ ऊपर अएलहुँ।

हमरा तइ होइत छल जे आतरम मे रहि जाइ, सुदा माए बहिन के बोइ दशा मे छोड़ि देनाइ खराब बुझइत छल। दोसर बात ई रहैक जे छोटीका मालिक थाना मे चोरी के रिपोर्ट कइ देने रहथीन। हमरा बुझाइत छल जे चारि छो मांम जेल मे सजाए भोगइ पड़त।

नईला तँ देह तइ ठंढा भेल सुदा मीन के किर्किर फेर गरमावइ लागल। मारिए पैर लइ कइ हम आसरेम गुरलहुँ, आ फूल बाबूक कोठलीक भीतर अएलहुँ। ओ पितसिल सँ किछु लिखैत छलाह। हमरा हुँकारी भरि कइ इशारा कएलनि जे लग मे आविकइ बैठ जा। हम बैठ गेलहुँ। लिखनाइ समाप्त कइ कइ बजलाह—राधाबाबू हमरा तोरा विषय मे कहैत छलाह। ओ तोरा अपना संग राखइ चाहैत छथिन। किथाक ने रहि जाइत छै?

हम कहलियैन हमर गरदन तइ फँसल अछि—जहल हत कि गुरमाता के जाने। बाबू कहलनि किछु नइ हेतौ, तौ राधा बाबू के संगे रहि जा। सब बात छोक कइ लेल जएतैक।

हमरा थड़ा बजगुत लागल कीना सब बात छीक कइ लेल जएतैक।

बलचनमा

कीना केओ छोटीका मालिक पर अंकुश देतैक। फेर मोने मीन हमइ तय कएलहुँ—जे होने हो राधा बाबू फूल बाबू सँ सब बात नइ तइ किछु बात अवश्ये बुझि सेने हेलाह आ बेह कोनो श्वांत लगौलाह। नहि तइ फूल बाबू सँ कि हेतैन? ई तइ अपने भारी दबू छथि।

बातो इएह रहैक भैया। राधा बाबू नामी तोराजी रहथि। हमरा बोइतामक बड़का मालिक सँ राधा बाबू के कोनो सम्बन्ध सेहो छैनैन। ओ एक चिट्ठी बड़का मालिकक बेटाक नाँव पढोलेखीन आ दोसर चिट्ठी बरोगाजीक नाँव। बरोगाजी एक बेर एस० बी० ऑखि सँ राधे बाबूक बढोलेत बाबल छलाह तहिवा सँ बरोगाक दिलमे राधा बाबूक लेल बहुत सम्मान भइ गेल छैनैन। कहवाक मतलब ई थीक जे हमर मामला समाप्त भइ गेल। सलाए-तयाए नहि भेल आ ने जरियाना भेल। बात अतै-ततै दबि गेलैक। छोटीका मालिक अइ के बाद गाँव सँ चलि गेलाह।

छोटीका मालिकक ई करनी चोरैत नइ रहि सकलनि। हमरा बहिन पर जे ओ हमला केने रहथीन से बात सहे-तई तइसे गाँव मे कैल गेलैक। बाबू-भैया लोकनि भीतरे-भीतर एक दोसरा पर सह चलबैत रहैत छथीन। समाजी शत्रुता बड़ खतरनाक होइत छल। हमरो मालिक सब मे आपसक शत्रु पंच खूब चलइन। एक दोसरक कमजोरीक नफा उठावइ मे बाबू भइया अपन एब बुझि लगा दैत रहथि। कहबी छैक जे सतरंज खेलबला के बागाक दस चालि मोचिकइ राखि देवइ पढ़ैत छैक। बाबू भैया लोकनि अपना मे एक दोसरके नाश करवाक हेतु सतरंज जे जे शह पर शह सीचैत रहैत छथि।

से जखन छोटीका मालिक पर मलिकानक छोटीका-बड़काबाबू लोकनि नाशक भी तिकोइड लगलाह तइ दूरद गाँव सँ चलिए जाय मे अपन नीक बुझए-बलचनमा

लौन । रैबनी, हमर माए आ हमरा पर के खीक रहैन तकरा ओ दुगता कऽ मोनक कोनो गोट भे आनिह जेलौन आ कलकत्ता दिग चलि गेलाह ।

हम राधा बाबूक संगे रहऽ लगलहुँ । सब सँ पहिला काज ओ के कप-लनि से ई के हमरा बाबू ओ असमासी रंगक बैजामा लिवा गेलौन, खांसी रंगक हाक कमीन आ लउकर टोपी । सब खहरक जखन हम पड़ीर कऽ तैयार भेलहुँ तऽ कहलौन—बेबी बूछो तऽ ई नइ कहि अही जे आसराक हम नोकर छी । फूललियेन जे कि कहबैक ? तऽ कहलौन जे कहियही जे काँगरेयक भोल्टियर छी, हुकले । हम मथा हिला देखियनि । आव फूल बाबू तँ हमर कोनो लागि-भागि नइ रहल । रहे बाबू हमर मानिक छलाह ।

हमर उमेर सतरह पार करैत रहे । मोछत पम्ही आवि रहल छल । देखऽ मे सुन्दर नहि छलहुँ तऽ खराबो नइ छलहुँ । कहिए ऐने छिप्र जे हमर आन दाब बढ़िया फाडीक तखन लोक छलाह । छाती चाकर, बिजहुत कपार, विशाल चेहरा हाथ पर सटल आला । हमर माए सेहो पितृद्वयाम जरर छल, मुदा चेहरा मोहरा, जँचा-ढाँचा बड़ मीक रहैक । छोटे ठामर के हम रही तखने बानू नरि गेलाह । हर पर कण्ठक पहाड़ खति पड़ला तँ हमर गिरसी चौपट भऽ गेल छल । दादी आ भाए नइ आनि कतेक कठिन सँ पालि-पोति कऽ हमरा दुनु भाई बहिन के समहर कएने छल । नई जानी कतेक पैर नीर तँ हमर बचन पटाओल गेल छल ।

राधा बाबू आसराक महेश रहथि । बहुत पढ़ल-लिखल छलाह । मायकपुर कलकत्ता मे रहि कऽ अपन पढ़ाई ओ पूरा कएने छलाह । पूरा कि कएने रहथि पार पहुँचनि बिजारा के छोटि देने रहथि । बाड़े आर पधितथि तऽ परफेयर भऽ अइतथि । धन-सौलत के कोनो कमी तऽ रहैन नई तऽ विश्रुत सेहो जे तबोल छलाह आ बालस्टर भऽ सकैत छलाह ।

मुदा बीचे मे दिमागि भवलि गेलैन । लोक सब कहैत अछि जे बूढ़ा मानिक राधा बाबू सँ बड़ आशा रखने रहथि । ओ कहथीन जे मानिक जी कि तऽ कलहर बनता बा एतऽ जी० ओ० अइ सँ छोट हाकिम ओ कि हेताह ? फेर बूढ़ा मानिक ई सपनाइत रहैत छल हेताह जे मानिक जी कलहर बन कऽ अइ जिला मे अएताह तऽ हमरा खनदानक कतेक रोव साथ बहि जाएत । जिला भरिक बड़का-बड़का लोक सब मानिक जीक सोझा मे हाथ जोरि कऽ ठाढ़ हेताह । बड़का-बड़का बाबू लोकनि मानिक जी सँ हाथ मिश्रएवा मे आन अपन बहीभाग्य बुझताह । खरोरे खनदानक भारी भारी राजा-राजकुमार आदर आ जतन सँ मानिक जी के गेट-सोमात पडोखीन । महाराज सेहो मानिक जीक आदर सम्मान करथीन ।

ई सब सोचैत-सोचैत राधा बाबूक वार, बूढ़ा मानिक चौधरी शुभंकर हाथुर एतेक मगन भइ जाइत छलाह कि कलहरक कष्टरी बितरिह हुनका बाबू सेहो बगोड़ी-बिरासत जकाँ बुझात छलैन । कनिक सोचह भैया कि राधा बाबू एकाएक पढ़ाई छोड़ि कऽ अपन बूढ़ पिताक आस-भरोस पर कतेक जरी बँजर खसोलखीन ?

राधा बाबूक सगुर सेहो बड़का भारी जमोदार रहथीन । अपन जमाएक विषय मे ओही बड़ पैघ आस लगौने छल हेताह से ओ बेचारा सेहो चिंम भऽ छल हेताह । राधा बाबू जेद सालक सजाए काटि ब्याहल रहथि । उमरा कम जेल मे हुनका राखल गेल रहैन । जखन महलवा गौबी के लाट शहर दरबिन सँ बुझारत भऽ गेलैन तऽ देश भरिक सब जेल सँ कोही सब के रोडि देल गेलोक । फूल बाबू से तखने जेल सँ छूटि कऽ आएल छलाह । राधा बाबू सेहो ओही समय मे छूटल रहथि ।

आसरा मे बाबू-भैया का नोकर-चाकर मिला कऽ बीस आवधी रहथि ।

महतमा जीक हुकुम नइ रहनि जे गोराजी लोकनि आसरम मे ककरो नोकर चाकर-बनाकऽ राखथि । मह्यो आसरम मे हमारा लोकनि चारि आदमी रही से नोकरे रही कहऽके लेल मोक्ष-टिपर कहियए, सेषक कहियए, बुधा रही हम सब केसो नोकरे । एकसोटक नौव छलोक खलाश, दोसरक छठ्ठ, तेसर मंगल वा चारिम हम । खललखा, छडुआ, मंगला, वलचनमा । हम चारि भिन्न-भिन्न जातिक रही । खललवा प्रानुक रहे, छडुआ मलाइ, मंगला पायी आ हम खार । पगना बछोरक एक मिसर जी रहथि, ओ मानव बनाबक काज करथि ।

मिसर जीके सेनाई-मीनाई दऽ कऽ ऊपर सँ बारह रुपैया भेटैन । हमर दरमाहा ठीक नइ रहे । कहियो सात, कहियो आठ वा कहियो दस । राधा बाबू मौजो जीव रहथि । हमरा ऊपर हुनकर तिनहो बंधु रहैत । सेनाई पिनार्, कपडा-जुता बढिया अर्को भेटै । अनन खाण मोक्ष-टिपर बना कऽ ओ हमरा रखने छलाह । दूर मे बहौ जायि हुनहुंग रहियनि । राधा बाबू के हमर बड ध्यान रहैत छलैक । लोक सब हुनका बेवता अर्को माननि । चढावा हुनका जे सेटेन से थोड़-बहुत हमहु पाबि जाइ ।

खललवा सेनाई द्वाइकऽ आठ रुपैया दरमाहा पावे । छडुआ से हो आठ । मंगलाक दरमाहा छौ रुपैया रहैक ।

खललवा आसरमक खेती-धारीक काज देखैक बहुत्ता लग पासक गाँव सँ अनन थोटोरिकऽ लावे । मंगला आसरमक चपरासी छल । माडूदेनाई, पैत मे पानि भरि कऽ रखनाई, हाक सेनाई आ लऽ सेनाई, दुखित भोजीला पर बाबू भैया लोकनिक पथ पानि सेनाई मंगलाक काज छलैक । एमालऽ राध बाबू हमरा आसरम भरिक लोक सब सँ एएह कहने रहथीन जे हमरा छौ रुपैया महीना भेटत । सुवा दैत काल बाबू सब बेर किछु बचिके देखि । एत

किपैक होइक ।

बात ई रहैक भैया जे राधा बाबू राजा खनदानक छलाह । पढ़ाई कर-वाक समय इस्टेटक रुपैया फूजैत रहथि आ आव पबलिकक । चन्दा आसरम मे खूब अवेक । केसो हुनका सँ दिसाव लेवऽ वाला नइ रहनि । सेना दूधडा भेलैन तेना खर्च केलैन । हमरो ओही लोक मे कहियो सात, कहियो आठ कहियो दस आ एकाध बेरस बारह रुपैया हमरा हाथ मे ओ यम्हा देने छलाह । एकर अतिरिक्त भेला डेला, हाट-बाजार, पावनि-तिहार अवसर पर एकन्नी, दुअन्नी, चोअन्नी, अठन्नी दैते रहैत छलाह ।

नवका मातिक सँ हमरा खूब पटै । पूल बाधूक दिस सँ जे उदासी मोन के घेरने रहै से आब फाटऽ लागल । आसरमक हवा-पानि, बाजब-भूकव रंग रंग हमरा नीक लागे । एतए दू चारि बाबू-भैया एहनो रहथि जे भीतर सँ गरीबक दुःख दर्द दुखधिन । बातचीत मे हुनका सुँह सँ मलिकाना मन्व नइ अथनि । राधा बाबू से हो बहुत मरमी सँ नजैत-वतिपाइत रहथि । कसनो-कखनो नाक-भौं चढ़ाकऽ ओ अपन रोव अवश्य परगट करथि । सुवा हुनकर कोथ वा माराजी आसरमक लोक वास्ते ओहने रहैक जेना कोनो बढिया खनदान के ईमनदार सुखिया के होइत छैक ।

हमरा जातिजा भी लोकक विवाह लड़कियाँ के होइ छैक। तई सँ एकरा विवाह की कहब, तवाइये कइव से छीक होएत। छ वरीय के उमेर मे हमर विवाह भइ गेलै। आर तइ किछु सोन-तोन नहि अछि, मुदा बरिजाती मे राजा बलबै बला समक संग नहि बिसरल अछि। बड़का गीरहथ सवारी मे पालकी मइनी बेलैथे। हमरा लोक कनेसक पुल सँ तजि हमरा ओइ पर बेला देलक। बरिजाती मे दम बारह गाँटे सँ गेल। पीरा पोती, हरिहर डोरिजाक अंग। माथ पर जरी बला ओपी। पैर खालिद। हमरा सबटा तइ सोन नहि अछि मुदा केड़ा आर दाइ छे खाइ लेल देलक से खूब बढ़िया जकाँ होन अछि। पाकल-पाकल दिअर केरा की सनगर रैक गुरहीक लड्डू के हमरा बेरावरी मे जाइ कइ छै। विवाहक खातिर छे दिन तक हमरा माए आ दाइ सँ कराक रहइ परल। किएक ते हमर सासुर हमरा माथ सँ बारह कोस दूर छल। बरिजाती मे हमरा सम मे जमी-नाइत के छ सइये नहि जाइ छैक।

सुन मे आएल अछि जे पहिलम भर डेर राज छैक। एतेक छोट छेकर मे अइ सँ पहिने हम माथ घर सँ बाहर कइ ने गेल छलहु। हमर कनिथो इए तीन चारि बरिपक छल होएत। हम दूनी जमी एतेक ने छोट रही जे भोज-भात बाजा-ताजा छोरि कइ आओर किछु सोन-तोन कइ किछु अछि। हँ शो

सोन अछि जे हम दूनी गोटे एके सवारी मे बैसक ओइ माथक मलिकान समक ओतइ बिझीकी मागइ गेल रही। आइ तक हम तोरा अपना विवाह सँ नहि कहलिओक मुदा आइ तइ कहहि परल। सतरह परखक उमेर हमर भइ गेल। माथ पछके साल सँ कइथे जे दुरागमन कइ ले। से छींचि एही लोक हमर नाए अपन बेटीक बिदागरी नहि करब छल। ओ वीचइ छल पहिने पुनहु लइ आनी तखन बेटीक बिदागरी करी।

ई तइ बीच मे गीरहथ सँ कंगड़ा भइ गेल तइ दुबारे गीना लक गेल ने तइ भइ गेल रहिते। विवाह आर दुरागमन के बीचक दिन हमरा खेलए के दिन छल। एहि बीच कइओ तासुर नहि गेली। सँ दुरागमन परिने हमरा सम मे जेबाक रीति नहि छै। हमरा समक विवाहक बड़का जाति गला सँ अलगो रीति छैक। एक ई जे बीना जनइ मेने हुनका लोकनि मे विवाह नहि होइ छैन। दोसर ई जे विवाह दुरागमनक बीच मे ओ सम तासुर जाइछथि। मतलब ई जे माए के जोर देस सँ हमरा गवसा करब लय तैबार होब परल। छोटकी गीरहथनी माए के चोल भरोल देलखिन। गीरहथ गीरहथनी सँ छेराथि आ हमरा वहीनक नामला सँ तइ गीरहथ बाबू अपना जनाना के गंध देखबहि ने चाहथि किएक तइ देखक जोर नहि रहि गेलाह। बहुत दिन तक जोड़ी पतरी बन्न छल बहुत दिन तइ मालिक घरो नहि आएल।

गीरहथ बाबू के नहि रहला सँ गिरहथनी के किछु बीगरे नहि। ओ तइ अपने सात मनवाक एक मगगा छली। जहरति परला पर हुनकर भाइयो गोडापर चढ़ि कइ पहुँचि जाइ छलन्ह। हरशाह चरबाह रहैन खेती मे रातिदिन खटैले बमिहारक कमी नहि रहैन। खानदाजी रोवदाब रहैन। सोमा के टूकरा पन से करो बिधा खेत छलन्ह। बाम बगेचा, गाछी बिरछी, कार भंखार, मोखरि

इनार कधुक कमी नहि । चारि जोरी बरद रहै । गुतराजी महीम । लौटकी मलिकाइन बर गृहस्त्रीक इन्तिजाम खूब बहियौ रखे छलीह । ई गूत महिरक छलेन । झल बाबुक बापे बड़ चलाक गीरहय रहयिन । पैर परक जनामा बर अकिलमन्ती होइ छै । कहियो खोखटि सँ बाहर पेर नहि रखे छलयिन । सख भैरव, सरारी, पुमारी, मूँची जी, देवानजी, कर्मचारी ककरो सँ वो बातस नहि करैत छलयिन । की खवातनी जं कहवीतैय सेत देवाल खानक ओठ सँ अपने कहितैय । कोनो काज छोडकी गीरहयनीक सकल नहि रहितैक । गीरहय रहौय कि नहि मलिकीनो अपने घर चलबधि ।

ई स्त्रीगन बड़ चलाकि छल । लघाई कसकस मेल सँ जेना होइतइ सेना जपम काज पूरा करवे लीतइन । सच पूछी भाई तस जँ ओ पूछल रहैत त डेमवी माहेश सबक जान कायति ।

ऐ ही योया ! हमरा माए के नैजानि के कीन जरी सुंवा भेनहै । अपन बेइजति विपरिक हमर माए सोक भय भेल । इ माय आसन मे रहलाक बाद हम माए तँ भैठ करप नेलहु तस गीरहयनीक गुनगान करैत ओकर रोइयौ-रोइयौ लहरड लगलै । ओ कहय-एहिमे मलिकाइनक कोनो कसूर नइ छैन । ओतस एतस रहबो ने करयिन । इन कहलियेक —मलिकिनिए कोनो कि भेइता छहुन नकरा ओइ ठाम हमर निबोइ नहि भेल ओकरा ओहिठाम तौ रई छँ तकर माने जे तो अपन धूक चटइ छँ ।

हमरा कोय भे देखि भाय चुप भय गेल । थोड़े कालक बाद दुरागहनक चर्चा पडल । खर्चा कहाँ सँ बाओत ।

मायबाजलि—भगवान कोनो उपाय करवे करयिन की ।

हमरा ई दुकल छल जे लाहि बाबक जवाय माय के नहि फ़राइ छइक ओहि मे ओ भगवानक नाम लखत अछि । ई ओकर पुरान आदति छइक ।

तइयो हम कहलियेक—भगवान कहाँ तँ ओ उपाय करयिन । हम चोरी तस करय नहि डाला तस देव नहि । आगू पाछू तस किनो खोज खबर लेवड बला नहि अछि । तखन फेर भगवान की करताह ?

एहि पर माय किछु नहि बाजलि । हमरा भेल एहि बेर माय मानत नहि । बिना पुतहु के देखने एकरा जैन कहाँ । आ आइ नहि कहिह, परस नहि चारिन दिन, कहिओ तस दुरागहन करहि परत । ऐना तस नहि होएत जे आइ गरीबी अछि तस कालिह कपया सँ भदल पैल भेटि जाएत । एनातस नहि होएत जे आइ खैराक उपाय नहि अछि आ कालिह कुबेरक भंडार भेटि जैत । गरीब गूरथाक विवाह दुरागहन साधबाय सँ नहि साधणीय सँ होइ छइ ।

इएह सब सोचति सोचति मोन मे संतोष भेल । राधा बाबू हमरा बुकवड लागल छलाह तस सेहो फकीर मुदा शाही फकीर । बड़का-बड़का महन्थ महाहमा पड़थ-पड़थ साधू बाबाजी दूध सन छज्जर मखमल सँ ओ जपने जे बेरागो महाराज रई छथि से तस साहिब फकीर छथि । डारि मे अंगगोछा सन चारि हाथक कपड़ा बान्हय बला जे एक बाध नेता देखाइ दैत छथि से हो फकीर छथि । शाही फकीरक लीला अपार होइ छइ । ई जँ कनिनो कोय करताह तस भगवान जानयि आरकडैत छी जे ओ अहाँक सातो पूरखा के उखार कइ देताह ।

हमर राधाबाबू सेहो अपन राजकाज छोड़िक सोराजी (कांवेसी) बनि गेलाह परंत इनकर मुही खूजल छइन एखनो कहिओ ओ हमरा गनि कइ बचवा पैता नहि देलथि । जहिआ देलइन तहिआ जेबो ने हाथ दइत जे याचिजाइन इ देथि । हमई एहिने कहि चुकल छी जे ई माधी महतनाक जनामा छलीन्ह । जाहि दिन ओ जमाना रई कांवेसी भइया क छोही पैतता नकौ हुकाइक । तइहि पेर पड़ि जाइन ओतहि चतुरा बनि जाएतैक । ई जाहि दिख

वाकि देताह छोहि दिन जेजेकार भऽ जेत ।

एहन मेनाक संग हमरो भाग जमकि सैल । आही भइया । जहन एहन बात रहैक तहन हमरो फिहरे कथिक । लोच खंकीच केहन ? मोन खुशी भं नाचि सडक हन गीरह बान्हि कोलहुं जे दुरागमन करवे करब ।

दोसर दिन साथ के पूछलियेक—दिन तिन तकवेने छहिन । ओ हरिरी वीसि रहक छल । लोही सिनौठक पिसिर धितिर आवाज होइ छलह तँओ पहिल बेर हमर बात नहि सुनि गइल दोसर बेर मे कनी ओर सँ कहलहुं तऽ बीच मे माथ छोटी रोकि कहलक—तोहर मोन होअ तऽ दिन तिन तकवऽ मे ओ लगतइक ।

ककरा सँ पुलवही ?

हीह टोल आकऽ बइयिक बाहु सँ घुठयनि । ती तऽ अहिना हमरा ठकइत रहै छै, कतेक दिन तक हमर मोन टीवे ।

मायक गण सँ ई बुक्ति पड़ल जे ओ अवना समर्थ पुतोठु केँ देखनालेल छटपटाइत अछि ।

साधारण जिनगी मे हेर-हेर के नहि चाहत । अरि भारही महीना जाई रहै तऽ ककरो नीक लगै । आ तहिना जो मोर-ताँछि नहि होइ छदिखन जेकर हुपहरिवाक रोदे रहै तऽ केहन लगतैक, मनुखक जिनगी ? कहवाक अर्थ ई जे मनुखक जीनगीक गण कोन समुदा संघार जाई परिवरतने पर जलै छै । परिवरतनक पहिवा सदियत चलित रहै छै ।

हमरा ठेयार होमव पड़ल । हमरा दुरागमन दऽ मुनि साथ खूब दुशी भऽ गेल ।

आसिनक मास बलै । ओहि गल भइइ खूब मेल छलै । आठ मन गइआ अवनत बढाइ आला खेत मे सेही मेल छल । दू अड़ाय मन धानक आशा सेही

खलचनमा

छल । अगहन मे हमर दुरागमन होइतइ हम जतैल छलहुं । माय के विचार छलै जे एक मायक छुट्टी कऽ ओ धनकटनीक दिन मे । माय, रेवती आर हम तीनू गाँठे मलिकाइनक खेत मे धानक कटनी करब । मजूरी मे जे धान सेउत ओहि सँ दू-अड़ाय मासक रहस्तीक खर्चा अवश निकलि आवत । हमरा मन मे छल जे धान कटवाक समय मे एहि बेर परदेश नहि जायब । यदि पूछल जाय तऽ खेत मे कार्य करवाक लेल हमर मोन छटपटाइ छल । डोर मे अंगमोछा लपेटि या लंगोटी बान्हि कऽ खेत मे धान रोपक हेतु उत्तरी तऽ बूझता जाइ छल जे कि दू कोतल दाक नशा गवार बलि तथा दुनिया झाबोर किछु छेक नहि छाली हम ओ धार खेत धौक । हमर हाथ बलि जार ई छोटा-छोट हरियर-हरियर मनमोहक गाछ अछि । कतेको जोति कऽ तैयार कएल खेत मे हमरा सम-तन आओरो कतेको बादमी अछि जे धानक गाछ रोनि रहल अछि । पानि बला खेत मे धान रोपक केँ समय छुप-छुप रूप-रूपक आवाज अवैछ । ई आवाज एहि कानक हेतु सिनेमावाली सुरैवाक सन सँ ओ मीठ होइछ । हमरा जिला-जवार मे नामी-नामी चपैया छथि गिनकर मोन जखन लोक एतौ अछि हमन भऽ आँखि बल कऽ लै अछि । डाढ़ लोकनिक घरक बनोवाइत जखन अपना मोही स्तर सँ गलार, बटपवनी आ समुदाउन गवै छथिन तखन गाय बरद चरब छोरि कऽ इन्हर-उमहर ताकऽ एतौ छै । तहिना धनरोपनीक समय छुप-छुपक आवाज सँ वट्टि कऽ हमरा ओमो दोसर आवाज नीक लगतइ नहि अछि । तहिना धान काटऽ काल हाँसुक जे खप-खप शब्द होइछै ओकरा आगू तान-तनुराक सूरी ने नीक लगइत । जो ई खेत ई खाल अपनहि रहैत त ई आवाज गोशूना मीठ लगैत ।

से हम ई पका केलहुं जे ई अगहन गवि मे अिताबी । धनकटनी, मोना गम भऽ जायत । घर-रहस्यीक रस सेही सेउत ।

पूजचनमा

महशक रोटी खाव मे केहन बड़ियाँ होइ थइ तहिना देखहु मे।
रंग सऽ बैगनी होइ छइ हवा स्वाद केहन सोन्हगद, आ मझुर केहन ? बन-
बनिहारक सँ ई लहु-पेड़ा हमरा संग दिस छइक। जकरा गाय महीना छइक
ओ वृषक संग खाइवे। ओना दून तरिसो रेल ला हरियर मिरचाइक संग
रोटी खाइवे। लाउन-भादव मे तिरहुत मे तरह-तरहक सरकारी होइ
छइ। गरीब सँ गरीब आदमी अपना घरक पहुँचलि मे हिनगी, रामचमरी,
ठडिया साग, मेनहारी, पीरो, बेरा, करैल, ओल, अरिफोछ, तेकुना, लम्हावर,
हरदि, जाद, मिस्साइ, भोटा, कटीना, जुम्हर, सबभनि रोपने रहिसे। बाबू-
भैयाक पोखरि सँ चोरा-चोरा कऽ माछ मारि अईछ। हमरा सब बिस माछ
बड़ पेच बस्तु अछि। के अभागल ऐहन हैत जे भद्रभारि मे जलसीम भोग नहि
लगाबौत।

जलसीम ! वृषका जोगर खेलक की मइ जेवा ! लाभू-बैरागी के भरण-
वक लेल बाबू-भइया जलसीम कहलखिन अर्थात् गाहन मे करय बला सीग
सङ्घि सँ जलसीम जाल्ल भय गेलै।

हमरा तिरहुत मे पानिक अकाल नइ होइ छइ। नदी, नाला, डबरा,
पोखरि कतऽ नहि भेटत। गाँव-गाँव मे पोखरि, गली-गली मे डबरा, जगह-
जगह पर थार, कहीं-कहीं समुद्र हन पोखरि देखबइ। एहन-एहन
पोखरि के वैश्यक खूनल पोखरि कहैत छैक। जानव के खूनल एहिजेक
कहबैक जे ओकरा खूनय बलाक पता ककरो नहि छैक। परंच हम राब
बाबूक न्हँ सुनलिहने जे जहन राजा सबक निवाजि सनकि जाइ तऽ सनाजक
लोक सँ इएह बेगारी मे लगाकऽ बड़का पोखरि खुगबैक। एहन पोखरि
नाम शिवसागर, गंगासागर, इइ दे। एतथी ई नाम सब छीहै। हनऽ
मे आदल के सगर सँ गदि हजार बेटा खनि-खनि कऽ समुन्द्र तैवार

बैलकनि। से भैया ! जहाँ कतह बड़को पोखरि सब तैवार होइत बैसाइ
धइ से भरही मैयाक डबारा दा बेटा निलि कऽ खूने छैक। दोसर पोखरि
नाम राजव काल बाबू लोकनि अपना नाव बापक नाव रखैत छथि। एहिना
लेट लोकनि चावर, चीनी मिलक नाम अपना भाइ बापक नाम पर रखैछ।
जलसीम सँ सरकारी कार्य चलेछ। भूइयो सूसहर सेहो खत्ता उपेछ कऽ
सेर आध सेर गईचा-पोड़ी माछ डबरा सँ छानि अई अछि। बागि मे
भूलि कऽ बिना नूनक माछ छाच तइओ साराध नहि लागत। गरीब गूरवा
गव मही अकालक समय मे झुओ मास नोछे पर गुजर करैत अछि। गहँव
बैरागी कहेक कंठ मे कंठी बागैत फिरत। कोडी डबारी मे धान चावर
मरल होइ, बारी बारी बेर मे तर-तरकारी फल-फूल लागल होइ तखने कंठीक
हजत वांचल रहत गरीब कंठ मे चारिपो दिन ठीक सँ नहि बान्हक रहि
गकैत अछि।

मतसब ई जे बाहर नोकरी कऽ वाला वर्ष मे छः महीना परो पर बिता
सकैत अछि। ऐहँ सनांग ठीक रकैक तऽ सब ठीक छै। हम सोचलहुँ खीगनी
हव किछु ने किछु करिसे रहत खेत मे गोबर तऽ आएत, घरक काल-साज
मेहो किछु-किछु करत। माइपो के तखने सुल भेटतैक। दम्भो मारबाक
कनिक-ननिक अवकाश भेटत। रेवनी क विद्युत नाव के अधिक नहि दुमेतैक
ठिक्क तऽ पुतोह लगे मे रहतैक। हम छः मास गाँव पर रहब आओर छः
मास परदेश रहव।

आसीन-आसीक, जगहन, पूत आ भाग। एखन पाँच मास बाँकी छल।
हा पञ्चे तीप। बीस रुपैया भेल। किछु ऊपर सँ मालिकी देने करताह।
किछु पहिलका जमा अछि। समटा दिला-दुला कऽ काज बल्लिए जाएत।
नाल एकदम ठीक भऽ गेल। दुरायनन देखे करत। मुदा जगहन मे नहि।

सलचनमा

६६

नरचनमा

मास में। चारि मास खूब बड़ियाँ सँ गोभिर रहव। चेत में औरसा खाक
मास छोड़व नहि तऽ इही मऽ तकवे जे बेसाख में मरसा पटोनी कइए
कऽ मास छोड़व।

अहिना संचेत-गोचैत आश्रम चलि एलहु।

राधा बाबू जेल सँ छुटि आएल रहथि। गोपी महात्माक आशा सँ खूब
आशोर चरखाक प्रचार करथि फिरेथ। मधुबनी में बाबू भइया समहक
गृह चलेक। लग-मास के इलाका में हमारो चरखा चलऽ लागल। सैकड़ों
मधुरिया जगह-जगह काटल हुक लावरीक शिवाव लेत छलाह। तकरा
बसला में काटऽ वाली स्वीमन ऐसा सेहो पचेत छलीह तथा कपड़ोक बड़ियाँ
इन्तजार छल। राधाबाबू इलाका सभ में भूमि-भूमि कऽ काज देखैत छलहु।

जतऽ-जतऽ ओ आसि हमई जाइ पाछू-पाछू। हमर काज छल, आबूक
कपड़ा साक केनाइ, कागज-पत्र भरिया कऽ रखमाई, ककरो ओतऽ पठवैत तऽ
ओतऽ सँ मऽ एनाई, कखनो नैशक-चलत होइथ तऽ ऐर-डोंड जाति बेनाई आशोर
चौक समहक प्रिआन रखमाई। काज कखनो-कखनो भारी मऽ जाइत छल।
ई लखन होइत लखन की बाहर सँ कोनो सुखिया आयल रहैत छल। सुखिया
के अथलाक पश्चात ओका लकऽ इलाका सभ में भूमि पडैत छैक। कखनो
टन-टन सँ कखनो बेलगाड़ी तँ। एकाव बेर राधाबाबू हवागोड़ीक जोगार
सेहो कऽ लेत छलाह।

बहुतौ सीराजी बाबू जगह मऽ जाइत छलाह। राधा बाबूक टहलुवा इली
तँ सम-खहरधारी बाबू हमरा अपन टहलु बुझैत छलाह। हमरो फरमाइस
हुनकर पभक पूरा करैत जग मऽ जाइत छलहु। जे सुखिया जतेक, बड़का कूश
के होइ छलाह हुनका वातव सँ ओतवे मलिकाना गन्ध अवैत-छलैन्ह। तम
राधाबाबू जकाँ संत-महत्मा तऽ छलाह नहि। ई हुनकर समहक अपन-अपन

साधैत रहैत। अपन अपन स्वभाव रहैत, रुचि छलैन्ह। किनको चुनि
कोनी चाहिए तऽ किनको शरीर के घंटा मरि मौलिसि हेबाक चाहियेन।
मुनऽकाल पर अतएव कोनो बाबूक जेल जरूरी छलन्हि तऽ किनको साहोरक
शतमनि चाहियेन्ह। कियो पानक पाछु धताह रहैत छथि तऽ किनको
बड़ियाँ तिगदेत चाहियेन।

किनको आँगूर फारेबाक शौख छलन्हि तऽ किनको माथ पर जादो कुसुम
क तेल मुनऽकाल नलेबाक शौख रहैत। ठूटा बाबू पहनो रहथि जे अपन चरखा
रखने रहथि। तैह पटोवाला चरखा जकरा रवदा चक कहैत छै। ई चरखा
हमरा राधा बाबूक सग में सेहो छलैन्ह। परस जखन अन्तह धूमक लेल
निकलैत छलाह तखन चरखा संग में नहि लैत छलाह। आभरने में रहैत
काल में राधाबाबू चलेवेत छलाह। कखनो-कखनो एहन होइत छल कि बाबू
लोकनि अपने बड़का सुखिया संग हवा गाड़ी में लटकिक चलि जाइत छलाह
आशोर हुनकर चरखा हमरा लऽ जाए पडैत छल। एक बेर एनां भेलैक कि
मंगलसीपुर के कोभा बाबूक चरखा एही धरफर में पाछू छुटि गेलैन्ह। भिनतर
मास चिनयक धाद ओ १५ मिनट चरखा चलेवेत छलाह, सुबो बोहि दिन
सबोम सँ हुनकर चरखा पाछू रहि रेल छलैत। बाबू कसि कऽ बड़का गेलाह
ने पानि पीव आ ने खएवे करव। हमरा तऽ भैसा बड़ नीक लगैत छल बाबूक
एहि नाटक के। अंत में कहना कऽ बाबू के मनोस गेलैत आ समलोका बेदाना
बैबाक हेत तैयार भेलाह। राधाबाबू हमरा कटिऽ लगलाह। किएक ओपति
बाबूक चरखा छोड़ि एलहुन्ह।

एहि तराई सुखिया समहक गोष्ठी में डर सँ हम भर-भर कपैत रहिहुँ कि
अहु शूल चुन नहि मऽ जाव, बाबू हमसा नहि जाइव। परंत जनेत
क्षियैक भाई साहेब, राधा बाबू अपना सति क हेत हमरा ओड़वे डेटेथि नहि।

राधा बाबूक स्वभाव कड़ा अथवा दृढ़ होने से किन हमरा लेल नहि । ओत हमरा बड़ मानेन छलाह । अमर मे कहियो कहियो भिन्नेह सं हमरा खान नाक मलेथ । कहियो पीउतर दवा देथ । सुतए काल मे हम जी हुनका लग बैसल रहितहु सं ओ अपन टांग हमरा गोदी मे की नाँव पर राखि देथ तथा घर गिरहस्थी क मरप पूछैथ । ओ एकाएकी हमरा घरक सभ बाबू बुझलैत छलाह । हमर दुःख सुखक लिपि लेखैत छलाह । ओ नहि चाहैत छलाह के हम मैल ओ छोट कपड़ा पहिरी । एक बेर अतिन मे घर सँ बिदा भइक जखन आस-राम मे पहुँचलहुँ तऽ भोती ओ हमरा किनि देखैत, कमीन बनवा देलैन । बड़ी कीनि देखैत एक दिन राधा बाबू हमरा लँ बहलैन खरास क समान नहि, मनुखक ममान रहऽ पड़लोक, दबलुवा बना कऽ नहि, संगी बना कऽ तोरा हम राखऽ जाईत न छुथोक ।

महिने हम मर मर मे जी सरकार सरकार कहैत छलिनहुँ मुदा बाबू एक दिन जोर सँ बेटलनि । तोड़िया सँ खाओ जी-ओ कहऽ लगलिनहुँ ई तऽ मैलेन राधाबाबूक बात परअ दोसर तोराजी बाबू मर मे लँ बैकड़े मे मरवे एहने भेटैथ, जिनका 'जी सरकार' मुदवा से बढिवाँ बुराईत छनि । नहि कहिओन तऽ गुररि-गुररि कऽ जाकैत रहलाह । जिनगी भरि जिनकर कान 'मालिक-मालिक', 'सरकार-सरकार', 'हुजूर-हुजूर' हुनेत अपलनि अछि हुनका लेल अहि बात समक बड़ महात्म छनि । बिना छौकल शक्ति समान बिना जी हुजुरीक मर हुनका निक नहि लखैत छलनि । पच्छिमक मुलुक छैक गुजरात राजपूताना, पंजाब । एक-श्राव बेर पच्छिम क तोराजी बाबू सँ हमर भेंट भेल हुनका हु-चारि बेर हम सरकार-सरकार, हुजूर-हुजूर कहलिनहुँ तऽ वड़ मड़कला भैया ! कहलमलाह—बड़ मर जवान छौड़ा अछि ! आ-मर मे हुजूर-हुजूर, सरकार-सरकार करैत अछि ।

धनचन्दमा

बेटा, हुजूर ओ सरकार सम्भक विरुद्ध तऽ हमर झगड़ा मोटी अछि रहल अछि, तखन हमरा मारि दैत अछि । हम बड़ कठिनाई सँ हुनका बुझलिनहुँ के हमरा ओत बाबू-भैया लोकनि 'हुजूर-सरकार' क बिना मरपे नहि हुनेत छथि.....ई आनि कऽ पच्छिमक तोराजी बाबूक अछि हुनका मर मेलनिह आओर जीह कट सँ निकालि लेलनिह, एहन मर छै । भइ तोरा के ! हम कहलिनहुँ—जी हुजूर, जी हुजूर, हमरा ओत देह परथा छैक । बुझिया समक मुठ डेढ़-दू महीना परऽ होइक । तखन हमर कान बड़ जाइत छल, कहिर ऐके छी । आओर मोजे छत । राधाबाबू कुरता-कमीन, गंजी, बनिशान नहि पहिरैत छलाह । सिथल बोनो कपड़ा नहि । कखनो तीम मरक, कखनो चारि मरक धोती पहिरैत छलाह । देह पर छोट मन चढ़िर रहैथ छलनि । बाबूक दिन मे काश्मीरी लोई ओढ़ैत छलाह । एकाध महला अंडी सेहो रहैत छलनि । माने ई की खीच बाला कपड़ाक भिन्नी चारि लँ बेली कहियो नहि मेलनिह । ऐसी कपड़ा आ ऐसी बाहुन ताहि पर लँ देखी श्राथ । अइस चारि चोट मारेत छलनि कि कपड़ा साफ भइ जाइत छलैन । हाफ खहर, मार मैलो जहवीए होइत छैक आओर साफो बहिरण होइत छैक । चारि-चारि दिन पर राधाबाबूक कपड़ा हम साफ करैत छलहुँ । हुनकहुँ कि महिने अपन कपड़ा ओ अपने साफ करैत छलाह परन्तु बाद मे कान बहुत बड़ मोलाम ई जिव हुनका छोड़ पड़लनिह । सेनाई ओ ओढ़ने खाइत छलाह जेहन आकरमक बाकी बादमी । महतमा जी क ओत तँ टमाटर आओर पियाऊज सेनाई सीख आवल छलाह आकरमक मीचा मे खुब टमाटर लागल छलैक । पियाऊज सेनाई ओत लगजैत छलैके । गोम मे चारि टा पियाऊज आ आठ टा टमाटर खाइत छलाह हमर राधा बाबू । पियाऊज तऽ हमहुँ खाइत छलहुँ मुदा बनाओल टमाटर खियाक ओरिधान

धनचन्दमा

कहियो कहियो खा नै सकलीं। पिआरल सतेक नै नइहै जे बुकल मे
सबैस जे सरकारी अस्पतालक कमपीटरक धर होइत। तरकारी मे दस कइ
पच्चासो धेर टमाटर हम खेने हैन परख आभक सनास बाकल टमाटर चुसनाई
हमरा कहियो नहि नीक बुझाएल। आगरत मे माछ-मछरी खेनाई मना
छलैक। हमरा नास मे एकाध धेर मोड़ गेटि जाइत छल। केना गेटेस छल ?
छट्ठू भाई मलाह छलाह। हुनके आधीक नेहरक लगहि एक गाम मे पड़ैत
छलीक। छट्ठू जाइते रहैत छल। पुरअइतक पात मे छपेट कइ हमरा लेल दू-
चारि कटिया सबैस छला। हम दोगी जे लइ जा कइ जलजोयक भाग लागबैस
छलहुँ। एक बेर राधाबाबू हमरा सँ कहलनिह हरी, तीरा, मुंह तँ तइ माछक
गन्ध बघेत छौक। इन माथा खुला लेलहुँ तइ वाअल छलाह—कोनो
बात नहि, इन वेष्णाव छी तइ अहि सँ की समूचा दुनियाँ कंठीमे बानिह लेत ?
ई कहिक गुमहुरे लगलाह। पाछू, कहलनिह माछ खरवाक बाद एकाध टा
पान खा लेबाक चाही। अहि सँ माछक नइक गरि जाइत छैक।

हम तइ चुचुन सँवार ठहरलहुँ। हमरा की दुमल की केकर गन्ध केना
मरैत छैक। तेरो हमर राधाबाबू बड़ नीक आदमी छलाक। खुलल मिजासक।
कहियो की हमरा मना नहि केलनिह, हम बीड़ी पीवैत छलहुँ, माछ खाइत
छलहुँ। कहियो ओ मना नहि केलनिह।

अगहइ गो हुनकर सार बलखिन। संग मे आदमी छलखिन। भातक
चूरा, पकवान, छुह, अचार, आ घातरीक गुरन्वा। दू चमेरा जनेस छू
अनने छलखिनह। लोक सभ खूब खेकक। चारि बिल रहलाक उपरान्त
बापस भेलाह तइ ओ हमरो संग मे लेने गेलाह। पता लागल, मालकिन आक
वाली छथि। मालिक के दू गोद बैटा छनिह, ओहो अपयनिह। मोद
बोल्ह दोअक लेल एक आदमी उमहर सँ सेही अचरैक आ जनहुँ रहबइ।

एखन तक मालिकिनक हम नामो नहि सुनने छलहुँ, दरसन तइ केने छलहुँ
नहि। कहिसँ हमरा गोन मे इलखिनी पैस गेल। अगर हमरा छोटकी
मलिकाइनक समान इही मालकिन मैलीह तइ चारिबे दिन मे आसरम
छोड़िबइ मागइ पड़त नहि, अगर धूलबाबूक मासक समान हेतीह तइ
निरबाइ होइत।

अहि प्रकारे सोचनि-बिचारति हम कुटुमक संग गइ गेलहुँ। लहेरियासराय
सँ रामस्तीपुर। ओतइ सँ—पहलेजा पहलेजा सँ महेन्द्रह। फेर पटना
करसन।

जाइ तक हम बड़की गाड़ी पर नहि चढ़ल छलहुँ। ताबेतक पटना
जमखनक ई नवका-नकान नहि बन्दल छलैक। आव तइ खैर बहुत बड़का भकान
झैक पहिने अहि से छोट छलैक। बाहरी मे एतेक बहिर्माँ मिलमिट बला चिकनी
सड़क नहि छलैक। परख गाड़ी तइ बड़के ठहरल। हम पहिने सोचैत छलौं
कि बड़का गाड़ीक टिकट (पात) तेहो बड़का होइत होइतैक, तासक समान।
परख नहि, टिकट मे किछु अंतर नहि। हँ, टिकट जाटइ जे ओहन भववा-
इकी नहि, जेहन कि हराही (दरभंगा जमखन) मे होइत छैक।

गया जाग बाला हम संग तीन गोटे छलहुँ। कुटुम, हुनक मोकर
बार हमर कुटुम ठहरला जमींदारक बेरा। गाड़ी के सगे कोना बेलतिथेन।
मिकिइ जिलासक टिकट लेलहुँ। बाँकी दू टिकट सैबर किलात छलैक।

गया होतक गाड़ी तेसर पलेटफारम सँ तटिकइ लगेत—छलैक। पहिल
रोवर—पलेटफारमक बीच होत छलैक। पूव दिश जैव तइ लोके हबड़ा
हुँचब। पश्चिम दिश बाएँ तइ लखनऊ आओर दिखी, बड़का-बड़का इअन
बड़का-बड़का दिववा। आवए—जाएक हेत खूब खुसकैत रास्ता। खूब
रैत पाठक। लम दिखु पैस। कुलियो पकी घाली बजैत छल। बीड़ीको सिग-

रेंट बेचने वाला काई दुआ में बसेत छल ! सभसँ ठाट-बाट में कोट-पेण्ट वाला पचासो आवनी । किछो जमशेदपुर जाइत छल तऽ किछो बनबाइ । बड़की लेनक गाड़ी के बापा में छोटी लेनक मधुबनी, भंकारपुर वाली गाड़ी बकरीक समान लगैत छैक । घटना बिना शहबआ बात बेसी अछि । उम्हर जकरा रखना कहैत तकरा हम तम परना कहबै । उम्हरका लोक ताफ बाट बसेत अछि । एहना गाड़ी में बाबू समझक मुँह सँ किहिङ्ग दिहिस' निकलैत छैन्ह, तऽ उम्हर हुनका समझक छैन्ह सँ किबादिबा हुनबैक । आकास-नातालक फरक नहि साइत छैक, भइया ।

रातिक समय छलैक । गाड़ी पर बैठैत हमरा नींद लागि गेल ।

गया पहुँचला पर नींद जूठल । ओतऽ सँ दोसर गाड़ी पकड़ि कऽ भवाइ पहुँचलहँ । नवावा सँ आधा कोन पहुँच छैक मोहनपुर । दूरे सँ कीडा चमकि उठल । कुतूह समझक लेख टनटम आएल छलैक । ओ—ओड़ी पर चढ़ि गेलह । हम दुनु गोटा पाँच पैरस ।

राधा बाबूक लखर लाखपती जमीनदार छलखिनह । दू पट्टी में इस्तेद बोटल गेल छलैक । उपजा आ अमदनीसँ बढैत छलैक, जमीन जग एक्के ठाम छलैक । हाथिपौ छलैक । मटरो छलैक । टनटम सेहो बगनी भेही छलैक । छाखरिवा-पालकी सेही छलैक । पक्का-बैराक छलैक । कुरमी, आराम कुरमी, कोच, बैच, टेबुल सभ किछु छलैक । नोकर समझ लेल कच्ची ईटाक दू-तीन घर ओहि दिश बनाएल गेल छलैक जाहि दिश राध महीसाक रहक जगह छलैक । हमरा रहक लेल छुटमक नोकर (आदमी) ओही कोठरी में लऽ गेल ।

दश नाँविक नाम छीह । दूनु दिश बढल बीस भैंसा । भैंसाकें उभार वाला 'पाड़ा' कहैत छैक । ओही सँ इम्हर हर जोतल जाइत छैक परम्प

राधा बाबूक लखर एकोटा भैंसा नहि छलैन्ह जेकर पीठ आओर पाँजरक इड़ी बकसाक नहि करैत डोइक । बीस-बीस टा भैंस, बीकरा जुएवाक कौनो निश्चय नहि । सत कनेत रहैत छलैक । समझक ओहि मे हम कौची देखलि-येक । पर आधार—रोडा मे अठगोरया, कीडा बजबज करैत छलैक । सत बुकि लियऽ भैया बहुत बड़का कुकरन केने हैत तँह जमीनारक ओतऽ भैंसा जनम लेने हेलाह—ओतम । तहि भरव, तहि जीवक, हुकहुक करव । हम एक आदमी सँ पुछलियैक—ई कमजोर भैंसा कोन प्रकार हर खिचौत अछि ? ओ कहलक—खेतीक समय मे हिनका थोड़-बहुत खायक दोस्ते देल जाइत छैन्ह, जखन खेती भऽ गेलो सहन सतराम । पाँधार नार, वाली-भूनी के जमला लोक सम चोरा-चोरा कऽ बेचैत रहैत छल । किराया पर मकान लगाव बला के जेवक ममला अपना मकानक प्रति होइत छनिह, ओहि सँ कने ममता जमीन-शार के अपना माल-जाल दित सँ होइत छनिह । नोकर-चाकर अनसा-कमला बहुत नाम्नी समखा पवेल छलाह ओहि दिन मे ककरो दरमाहा दू भैया महीना, किनको चारि आ किनको सात । दवा सँ ऊपर किनकहु नहि ।

भाई साहेब, आहाँ पुछव जे एतेक कम दरमाहा मे जमीनदार भ नोकरक दुनिधौ—जहान कोना चलैत छल होइतैक ।

जवाब कठिन नहि अछि, बिलहुल सोक । नोकर सभ दरमाहाक कमी लुट-पाट सँ पूरा करए । रैयत के लुटऽ मे जमीनदारक नोकर चाकर कोनो बातक परबाइ नहि करऽ । हरिसर बगीचा सँ लऽकऽ सजननि, कदीमा तक रैयतक एक-एक चीज पर बालिकक एक दम अधिकार होइक । एहि मे सरकार बहादुर अपन पुर्लप, गलतन सँ जमीनदारक मदत करैत छैक । नोकर-चाकर-लुटि-लुटि कऽ निवहि करैत अछि । जमीनदारक खजाना सेही मरेछ तथा अपन घर मरेछ । जमीनदारक नोकर के सम ठाम इएह

बलचनमा

बलचनमा

२०७

हाल हो रहे।

कुटुम्ब दरवाजा पर ठाठ बाइक कमी नहि छलै। हाथमें दूटा आर्म बुरसी आरिगी मंगुली कुरमी, एधटा गोल डेबुक मखल अछि। मोटका गद्दीक एकटा भारी भरकन कोच पड़ल छलैक। नाथ राखक जगह रोक सँ काड़ी काशीर चौकन भंड रेल छलैक। कोचक बाँध पर जहाँ तहाँ छून आशीर सुँवनीक दाग पड़ल छलैक। जहाँ रैल वाला सुँवनीक शीशीन इकाइ, पान खए-खाक उदरान्त उपर सँ छून खाइत होएलाह।

दोसर दिस वैद्यक मे दूटा ब्रह्मा-धरका रखपीर पड़ल छलैक। ओहि मे कतहु-कतहु काँटी उखारल पठल हुँइबउमे छलैक। शतरंजक खाना चकू सँ खोदि कऽ कड़ियों कीनी आदमी बनौने छलैक, ई चेन्हे तेहो एखन तक छलैक। सक्तीनोसक नीचा सक्ती जाल बना कऽ रखने छलै, जहर खाइ देवद व का बेफीक आ अदही छल। बक्तर हुनहीं दिक्का क दूटा पाहुन कइल छलैक।

राधाबाबूक घर के हमरा बारे मे बहियों जकी हुनक छलैन्ह। अपन आँखि सँ देखि तेहो लेने छलाह। अहि प्रकार हमरा संग मंगुली मजदूरक समान बरताव नहि करैत छलाह। खास टहलुआ क लगान हुनरा भिठरिया हुनक गेल।

मकिकिनी दूइल भाई-बहीन छलीन्ह। नाम अछिन्ह लक्ष्मीजता। भाईक नाम बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह छलैन्ह। सरकारी अफसर बाबू के० पी० एन० सिन्हा कहैत छलैन्ह। हमर मलिकाइन दुलारक द्वारे बध्नी कहल जाइत छलीह। हुनकर रहनसँ नेहरे होइत छलैन्ह। राधाबाबू भेलाह तोराजी, अपना घर बला सभ सँ मनमुटाव चलीत छलैन्ह। बाल-बच्चा सभ के मधुरारिषे मे छोड़ने छलाह। एतहु कीनी बरछ क कमी नहि छलैन्ह।

लाख सँ ऊपरक जमीन जायदाद छलीन्ह। पच्चीस-तीस हजार क जइना छलैन्ह। हजारों गोनक उपज छलैन्ह। पुस्त-पुस्तान सँ बाएल खानदानी इज्जत छलीन।

बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह कोलेजक पढ़ाई समाप्त नहि कऽ सकल छलाह। आप के आसपास जंगल सभ मे हाथी पैसावक शौख छलैन्ह। अमीरोंक कारण बेचाराक जान तेही भेलैत। कहल जाइत छैक, एक बेर छोटका लाटसाहेबक कीनी दोस्त बिलाएत सँ अप्लाखिन्ह। हुनका हाथीक बारे मे बड़ इच्छा छलैन्ह। तेना आतामक जंगल मे हाथी पकड़ल जाइत छैक? कीना ओकरा पालतू बनाएल जाइत छैक? कीना फेर ओ बिकाएक रेश हरिहर क्षेत्र मे जानल जाइत छैक? ई सभ लाट बहादुरक दोस्त साहेब अपने आइचय सँ बुझा चाहैत छलाह। एही सिलसिला मे राम बहादुर जानकी नाथ हूपर के छोटका लाल साहेब आदाम पठोलखिन डिपबोर्डक लग भंड कऽ जंगल मे डेरा खसाएल। हाथी पकड़-बलाक अवसंधानी सँ हाथी छपक टा गूठ हमरा समक डेरा पर टूटि परल। साहेब बहादुर एकटा गाछ पर चढ़ि कऽ अपन जान बचएलाह। परंच राम बहादुर एक टा तगसाह, खिसियाह हाथीक शिकारी मज भेलाह। हुनकर लाठ धर तक नहि पहुँचि सकलनि।

छलने १२ वर्ष क बेज मे बाबू कामेन्द्र प्रसाद नारायण सिंह के कान्ह पर स्टेटक भार पड़लन्हि। बाबू के नहि रहला सँ चाचा क नीयत बदल लगलन्हि बरख नायक जलाजीक कारण सँ जिनका हुकसान नहि सँठाय पड़लन्हि। बाबू साहेब क नाय बड़ शानी मजोमात छलखिन्ह। हुनके ज्ञान क परताप कहु कि इ स्टेट तरकी करैत गेलैक।

अपन सबकी मलिकाइन के अहि सँ पहिने हम नाहि देखने छलखिन्ह।

थड़का झील-झील, जाकर-सुँह, थड़का कान, गमरल जॉलि, ओसल दरवाज
नाक, पातर होड़, धेल क ममाज गरमि। रंग मेहुँआ छलन्हि। हाथ-पेर
मडका-वडका छलन्हि। धानी रंगक तीन पड़िया सारी पहिरने छलन्हि।
राउड सँ पहिने जॉलि एमारिलड माथा नल-वक आइल छलन्हि। मोन अछि,
हमरा देख कइ ओ गर्मियता सँ माथा हिनीने छलीह आओर किछु समयक
लेक हमरा दिस देखैत रहि गेल छलीह। पेर लू कइ हम प्रणाम नलियन्हि
तइ हुनकरे सज्जी। वाहिमक कानाक समान हुनकर दौत पानक भरलुक
लाली क कारण सँ सूर्य बहियाँ लगैत छलन्हि। किछु आगल नहि छलीह।
किछु काल हुवेनी मे बैगकइ हम थोड़ा नलि एलहुँ।

वाहिमक माथ छलैक। आइक प्रारम्भ। ओर मे माथ क बुझा
मून, इतिथरका मिन्चार्न ई भेल कल्लै। ओकर बाद हम बाहु तादेव क धोती
मे सावुन लगवैत रहलहुँ। फेर अपन नातिकक छोड़का बच्चा सभ सँ संग
केलिकइ चिन्हा परिचय अइतहुँ। बच्चा हुनका तीन छलन्हि। एक बेटी
दू बेटी। बेटी नौ वर्षक बच्चा सभ मात आ पौल मालक, बेटी समझक सुँह
बाप सँ मिलैत छलैक, बेटी क नहि। बच्चा घरक बच्चा सभ लुगार तइ
होइत छैक। आंख, फेस आओर मूठ—ई बड़ सुलभता सँ हुनका सभ के
अंदर पैत जाइत छलन्हि। मचलनाई, हसनाई, विधु-वनाई, रज मैनाई—ई सभ
ओ माये-बापे सीखवैत छलन्हि। बहियाँ—जे किछु सीलैत छथि ओहि मे वं
बेनी हिसा मीकर-चाकर आर गरीब पड़ोसी समझक दैल रहैत छैक।

हमर मातिकक बच्चा सभ हमिया नातिक माथ मे रहैत आएल छलन्हि।
बाप, बच्चा क रोआव हुनका सभ सँ नहि भेटल छलन्हि। नातिक माथक
मीकर-चाकर हुनका दिन एक विचित्र प्रकाशक लापरवाही देखवैत छलैक।
परिणाम ई भेलैक कि ओ मोनक बच्चा सभ सँ हिस-मिल कइ खेलाइत

छलन्हि। अम्मा जी (राधा बाबूक सासु) अपन तमस पूजा पाठ आओर
जय पुराण सुनइ मे बितवैत छलन्हि। हुवेनी क काज के देखनाई-भुननाई
बाबू साहेबक ममा कइ माई करैत छलन्हि हमरा मलिकाइन के कितव
पहुँक भारी आइत छलन्हि। खिन्हा-कहानीक पोथी सभ खूब पढ़ैत छलन्हि
बच्चा लपटक देखनाई हुनकाई मोझी करैत छलैक।

हमरा पता लानल की मलिकाइन सेहो आव आओर मे रहली। बच्चा
सभ आव एतहि रहि कइ पढ़िन्ह। ई हिन कइ हमरा बड़ आनन्द भेल।

अहि मे सुशी ब्याक तीन बात छलैक भइया, बुझलहुँ नहि। बात ई
छलैक कि आश्रम पुरुष सभ सँ भरल छलैक। एक देवी छलन्हि।
कहियो रहैत, तइ कहियो नहि रहैत छलन्हि। आओर आव राधाबाबूक
परिवार बरोबर आश्रम मे रहतन्हि। स्त्रीमण आर बच्चा समझकात
सुनल लेल भेटत, हुनकर सुँह देखक लेल भेटत। आश्रम जहलखानाक
समान नहि लगैत। इमड मे ओतैक जे घर छइ।

साइ गेलहु तइ थारी मे दू तरहक भात देख मे आएल। बाबू सभक
आस्ते मेहिला जाइक मनकैत भात होइत छलन्हि। अइ मे बगला-सुन्तला
पर समकैत मेहीका जाइक भात नीकर-चाकरक कर्म मे जाइत छैक। हम
देखिने बुझि नैलहुँ की राधाबाबूक सारक अइ अछि। कहिये देने छी
पहिने की ओहि दिन बाबू-गोयाक अइ हम बड़ मोन सँ खाइत छलहुँ। या
हना कहियो की बहियाँ वस्तु जे खाइत छलहुँ ओ सभ अइ होइत
छलैक। ओकर सभक बास्ते मोठका जाइक जे भात नै छलैक ओहि
मे धानक भूना आ अकरी छलैक। बाइ रें तिरहुत। की मजाल की
तिरहुतिया चाउर मे एककोटा कंठक बन निकालैक। ई अकरी-ककरी गंगा
क उत्तर दिस जाए क साहज नहि करैत छैक। खैर सोनाइ कोनो खराब

नहि छल । तू मुदा बेगनक सुजिया अहि बातक गथा छैक की हवेकी मे कंजुसीक राज अछि कुन भरि देल देखैक आ साहबक की बढियाँ सुजिया बनि जाय तऽ ई केना होएत ? अकार अजबकेँ बढियाँ छल । थारी देखऽ मे कठौतक जकाँ छल । हमरा दिवाँका बङ्गला घर सभ मे थारी सभ बढ बढियाँ आधीर बङ्ग मोट कान्ह बला होइत छैक । एहम नहि की देखला पर परात परए मौन ।

छा जेला पर मलिकाइनक मनकी लें बाबाजी कनी सन बही देलक । ई हुनकर दया छलन्हि । मालिक सभ के कहनाईक सुताधिक "नोकर, चाकर, टङ्ग आधीर खदाम के बही खएवाक इत मँडि छैक" केर जहन कीनीसनी बही भेटल ओहि लें हमरा बङ्ग खुशी देन । खुशी आँह लेल नहि की बही भेटल । खुशीक कारण छलैक की मलिकाइन के हमर लयाक छलन्हि । मलिकाइनक मोन के कोनो कोन मे जरूर बैठ गेल छलहुँ । अहि बात सँ ई गालम गेलैक कि आगु तेहो मलिकाइन हमर स्थाल रखीह ।

जेलाक बार तऽ हाथ भो कऽ जखन हम लोटा रालऽ आँगन मेजहुँ तऽ लरोता सँ सुषारी कहरैत मलिकाइन बघलीह—पुरान खोटर छैक अगई पुरान नहि, दुतालक पुरान । तोरा देह मे अँटी त पहिर ले ।

ओ सरोता पला हाथ केँ उठा कऽ अंदर टुकक ताम्र इशारा केलन्हि । ओहि पर कपड़ाक मोटरी पडल छलैक । आँहि मोटरी मे ओ खोटर सेहो छलैक । हम जऽ कऽ ओकरा उठा लेलियक । मलिकाइन ओखि नचा कऽ पहिरक इशारा केलन्हि तऽ हम ओकरा पहिर लेलहुँ । बिना बाँहिक ओ न्हीटर हमरा देह मे बैठि गेल । बेसल । मलिकाइन केँ बेहक रहल पहिरक, ई ताँचि कऽ हमरा बङ्ग खुशी भेल ।

एकटा कुर्सी सेहो सिपा देहो आँ बजलीह । उपकारक शोक सँ हमर

गरदिनि सुकि गेल । झीन मे कहलहुँ जुग-जुग जिनेधि हमर ई मलिकाइन । जिनेध सँ गोरल नजरिक देहन जादू होई छैक गरिया । आल बच्चा बलाक मोन बङ्ग नरम होइ छै । हमर छोटका मलिकाइनक कसाई सन हृदय पडलैन्हि । यदि ओ अहाँ के अनिरती हेतीह तऽ ओहू मे करैले मन स्वाव लागत ।

एलया मारिऊस पैस कऽ पानक डिब्बा खोलिकऽ बङ्ग कएदा सँ गान लगीत, तू बीड़ा मलिकाइन पहिने आना मुँह मे भऽ जेतीह लखन बाहुन चा ककरो बनका देखीन्ह । सगई बढिन हुनक ओहू रहितथिन्ह तऽ पहिने हुनके धीतथीन्ह । आखरी मे काते सँ एकटा छोटका पातक बीड़ा लगा कऽ हमरा दीवधि चानीक डीवा सँ अनासी सुरती निकालितथि आधीर अपना मुँह मे छुटकी भरि दऽ लीवथि । ओहि मे क्यो दोसर हिस्सेवार नहि छलन्हि । बाबू कासेन्द्र बाबूक सजुरारि खुराक देहात मे छलैत । असुर सेता छलन्हि । नेट्टी केँ लोपोधीक आधम मे गालि कऽ पढ़ै-कीछवैत छलाह । आगु चलिकऽ हुनका लोडराती बनवाक छलन्हि हुनकर एक फोटो कामेन्द्रबाबू केँ रहऽ भेता घर मे छलैन्ह । सुखाएल चेहरा, पसक ओखि तथा निचकल गाल शोका मे एजडा चरछा पडल छलैन्ह नाम रहैन्ह कनक किशोरी ।

राधाबाबू आधीर कासेन्द्र बाबूक शीत स्वभाव मे बङ्ग अँतर देखऽ मे खाएल छल हमरा । एक केँ फकरीरी बढियाँ लगैत छलन्हि तऽ ओकर केँ अमीरी । हमर सालकीनी सेहो भाईक सयान छलीह । राधाबाबूक फकरीरी हुनका पसंद नहि छलैन्ह । आधमक जीवन सेहो हुनका पसन्द नहि छलैन्ह । पाछा कए साल आत एक ओहो सँ अलग रहल छलाह । आव किछु दिन तक राग रहक मोन भेलन्हि ।

समयक के एक भाईक संग हमर ई नृतकी मलिकाइन बरहसपुरा लागि

मेलीह। हम उस खोर घने झलहुं। राधाबाबूक परिवार के बाबि गेला सँ हमर खुशीक ठिकाना नहि छल। खुशी भैह छल कि आश्रम हमर हरदन सुखाएल-सुखाएल मन लगैत छल। कहक लेल आता हरियरी बहुत छलैक आग-दगीचाक की कहूँ परधन खासी हरियरी सँ की यदि मान उवास रहल। आबो मानक उदारी के नगावक वासी दुपकुराहत गूँह समहक आवश्यकता पड़ैत छैक। अरुत पड़ैत छैक किलकारी भरैत कच्चा सम के। नायक सिनेह, भोजीक हँसी-ठट्ठाक आनन्द, केहनो विपत्ति मे गोन खुशी करऽ बला गंगी साधीक आनन्द बाहि घर मे नहि छुई ओ तऽ मात्र काठ-बाँस के पिथड़ा कहल आ सकीप ओकरा घर किछहु मे कियो कहैत। ज ओकरा घर कहवौं करैत तऽ ओहन घरक लोग काज।

आतरम एकदम उदास छलै ओई ठाम कोनो आनन्द तऽ छल। हमरा थोड़े दिन मे मान अच्छ मऽ गेल। राधा बाबू के संगे छली एगार केना चलै ऐस सँ कहना दिन बटैत छली। आहरमक भीतर आरौ एकटा टट्टी छोट छिन घर छलै। अगौरा पर आगरी नामक छले आ कात मे एकटा भरपतक टाठ छलै। अंगनाक बीच मे एकटा बड़ पैप-गाछ छलै। सब मिला कऽ तीनटा छोट छोट कोठरी छलै। कहना एकटा छोट-छिन परिवारक दुआर करऽ बला घर छलै। बाक-बचाक संग हमरो गोन कनी मनी लगैत छल। मलिकाइन के सेवा पर खूब पतिश्र नई छलैन तेषो की करतौह कहना खुशी छली। ओ घर मे किछु चकनकी आश्रम देखिन। एकटा खिड़की लम्बा देखिन। ओल राखऽ ले एकटा घेन पीध घेनची खेनवा लेखैन। पाइव देखाना, महेबाक नीक इन्तजाम मऽ गेलै। अनेक दिन तऽ राधा बाबू कुआ-दर (क्याटर) मे रई छलाह, ई घरक इमेला आ आरुतक चिन्ता सँ कोन मतलब छलैन। आव मुदा मूल-मूल तकड़ीक चिन्ता लागि गेलैन।

आश्रम मे चाह पीनाई मना छलैक, परंच मलिकाइन नहि मानैत छलथिन्ह। सब दिन तऽ नहि, कहियो-कहियो बड़ पैप सँ चाह बनबैत छलथिन्ह। दूध आओर चीनी ओहि मे खूब दैत छलथिन्ह। पटना मे फूल बाबूक संग रहैत-काल मे चाह बनाथऽ हम जानि गेल छलहुं। ओही चाह मे दूध चीनी खूब दैत छलथिन्ह। महेन बाबूक आता ले चाह बनेत छलैक ओ हमरा कहियो पसंद नहि भेल। बेसी मोठ सेवा पर महेन बाबू चाह के ठोड़ सँ लगवैत देरी छोड़ि दैत छलथिन्ह। करैत छलथिन्ह -- की शरवत् बनौलहुं हैं। छी...। जैत छीए मैया, चाह पीब वाला अखल पिथड़ा केहन पछव करैत अछि। पानि के खूब इन्होर कऽ लीबऽ आ तकर बाबू केदली मे चाहक पत्ती दऽ कऽ कनी काल अहिना छोड़ि दिऔ। केर कप वा मिलास मे छानि ली ओहि मे छोटीची चम्मच सँ थोड़-दू चम्मच दूध आर ओठमे चीनी दिओक। मिलएबाक पश्चात् पुल्लरिक रंग सन चाह लागत। बड़का-बड़का दिमाग बला बाबू सब अही कैदाक चाह पसंद करैत छथि। एतऽ हमर मलिकाइन ले चाह बनबैत छथि ओ तऽ मैया सोलही अपना शर्वत इभू। जतक भीर-पाँस कऽ लहन टंडा हवा चले छैक की पीया पुता के सदी सदी मऽ आइईक तऽ चाह अवश्य बनबैत छलीह। हुनका जानोक बड़ शोष रहैत।

आश्रम के बाहर, बस्ती (बरहनपुरा) के दिश स्कूल छलैक। अपर प्राश्मरी स्कूल। राधा बाबूक बाप ई खोलबेने रहथिन्ह ओहिमे चारिटा मास्टर छलथिन्ह। पढ़ऽ बला घोचा-पुताक फमी नहि छलैक। लम-पाठक गोन बला कऽ करीब लसेर टा विद्यार्थी छलैक। खास अही भाषक बीन टा विद्यार्थी छलै होएतैक। स्कूलक मकान खमरेलक रहै, तीनटा कोठली रहैक। भीत भजगूड ओओर मोट। दूटा बिना बाहिक कुर्ची, एकटा स्टूल, एकटा छोटकी चौकी। सामने खूब पैप फूलकारी ओकरे चौको-

बीच स्कूल आकर गेहराबाला रास्ता। रोनाक लाल-बीयर झूठ ओतऽ एतेक अधिक फुल-एल छलैक की किछु नहि छलु। स्कूल आँच जहाँ पर छलैक, हमरा आँख सँ स्कूले टा नहि फुलपाड़ीयो देखलित छलीक। मालिक अपना बच्चा सब के नाम अही स्कूल में लीला देखलितन्ह, बेटीयो के। कन्था सब लीनिबे चारि अवैत छलैक। सीरा रँग की मुकाबल छोक भैया, हमरा सब विश जमाना पढ़ल-लिखल नहि होइत छैक। आव दरभंगा-मधुबनी सन राहर में मास्टरनी देखाई दैत अछि। देहाती में कतहु, कतहु कन्था समझक स्कूल देखवहक.....भर, भैया अहि सँ की होइत छैक, जहन कन्था सब लड़के जहाँ पढ़ल-लिखल होथ लगतैत तखने अहि देखक छद्दर दैतैक। एखन त बाबू भैया लड़की के अपना काजे भड़ि पढ़ा दैत छनिन्ह। पढ़ैत सुग्गा गाइक के अपने दिश खिचैत अछि। पढ़ल कन्था नीक धर छै अपना दिश आकर्षित करैत अछि। अहि सँ बादक कार्य हलुक भइ जाइत छैक। विवाह मेले की पढ़ल-लिखल खतम। बापो आँखि बन्द कइ शैव छथि आओर मसुरी। कतहु-कतहु पढ़ा नहि होइत होएलैक। खैर, रोधा कांयोसी चलाइ। हुनका नेत्रि में लड़की-छड़का हुनू बराबरे छलैन्ह। यथा पढ़ैत नहि तऽ की करै? एक दिन मलिकाइन सँ ओ कहलनिन्ह अहाँ पढ़ल-लिखल रहितहुँ तऽ हम अहि सँ हुनुना काज कऽकऽ देखवितहुँ, मलिकाइन अहि धर आँखि नचा तऽ बजलीह भैयो बाबू ई काज अहाँ के भोग हुअए। हमर अनपक्व ठीके छी.....लंगोटी लगाक आओर जटा बड़ा कऽ, बाज अएलहुँ अहाँक अहि चरखा सँ। अहाँ के तऽ मावग भऽ क जन्म लेबाक चाहैत छल। बड़ तामस होइए हमरा अहि विधाहा पर—

मालिक ईअए लगलाह। थोड़ेक कालक बाद बजलाह, बुझवैक की। जकरा खानदान में हाथीक कारोबार होइत छैक—

अहि पर मलिकनी हाथ चमकावऽ बजलीह रहऽ दीय, इनहु कऽ अहाँक बाँप-पितामह तऽ अहिना कही तऽ अहाँ के किहन जागत? के मना करैए? बेटी अहाँ के, स्कूल अहाँ के। जतेक मोन होए ततेक पढ़ा देखैक, भऽ मेले में? राधाबाबू-सुप नए मेला।

आव ओ हमरा सँ पढ़ऽअए कहए लगलाह। तदैह त पहिनी रहैथ सुवा हमर जोर देखए लगलाह। मलिकाइन ई नहि चाहैत रहैथ जे हम अक्षर गोँची भिनती-पहाड़ा रटी। एक बेर हुनकर मनदि भेंट करऽ अएलनिह तऽ ओ हमरा बऽ पुछलकनिह। हम ओतहि अइ ने बेसल तेसर पहर कनेक आराम करैत छलहुँ। मलिकाइन हमर प्रस्ता कएलाक पश्चात् कहलनिन्ह अहाँक भाई लाएव बजलचनमाक दिसाग खराब कऽ देखलीन्ह? बेबकूक पतलखरी तऽ बऽ बैसैत अछि। आओर सबसे पहाड़ा लीलि होत अछि। एहिपर मनदि कहलनिन्ह—हम भैया के मना कऽ देखैत। नोकर-चाकर जतेक नासमक तए ततेक नहिपौ रहत भौकी। हमर अजिया लसुरक कहब छलनिह जे छोट बात बला के एकी आखरक शान जैत छनिह तऽ हुनकर अपने तेज घटैत छनिह आओर जे कयो शूद्र के समूचा पोखी पढ़वैत छनिह हुनकर पिता सब खर्ग झोड़िक नरके में रहक हेतु लाचार भए जाइत छनिह।

मलिकाइन अहि बात के हुनिर्वाहारीक पहलु छुआ कऽ बजलीह—खैर ई तऽ ऊपर के चीज भेली असल तऽ सुवीबइ ई अहि जे मोकर-चाकर पढ़ि लिखि-कऽ अहाँक ईडी नावऽ नहि बैसत। आओर लखन एकरा पढ़ेला लिखेला ई फायदा?

अच्छा।—हम अपना मोने-मोन बजलहुँ तऽ ई बात छैक। तँ भुरिख अहाँ हमरा पतलखरी नहि कीनि दैत छी? देखलैथै—भइतमानि हम कोना नहि पढ़ैत छी.....

हमरा यह अवगति यह, जे मलिकाइन के नियत एडन खराब छनि
आओर ओ कहियो भोगन खराब नहि पैत छलीह । तऽ गैया ई चोला जेके
जहरो वस्ति जाइक जे तरेक अरुही आशुभीक विचार नहि करलेक छै ।

राधाबाबू कलेक से एतेक बुझेलखिनह समझेलखिनह टखन जा यऽ ओ
जहर पहिरक हेतु बेवार मेलीह । जे कपड़ा ओ पहिरथि ओ मैरी मुनक बसल
रहैक । छपुआ सारी, छोटक क्लाउज । क्लाउज बुझलियेक की मणि ?
अरे वैह आंगी । नव पैसन के चोलीए बुझु । लीतली छन हुनकर गेहूँ छुरति
पर हरियर छोटक व्यापक काल पूछ भौ भुरा जाल वाला सारी
हुनका अगर बड़ बढ़ियाँ लभेत छलन्हि । ओ धनीक बापक पेटी छलीह ।
मोट-मोट साड़ी हुनका कोना नीक लगलन्हि ? मेहरी खडरो जे ओ पहिरथि
से बूझ जे परक लोकक हेतु ओ एकटा सारी काज करैथ । राधाबाबू रहरल
जैव लीडर हुनकर आंगन बासी भेला कोना ने खादी पहिरतखिनह । बीचा-
पुताक हेतु ओ एक दिन लकड़ लगलीह । एकरा सम के हम कोनो हाकत मे
नहि मोटका कपड़ा पहिरथ देवै । जैव भऽ कऽ चाहे जे ओही पहिरए, एते
सँ किपक जोलहा समझक होका भरत ।

भरल समा में अंग्रेज सरकार के ललकारऽ जेला हमर राधाबाबूक अपना
परवासीक तनशाएल नुह देखकऽ कऽ खराब तरह में व्यवस्थि । बाबूक
बाहर के खूब चलती रहैथ, घर के एक्को पार्स ने गुरानला जाइथ । एतऽ
मलिकिनेक दहला होइत छलन्हि, मालिक हरदम नहले रहैत छलन्हि ।
हुनका अपना मे जे चरैत होइन्ह, हमरा पर तनशाएल नहि छलाह ।
मलिकाइन के तऽ हमरा किताब एकड़लि देखि अलझ करीन्ह । परञ्च ओ
हमरा धोतर बात के कहियो नहि दोकाथि । मालिक लखैर हरदम मौलारहैथ ।

दुरागमनक दिन नजदीक आवि गेल । राधाबाबू एतनात रूपया हस्त
नगर देलन्हि । लक्ष्मियाराम के एकटा बनिधौ सँ एकटा सारी जगती
आ ओर दूटा नरदानी पोती दीवा देलन्हि । इन खुशी भऽ गेलहुँ । खुशी
सँ हमर मुँह फुजले रहि गेल । आखिर मे मालिक-मलिकाइन के पैर छुविक
धिया-पुता के हुकार कऽक तीनदीन पुण विजलापर हम अपना घरक लेल चलहुँ ।

सनकटनी अइत-तहाँ छल पऽ गेल छलैक । परञ्च आधा फसिल कटि
छल छलैक । रँगी धान तब धान सँ पहिले बेवार होइत छैक ।

पाकल बीयर फसिल सम सँ समूचा बाघ एतऽ बुझाईक छल जेना खोनहुवा
गाँव सँ लेवल अइका मैदान होइक । आइक चोबीर पाँती सम धानक
दीरा सँ कोणल पड़ल छलैक । बीचा-बीच मे रखवार समझक खोपड़ी तब
दूरा पाल वाली नाकक सन लगैत छलैक । सम खेत पर अनपुना (अध-
पुना) मयानीक आगिरवाद (आशीर्वाद) पाकल फसिलक शकल मे परकल
छलैक । लोक समझक खुशीक नहि आर छल नहि छोर । समझक मुँह पर
गुस्की, समझक आँखि मे लफलाक मलक । जिनकर अपन फसल छलैन्ह
ओ सेहो खुशी छलाह, जिनकर नहि छलन्हि ओही खुशी छलाह । गिरहथ
(एहस्थ), वनिहार, जन-जनो, बरुजर-मिखमंगा समझक मुँह पर आशक
वेह छलैक । फसिल मेलैक अछि त मलरी सेहो भेटत, वनिहारी सेहो ।
मिखमंगा सम के भीख सेहो भेटलैक, ब्राह्मण देवता के दास सेहो भेटलैन्ह ।
आओर गिरहथ सम के की कहनाई ? मुँडन छुइन आओर सुन्नत सँ लऽ कऽ
आश आओर जहिला तक तब काज अही फसलक भरोसा सँ चलैत छैक ।
इधियो फसिल देखि कऽ महाजन के सेहो कर्जा देख मे जस्ताह होइत छैक ।
गुजरी मंदिर मे तब के मोन सँ बंदी बजबैत अछि आओर मोन सँ आरती

उतारैत छथि । फसिल बहिनौ देखऽ में आयल तऽ निहार-गुहार से रोहो
 बुझीसा होइत छैक । काली माई के छापर (बकरा) के जोड़ी, बरहम बाबा
 के पूत-अधुत, पितर सभ के गवाक भिड़, बाबा कुसेतरनाथ के घी-दूध ई सब
 अहाँ सभ रखने करव जखन की सेती बहिनौ होएत । समय-समय पर पानि
 नहि बरखए आओर बाढ़ि नहि आवए तखन तऽ ठीक नहि सेती भेल जोर
 आओर सेती भेल जोरह तऽ लोक सभ के माल भुकुटि आवएत, अँखि सभ
 बसि कए अनगढ़ दिशा बसि जाएत ।

अहि कमला मैयाक किरपा छलैन्ह, जहाँ देखू ओतहि लक्ष्मी
 महारानी धानक रंग-विरंगक शीश (बोलिबल) गम भरल छल । हाड
 बाजार मे अही छँ अनाजक भाव बहुत नीचा उतरि आएल छलैक । दू बोया
 मोन धान आओर तीन रुपैया मोन बाहर छलैक । मकई रुपैया आओर नहुआ
 छेप रुपैया मोन छलैक ।

हम पाँहने पक्का कए लेने छलहुँ कि भरि पूग धन कटनी करब । धान
 काटक बनिहारो सँ एतेक बल भए आएल की चारि महीनाक कटान चलैत।
 मगर भाय कातिक से बीमार पड़ि गेल, पैतीय सौंभ ओ किछु नहि खिने छल।
 बहुत कमजोर भए गेल छलैक । गाँवक बेवसी दुखार के आओर बढ़ा ऐहे
 छलछिन्ह । ओ तऽ खैर भेल कि संजोत सँ फूलबाधू जावि जेवाह आशँग
 छोटकी मलिकाइनक मेहरबानी भेल । एक ओतल अलवर टानी (एड्ड
 टानिक) ओ लभ संगवा देने छलाह, ओइ बहुत पक्क-पानिक सेहो इत्तना
 कए देने छलाह ।.....

रेवनी सँ हम पुछलियैक—तोरा एतयो नहि फुरेलोक कि मैया के एकनो
 (रकटा) दोसकाट लिखवाकऽ पठा दितै ।

माय बना कए देने छलै—ओ मायक ।

हमरा रेवनीक अकिल पर दया लागल । अहि मे भला अस्मा के पृथक्
 की बात छलैक ? चारि अच्छर केकरो सँ लिखबालैत आओर दीपन पर दोल-
 डोंगल रहैत छैक ओहि से छयाऽ सबैत पोसटकाट । ई तऽ ससुरारि मे अपन
 नेहरक नाम हँसाइत, हे भगवान् ।

परञ्च कयूर रेवनीक नहि रहै । पाछु बुझलियैक जे दोकरा किशो
 लिखबला नहि रहैक । छोटका मालिक सँ ओ लिखेबो करिने तऽ कोमा ।
 बल्लो बाबूक छोटका माय पढ़ाई होइकऽ घर बैगल छलाह तुनका सँ लिखबा
 सकैत छल परञ्च रेवनीक दिग्गत ओतऽ जेबाक नहि भेलैक । ओ लड़का
 किछु बदमास छल आओर ओकर समझक घर गाँव सँ कनिक दूठिकऽ
 रहैक, बाँसक लड़का-बड़का ओटक बढ़ गेल रहैक । लम्हर जाए मे रेवनीए
 तनि गायक कोनो चेटी-पुतहुँ बिराइत छल । बाँसक ओ छोटका जंगल
 लुचका समक लेल बागक बराबर छल । कतेको तरहक खिरसा ओहि फुरपूट
 वऽ घिपपूते सँ मुनैत अएलहुँ अछि । नीके भेल जे रेवनी छम्हर चिड़ी
 शिखावय ऐह नहि गेल ।

हाय पछनहुँ तक कमजोर छल, तैयो ओ धनकटनी मे इमर हाथ बँटाबए
 चाहैत छल । हम बुझेलियैक—मरिपजवे, चेटा-चेटी कि पूतहुँ किशो नाब
 नहि चएत्तोक । अपन भला तऽ दुनियाँक भला ! अइ कठौन सँ ओ मानलक
 पूछी भरि गायक दूध रोज ओ पीबय लागल ।

हम दूनु भाई बहिनी मोलिकऽ खेत मे जाकऽ धान काटी । रातक राखल
 चीज ओरे ऊन्हारे मे हाथ मुँह धोक खाइत छलहुँ । हम जाने तक हुका
 बीसन पीबैत छलहुँ ताबे रेवनी वर्तन धायन मौजिक मुल्हा बल्हा निपी लैत
 छल । केर जाँर मे हाँस खोपिकऽ हम दूनु गोटे खेत दिस बिदाह होइतहुँ ।
 दोसर दिन कोन खेतक फसिल कटतै से पछलके सौंभ तऽ गिरहय कहि जैत

छलछिन्ह। सरद-ओरत, जुवान-भूट तम हीक समय पर खेत पहुँच आइत छथि। एक कसार में पड़ कऽ बनिहार धान काठम शुरू कऽ रेत अछि। निचला खेत महक धान पाँच-पाँच छा-वऽ हाथ नाम होइत छैक। आओर खाली शीश छापि लेज जाइ छैक। हमरा दिश दिचला खेत कम छल। एतऽ तऽ भैया हम गछि सँ कटैत छी। काटैत समय खप-खप, छुप-छुप आवाज कान में नई मिठ लगैत रहै छै।

पहर जेह पहर तक हम गंग चीज बिपरि-बिपरि कऽ धाम कटैत रही। ईसी-बुशीक आवाज, गीतक आवाज आओर खेल खेल भूमि कऽ लार्ह-सुरही बलाक आवाज, लारंगी वलाक विक्षण.....केना दूधहरक बाद ऐसर पहर अघैत छैक पता नहि कहैत छल। माय खैक अघैत छल तऽ पत्नी परिक लेल हाँथ के आराम भेटैत छलैक। आरि पर नहि खेलहि में बैत कऽ हम खाई। धानक खेत में काटल फसलक खुशी गुलाबम होइत छैक। जहाँ समक झुलुक में गहून, जो, बवार, बालरा होइत छैक, ओकर खुशी कऽ रहैत छैक। ओहि पर एना सुतल की बैसल नहि जा सकैत छैक। बड़का बड़का मालिक अपने खेत में नहि अघैत छथि। बराहिल, तुमस्ता आ बी दोसरे नोकर-चाकर धन कटनीक देख-भाल करैछ। मकिला मालिक आ गिरस्त गम अपने अघैत छथि। छोटा-छोट रहस्य आओर मामूली सेवि-हर बड़ा चलाकी सँ बनिहार सँ फाल होइत छथि। खेत मजदूर के आपनई तऽ खेत होइत छैक जकर फसल ओ अपने कटैछ। हमरो चारि कट्टा खेत छल ताहि में धान छल। अपन फसल हम अपनेहि काटि लेतहुँ।

बनीस बोक धानक मजदूरी दू बोक धान होइछ। खास जन के मालिक सभ किछु बेसी कऽ दैत छथिन। ओहि वरख हम बीस वाइस दिन फसल कटैत रही। ओनि में छ नव धान गेल रहय। ओ तीन मासक मजदूर के

रुह बहुत छल। यदि माय दुखित नहि परैत तऽ दू तीन मन आओर धान होइत। अपना जमीन में छ मन धान गेल छल। दू तीन कट्टा खेत में रब्बीक फसल सेहो रहय, जो बूट खेसारी।

खरिहान मालिक के बड़कीटा रहैत साधारण गीरहलक खरिहान साधारण होइत छैक। ऐसर पहरक बाद धानक बोस खेत सँ खरिहान में आबऽ लगैछ।

पहर भरि तऽ खाली आनहि में लागि जाइछ। खरिहान कहियो खेतक लग रहैक तऽ कहियो दूर। फसलक बोक एक पर एक रखैत बाउ तऽ टाल बनि जाएत। टाल या खेप द्विध ताकव तऽ गरदिन दूटि जाएत। हमरा बस्ती में एहन गिरहल चारि टा छलाह जनिकर उपज हजार मन सँ बेसी होइत छलन्हि—बड़का मालिक, मकिला मालिक, छोटाका मालिक आओर चल्ती बाबू। मकिला मालिकक उपज डारै हजार मोनक, चल्ती बाबू जेह हजार मोनक। बाकी हजार मोन बला छलाह। ई भेल मिक धानक उपजक बात, रब्बी आओर गवईक उपज अहि सँ फराक छल। से-सेह जे सोन ओहो मऽ जाइत छलैक।

खरिहान में दाउबीक काल माघ-फागुन तक चलेत रहैत छलैक। फागुन में रब्बीक फसल तैयार होबज कसैत छलैक। गरिसो, तीसी, खेठाड़ी, बूटखेत में जो, गहून, मजुरी आदि।

हम अपने धान काछि-पीठ कऽ तैयार केलहुँ। बनिहार समक संग नहां खेत आओर कहां खरिहान, कहां वरख आओर कहां हर-फार ? मनियार क्काक श्रोतऽ सँ बड़की छलहि लाग उनहुँ आओर ओकरे डोंड पर सभ गम हम शाहि खेतज अहाँक दिय तऽ एना नहि होइत अछि ने ? खरिहान कें कृषा दैत छिएक, शीशकला धानक डोंट सभ कें ओहि पर जोर-जोर सँ एकटैत छीऐक ; शीश सँ मड़ि-मड़ि कें धानक दाना सभ नीचा खसैत

लोहत छेक। माइत छोट सग के कात कइ रहलें जाइ आओर दाया काजैत जाव। परंत ओहि प्रकार तें सो भोग भान नहि काइत जाइत छेक, ई तऽ इ चारि भोग भान बलाक दंग छेक।

मिला-जुला कइ देख तऽ छः महीनाक खर्चा घर मे छल। चारि परानी खाइपी वाला तऽ रहल होथल। तीन दस दिन तऽ रहि गेल छल गौना के।

माए जलदी बढ़ियाँ भइ गेल। लेव-मुँदि कऽ ओ घर के चिकन बना देलक। कात के सात हाथक चार चढ़वा लेलहुँ हम। ओकरो मुँह ओंगने दिश छलैक। अँगनक बाहर घरक सामने बुमि छलैक, ओकरा छीला-छाजि कऽ साफ कइ लेलहुँ।

ओर-हिंदूर आओर समूह क चीज सभ लऽकऽ जुग्री हमरा हासुर भेल आओर गौनाक लेव हुनका सग के तैयार कइ आएल। ई एक प्रकारक रसम-रिवाज छल।

हमरा माय के मरना पंच-नाल करल गेल होएथेन। तसुरक दिव सँ हिरागमन इशारा पढ़के शाल भेदि चुकल छल। मात सुदि पंचमीक दिन चिरित्त भेल। जुग्रीक माय ओकर दरवासी, भाउल आओर भाबहुक अवरजव बढ़ि गेले। किजो.....क हेतु देवन पीस वैसति, तऽ किजो भीषल-पीतल घरक टाट मे चोरा हाथीक गूखल खिचैत अछि। सेल मे सिन्दूर धोरि कऽ ओहि सँ कसेको जगह गढ़ि-ताछि चित्र खींचल गेल। आओर हम ई सब देखि कऽ ईली। धनवन्ती काकी (चुम्भीक माय) हमरा देखि कऽ ईँवैत कहलनि—तोरा किएक पकिज अएलौक बोथा। इरिभंगा पटना घूमल छै, हम सब तऽ जाइल जगह ठहरलहुँ। हम कि जाइत मेसिएक जे फूल पत्ती कोना बनौल जाइ छैक। अपना घर वासी के पटना लऽ जइहऽ, ओ ओहि

जेतह...धनवन्ती काकी जखन ईसथि तऽ घर आँगन हुनकर कइका सँ गुंज लउँ। ओहि काल हमर लाज शरम हुनका कइकाक नीचा बनि जाए। जुग्रीक घरवासी भुषकी मारय। जुग्री हमरा तँ चारिप मासक जेठ रहए। ओकर घरवासी बात-बात मे हमरा सगे शरामत करय। पछिला फगुना मे एक छोटा रंग नवे जंजी पर टारि बेलक आ बड़ी काल तक हीड़ी करैत खल परंत हमहीं की छोड़ि देलिऐन। ओरेक कालक बाद अवीर लऽ प्रयलहुँ खानीजी मलाला पीले खलीह जइसी सँ हुनका दवा देलहुँ आओर गातपर आधा चाब अवीर रगड़ि देलिऐन। ओहि काल तक माय माय करैत रहली। बुधि गेली जे बालकनद के मंग ब्रह्मासी करय मे की फल भेटै छै।

कोशी क किनार दिख छोकर नइहर रहैक। निडर्याम रंग क मूँह रई आँखि नाक बढ़ियाँ रहइ, चेहराक काट-छोट खूब बढ़ियाँ होइ तऽ कि जनाना खूबचूरल कहाओत, नहि कहएत। ओहि पर जऽ लनुस्वरी बढ़िया रहैत तऽ ओकर सुरति की कहय। कोरा मे ओकरा एकटा खड़ाई साल क बेटी रहैक। मजियार ककाक मनोरथ ई रहैत जे पीताक मुँह देखइत नरी। रोज बेचारै नहाकऽ पीर के अछि मे छोटा भरि अछिज्जल नहावथि। घरक ई तऽ अपना बशक नए तऽ छलैक नहि।

हिरागमन सँ दू दिन पछिने ममा आवि गेल। तैयारी खमटा भऽ चुकल रहैक। घर-आँगनक जिम्मेवारी माए पर रहैक। नगदीक इन्तजाम हम कए लेने रही। ई, एक खंड लारी आओर संगवाचऽ गइल।

हमरा मोन नहि अछि जे अकरा सँ कहियो विवाह भेल रहए ओकर शकल-सुरत केहम होएथेक।

बाढ़ि बला भार मे सेलेत कइल जेना क्यो थारि कऽ अछि भुनि होत अछि आओर ओकर काल देह के ओहिना छोड़ि देव अछि ओही तरहें हम

सपना चिन्ता के भार में खोई ही की जड़ व निम्न आदि लाय.....

माया, धुन्नी आ हम..... तोन गोटे में दुरागमन करऽ गेलहुं ।
 पैदले जाए पड़ल, ओहि दिन में रेल नहि रहैक । वहेरी सँ दू कोस आओर
 दक्षिण-पश्चिम, गाँव के नाम रहैक शीतलपट्टी । धस्ती कीनी पैर नहि
 रहैक, एकदम नामूली । चारि छः घर राजपूत, पश्चीम-सीस घर चार,
 पन्नास एक घर बुलहा । गाँव में कोस भरि पश्चिम जीबछु नदी क
 पटान रहैक, भदवारिक दिन में ओही बाटे कमलाक पानि सँ फलिल हुनि
 लाइ छैक । ओहि सँ खराबी नहि गिरहस्त के लामे छैक । राजपूत
 बित्तला दंगक कारखाना छैक बाँकी छोट-छोट सेतिहार । जमीनदारी
 शुभा ज्योदी राजपूत जमीनदार रहैक । बनिहार होइक या सेतिहार,
 साधारण गिरहस्त रहै चाहे कास्थकार—शीतलपट्टी अलाक जिनदमी ओतेक
 कठोर रहै रहैक जतेक कि हमरा गाँव बलाक । ओकर दोसर वजह ई छैक
 जे ओतऽ के जोलडा खेतीक अलावा आओर समय अपन तानी भरनी आ
 करपाक सहारा नुगारेत अछि । ओहिठोल में दल टा करधा चखेत छलैक ।
 दरमंगा, समस्तीपुर सँ सत लऽ कऽ चादर बैसोछा, साहमय, जूंगी, चारखना
 आदि तोपार कऽकऽ पास-पड़ोसक हाट सम पर में बेच छलैक अछि । बीसी
 जुवान बुलाहा दाका आर फलकत्ता रहिकऽ अपन गाँवक खुशहाल के वड़ा
 रहल छल । सत छुछू तऽ ओ बुलहा लम ओहि वस्तीक डोआ भदलि
 देने छलैक ।

ओतऽ हम एक दिन आओर एक राति भरि रहलहुं । हमर आतिथता
 सभ ओतऽ एक साधू के सोसि रखने छल । ओ अपर (दर्जा चारि) पास
 कऽकऽ बड़िने कॉमेलक गोलटिथर (सेवक) आओर बाघ में रसता
 ओगी ओनि गेल छल । आव हमर तीलक लगभग रहल होएतैक । बाघ

बलचनमा

महासभाक प्रचार सेहो करैत छल । शितलपट्टी में ओकर पीछी रहैत छलैक
 निपुनी ईबाक कारणे माइनजन के अपन धीह-बाबर सौंप भेल छलैक । वएह
 घर बाया जगादासक आसरम बनि गेलैक हिनकर नाम पहिने कारीराखत
 छलैन्ह । ओ हमरा जेनु गोटे के ओहि माँझकऽ भांग पिवा देलैन्ह । हमरा
 किछुओ नहि बुझल अछि कि ओहि राति लघुराजिक खीगण सभ हमरा सँ की
 की रिवाज करबलैक ।

भारे में मोनक लगन छलैक । महाका आओर चारि कहार बेह सभ
 डोक कऽ रखने छलहुं । खीगण सभ कान-काल मोहरि करऽ लागल । गोना-
 पासीक व मागू कटे फूटि गेल छलैक । भीयर हाडी आर लाल चोली पीठ
 दिव नूआ पर हाथक लाल-जाल धपा पड़ल छलैक । सरवा में महाबरक
 नाम पर आलक रंग अपन गढ़ लासीक शोभा दऽ रहल छलैक । बाँचर में
 पान-दूमि पानक पात आओर हाँस सुपारी आओर हरदि बाँहल छलैक ।
 हाथ मेंहोके चेन्ह देखाई पड़ैत छलैक ।

रिवाजक तौर पर थोड़ेक दूर तक महाका में हमरो रहऽ पड़ल । गौमक
 बाहर में उतरि गेलहुं । दूआदमीक ओक चारि गोटे केना दो सकैत ? आओर
 लाजक भार ओकर गर्दिनि सेहो टूटि जइतैक । धरे ईसैत छी । नय-नवेलीक
 शील-चफीच सँ तोरो तऽ पाला पड़ले होएतऽ, आ की नाइ पड़लऽ ? भूड नहि
 बाजु भैया !

कनियो के अपन आए नहि छलैक, पित्तबोव भाए सँग में गेल
 छलैक । दही, एकवान, केरा आओर समधिनक लेल साड़ी लहरी...एक
 आदमी सीक सभ पर ई सभ नेने छलैक, पटई क सहारा सँ । बीच में बूबेर

ओहार लछा क महाका में हुलकी, एक बेर नजरि मिलते सुन्दराए पड़ल
 आओर दोसर बेर नीन में मग्न छल बेचारी । पहिने-पहिने यह हम ओकर झलक

बलचनमा

पेलेहुं। अरे देखने तऽ रावियो कऽ ऐयैक परबच सार सभ की पिया ऐमे छलैक, बुधि-बुधि सभ बिसरि गेल छलहुं। एखन मगर होश मे छलहुं। आधा! बुचुआक माएक ओ गुंठ आई एक नहि बिसरि सकलहुं मैया! छोड़ो की बिसरक वस्तु छैक? जोल-गुंठ, कशमी ओंख, छोटयो नाक, पात सन कमर, कारीलेहर केश, पातर छोड़, कानक सन छड़ी, सुरेख गर्दन—बहु सुन्दर लागल ओ। पहिले दर्शन मे ओ अहि मोन मे पौंस गेल, सत कहइ दी मैया। सीध मे गिहुरक सगर रेखा, कपार पर चकमक खुदिया बामा सभ सँ सिंगर कएल छलैक। गर्दन मे सुन्दर हंसुली छलैक। बॉहि पर काङ्कन, कबजा मे ताइ नुड़ी। पैर मे गिलटक काड़ा। दहिना हाथक बागुर मे चैतरिक अँगुली—नाए नहि छलैक तँ की, आप तँपार मे कीनो कवरि नहि रखलकैक। मामूली खेती करऽ आला छल बेकारा। हमही कीन नवानक नाती छलहुं? सत पूछू तऽ हमरा सँ हमर ससुरक हालत कैऽ गुना बढियाँ छलैक।

आबक दिन अहिना छोट होइत छैक। हम पहिनाइ सँ थाकल-देहिल छलहुं, ओहि दिन तँ आओर चुर-चुर भऽ गेल छलहुं। कहार तऽ मागू बोक्ते चलैत छैक।

नव-नवेली बहु-बेटी अगर बाबकी मे रहलौक तऽ पैर तऽ ओकरा सभ के पैर मे पौंछि लागि जाइत छैक। हम आओर चुन्नी कहार सभ के मना कए दियैक—एतैक तेज नहि चल मामा होरा सभहक रांग कखन तक दीइ सकताह?

एही पर अकेर बचक एक टा कहिया तमसय कऽ आजल—हम तऽ पहिनाइ सँ इ जेनेत रही तँ चौड़ी भत्तिचड़ा बचलहुं है.....हैं।...बाब काष्ठक चालि चलू हम सभ? मामा डपटि कऽ कहलखिन—बदमाश कहीं

के। छोड़ जातिबलाक अकिलो छोटे होइत छैक। चल, अनेक तेजी सँ चलबाक छव,.....छोड़ि बहक बालचन्द, दोइसु ससुरे।

कहार—मे ते जे सभसँ कम उमरि के रहै ओ काकी मल आदमी आओर खुश भिजाम रहए। कनेक बखत सँ बाजल गारि देब अहाँ?

बॉकी कहार हमरा दिश धुरि-धुरि कऽ ओकरा तामक पर आओर शान चढ़ा देलके।

मामाक चेहरा पर पैर सँ लऽकऽ माथ तक बुढ़ीती आबि गेल रहैन्ह। केश बढियाँ जकाँ लज्जर भए गेल रहैन्ह। एखन ओ तरहथी पर तामकुश मलैत छलाह। स्वार सभ केँ एक तऽ कोष अबैत नहि छै जँ आवि जाइत छैक त प्रसन्न भऽ जाइत छैक मैया! से, मामा भमकि उठलाह; बागू बढति बजलाह—तऽ की कऽ लेबेस हमर?

दहिने तऽ कहार सभ ओहि जवान के रोकि देलकै। चुन्नी एमहर मामा केँ बुकैलक। बीच-बचा करैत हम बजलहुं—अहि मे तमशाएक कीन बाब छलैक? कहना हम चलब तैयो ताँक तक धर चलिए जाएब.....।

एतैक कहि कहार सभ दिश दन नगर धुमेलहुं। मामा दिश देखिकऽ हम बजलहुं ई चेचारे कहाँ तेज चलैत छथि? अपन—अगत चालि जँ ई चलि कऽ देखावथि तऽ अलहा—उदलक घोड़ा तेहो हिनकर सभहक गुकागला नहि करतन्हि!

दूगू दिशक कोष ठंडा भऽ गेल। हम माएक बड़ मे मामा सँ काते लऽ तक बुमा देलियैक ओहि नव-जवान कहार के। तू सभ अपन चालि चलि छकैत छइ परबत धेड़-धेड़, दू-दू कीसपर हमरा सँ भेट कऽ खेल करबइ, बर?

अहि पर ओ खुशी भऽ कऽ कहलक—ई मालिक, कनहा पर भारी बोझ रहए तऽ फुरतीपर फुरती चाही। ओहन हालतमे कनीको सुस्ती कोड़-करेज

के खसोरि-खसोरि कस खा जाइत छैक ।

हेइत बाल कहलक ओ ? छलै मे ताल सफाक बात ? आधा रस्ता पर करएक पश्चात् हम घड़ी भरिक खेल खाएक हेतु बकलहु । सड़क के आसहि मे दशर रहेक । कलमी आमक बड़का धगीचा । पीपर के भारी गाछ । बेबीक मंडील । स्कूलक खपरेल मकान । इंजनक लोटी हुनाई पड़ल ।

हम तीनों गोटे चूरा भिजवइय छलहुँ की फेर लीटी गुनाई पड़ल । अहि बेर मामा पास सँ हाथ उठाक पुछलन्हि कीम टीशन छैक बालचन ?

सकरी—हम कहलिअन्हि । चुन्नी सेहो अपन मुँह खोललक—जहाँ बेतल छऽ ममा ओ कीम गाँव छैक, से जनेछहक ? अपन बतायक हेतु ममा मुँह बाहि सेकन्हि । चुन्नी छडि कऽ दही परसलक । मेठरी मे नून तबैत बाजल—ई दहोरा छैक ममा, कतेकी बेर एमहर हम आउल छी; हम बड़का मालिकक कुट-मेती मे एही गाँव आएल रही । आओर पगौड़ीओ मे । एतक सरसुथी (परसुथी) लोक आओर मेहराक कउचरी लोक मुलुक भवि से नामी छथि ।

हम पहिला कर घोटैत कहलियक—हमहुँ एमहर सँ मोलहुँ है चुन्नी । माम । तू कखन एमहर अएलौह ? ओ डपटलक तऽ हम कहलियक—बाबा कुस्सेपरनाथक दरसन करऽ जे जाइत अछि ओ किमहर सँ जाइत अछि ? आव चुन्नी के मानऽ गइलौक—हँ, एमहरे सँ कुस्सेपरनाथक राखा गेलौक अछि ।

हम चाव गोटे चुड़ा-बही अएलहुँ । कहार सभ खूआएले चुड़ा कैकलक । हम मामाक अधीन छलहुँ, आओर ओ एकरा खेल कखनो तैयार नहि मेललहि कि थोड़े दही कहारो राव के बेल वाइक ।

तयार के सेहो ओतहि लुआएल गेलैक । हम तयारि सचा कऽ ओ थोड़ेक समयक आरखे पालकी सँ निकलल सेहो । एमहर हम हुकका गुड़-गुड़ावति रहलहुँ । मामा हुनका जंग लऽ लेबे छलाह । खैनी हुनका एतेक पसंद नहि

छलीन्ह जतेक हुकका पसंद छलीन्ह । कहैत छलखिन्ह—आमन सभ मे संसति सँ समाकुल खएवाक लति पड़ल; आर-सरिकऽ हुँह गनहायैत छैक ।

दहचरा सँ डोली उठल त एकदम पंडोक चलि गेल । कोनो, केहे कोस तऽ पहुँच छलैक । मामा सेहो टनमना गेल छलाह । राजक सक्लक नगीच सड़कक काते-काते बड़का-बड़का गाछ छलैक, मामा ओतहि लुट सँ बैस रोलाह, तऽ हमरो बैसऽ पवल, नहिअ हम कनी आनू बढि कऽ हाटक गाछी मे बैसकऽ दुस्तेवला छलहुँ ।

चुन्नी गेल, मामाक वास्ते ओतहि पानि लऽआएल । अहि बेर तमऽकुलक लंबर छलैक । तरहसी पर तम्बाकू चुन ठोकल गेल । थोड़ेक समय मे दुती तैयार भेल । चुन्नी आओर मामा ओकरा अपना-अपना ठोढ़क तर मे दबएलन्हि आओर चलि गइल । हम बीबीक भक ठहरलहुँ, एकटा दूकिकऽ आधा हुकका दोसरक सेहो खतमकऽ चुकलहुँ, तखन छडि कऽ बिदा भेलहुँ । रास्ता मे एक-दु-बेर ओहि जवान के तेहो हम बीबी हेने छलियक, हिलकुल स्थाय सेहो कीम कागक भैया ? सस्ता-भईग आओर खुलल तंगी तऽ जिनगी भडि चलैतक । जीनाई छैक संपात धन्या, जीनाई छैक संधान । गुनने छी से कहियो ?

एक ठाम सड़क विचित्र तरह सँ खराप छलैक । ओतऽ सवारी केँ डोली सँ उतरि जाए पड़लैक । डिस्टिक्ट बोर्डक पुल की जानि कहिया सँ टूटल पड़ल छलैक । ओहि सातक भदवारि मे ओहिठाम सड़क पर कईएक खाधि डनि गेल छलैक मगर अखन तक मरम्मत नहि भेल छलैक । ओतऽ अधिसे हम के तयारी छोड़त गइत छैक । हम भोन ने विचारि लेलहुँ कि राधा माव सँ कहबन्हि बोर्डक चेयरमैन हुनकर सीत छन्हि.....

राम-राम कऽक आनू बढलहुँ । रइमाक लग एकडाम आमक-मरगर

एहन चुगन्ध आवल की मिजाज भस्त भऽ गेल। नाथ बीस दिन
बीत चुकल छलैक। आम के मथरक रामय आवि गेल छलैक। कहैत
छैक, आमक कोर चुनि-चुनि कऽ कोइसी अपन ताम के तेज बनबैत अछि।
गन्हक ओ भौक लगला से तामा तऽ अपन लाठी टैकिक ठाढ़ भए गेलाह।
चुन्नी बाजल पार गाछ। मागू खिलवाक बोराएल अछि, एहन मस्त
चुगन्ध तऽ पार कतहु नहि भेटल छल बाई तक।

लगभग आड़ि पर एक आवसी ठाढ़ छल। एक हाथ मे दू टा कुसिपार
दोसर मे, टटके छोडल मटरक गामक गूड़ी। ओ गुन-गुनाइत छल :

हलि हे मजरल आमक बाग।

कुहू-कुहू निकरए कोइलिदा,

झींगुर गावए फाग।

कन्दा हजर परदेश बगइ छथि,

बिसरि राग बनुराग।

बिधि मेल बाग, सील मेल बैरी,

फूटि गेला ई माग।

हलि हे मजरल आमक बाग-----

हन सभ गीत सुनि लेबए चाहैत छलहुँ। मगर चुन्नी से नहि रहल
गेलेक, ओ बीचमे मे टोकि देलकैक—खूब मज्जर छैक, कोन आम अछि
बाहू। करपुरियाक दू गाछ छैक, ओ अहिबेर बोराएल छैक—उत्तर
भेटलैक।

तखने तऽ—हम आओर चुन्नी संगहि बाजि छलहुँ। मामा कभे जोर
से कहलखिनह—करपुरिया आम खाए मे अहिना गनबैत छैक। बाबू, कैंकर
कलम छैक।

शकल—सुरत तऽ भलि, परबच कपारक लाल-डोप आओर छाती परक
साफ डोरा कहैत छलैक कि ओ बराहमन अछि। ई सभ सीनी-लाम सब
के चिन्ना-चिन्नाक बजैत छथि। ओ कहलक—बाबू छथमनि ठाकुरक।

मामा बोहरा देलखिनह—अतरमइ ठाकुर। बड़ अकवाली आदमी
होएताह।

हँ—ओ बाजल—अबने तऽ ठाकुर परतापी छलाहे मुदा भेटा बुनू अबूरवान
निकललैनह--

हन कहलियैनह—छेरवा कह मामा, डोली बहुत आगू निकलि गेल।
पाकऽ लगतैक तऽ अहि आमक औंठी तऽ लावब, चल्।

औंठी किएक, दू चाड़िगोट आमे भेट जाएल—बराहमन देखता बजलाह
—जसर अचिहऽ, असह मे...तु तम कोन आबस छह?

जदबखी—चलैत चलैत चुन्नीक मुँह सँ निकललैक। कोनहर माए
आओर रेवनी आओर टोल-पड़ोसक मर्द-मेहरास सब हमर बाट तकैत छल।
शालि-भात, तरकाड़ी, बड़ी, अचार, मेथी आओर औंठाक चटनी "सभ
किछु तैयार छलैक। दुलहिनक लेल खीर कमल छलैक।

डोली पर दुलाभी रंग साड़ी लपटल छलैक। छौंहा सभ घुरे से देखि
लेलकैक। गॉम सँ बाहर पीछरिक मीड़ पर रेवनी आओर चुन्नीक आउज
रंग सेहो ठाढ़ भेल छलैक।

हमरा लाज लागल। मामा सँ बजलहुँ—औंठा चल् मामा, हम दिख-
भराकत सँ निबडिकऽ एखने अएलहुँ--

चुन्नी मुन्कराकऽ नथरि मारलक। खग जानए खगक भाखा। हम
कोकरा इशारा सँ डौटि देलएक, लजाएल के आओर लजाक की कइदा।
मगर एहनो लोक होइत छथि जिनका भिन्न पर दानि छौंटा मे बड़ मोन

लगेत छन्हि । मामा बाबू बइलाह त चुन्नी के कान मे हम कहलियेक—बड़
लाज लगेत छल्लि चार, किएक तू हमरा पाछू हाथ धोका पड़ल छै ?

एहन मोका पर हम के इएह हाल होइत छैक । चुन्नी हँसिक कहलक—
हिम आओर अपन इहिना हाथ त हमरा बाबाँ गाल पर एक चमेदा खाया
देलक.....ओही गलिक चलि गेल । नगर एहि, रिहाजक मुताबिक
हुलाहा आओर हुलहिन दूनु के एकहि डोली पर चढ़ि कऽ आँगन मे उपस्थित
होएवाक चाही ।

मालिक हबेली सँ बचिइन कलस छलैक, ओहि सँ बचिइन रास्ता ।
पल्लिमक बिस हमर घर छल । कलसक लग हमरा डोली पर चढ़ि कऽ जाइ
परल, ओ धुँपट चहोने छल । ओकर हबेली पर अपन आँगूर सँ गोदि कऽ
हम खिसिआवक कोशिश कयलहुँ परंच ओ तऽ बजेको नहि समझायल,
कटुआ गेल छल ।

सब ठाँवरक अमानी गीत गावए लागल । मोट आओर मेही, शंख सन
भौपुक आवाज सब मिलि कऽ कथीय रंग अनेत रहए ।

अंगनक मूँह पर धालकी राखल गेलैक । सेलवाती जरा कऽ काष्ठक
खदिर से राखि कऽ दीप बना लेने रहए । परिछन केँ ओ कीक हमरा एहन
तक मोन अछि । हमरा दूनुक नाथ पर धान छोट कऽ चुँह, बाँहि, छाती
देहुन तँ दही छुआ के लुमाओन कऽल गेल, बस !

धेरी तक जनी जाइत जागल रहए । हमरो छुटी भेट गेल रहए ।
किछु खाइ कऽ हमहुँ सब सुति रहल रही, नाश मरिहक धेरी तक जागल
रहल । कहरक खेल अपन चुन्नी अपन बधान धरि देलकैक । ओ ओरहि
अपन आसन जमेक । ऊपर चार तऽ रहबे करैक । पाइन दूनु नबका
भरैया मे ठहराएल गेला । टिमिया, हुका आओर पीवाक तम्बाकुक इन्हजाम

रहबे करै । आव-भगतक भार चुन्नीक छोटका भाए पड़ रहै ! गारजियनक
काज नमियार कका करैत छलाह । एहन लगेत छल जेना की सौँसे बिरादरी
हमरे काज मे जुटल अछि । जुवान भाई मेहमान के मोन बहटऽबैत छलाह—
हार, तू झुलहाक वेढा छह ! ओहर नाभी हमरा पकौसक रहल...सुगहइ हमर
पड़ोसी रहए.....

मेहमान तऽ बचके मऽ गेला, सँगे जे आदमी आयल रहैन्ह ओ बजलाह
तँ तऽ आहाँ पमहक देखी सँ डोकाक गन्ध अवैत अछि...

हुनकर समहक ई चलिने रहैन्ह आओर इनहर हम खचुरक गठिया पर
सुति रहलहुँ ।

जनेछी, कतेक राति बितला पर रेवनी हमरा ककमोरि कए हमर निन्न
हारि देलक । शराबी जकाँ चुई कऽ हम ओकर कब्जा पकड़ि कए कहलियेक
—की छी ? भीतर चल मोया । ओहि पकड़ि कऽ रेवनी उठबैत बाजल—
जहदी चलो, पट्ट नाथ बजबैत अछि ।

नीनन कोकि आएल तऽ हम फेर सुति रहलहुँ । रेवनी हारि कऽ थूरि
चलि गेल । ओइक फाल बाद माए आएल आओर पीठ पर हुलार सँ एक
धापक धीरे सँ मारलक आओर बाजल उठ वाली, छठ, भीतर चल ।

चिडुआ काटि कऽ, कान मे काठी भोकि कऽ नाथ हमरा उठाइबे देलक
आकाश मे चन्द्रमा नहि छलनिन्ह । आई पंचमी छैक की नहि ? पंचि घड़ी
इजोरीया रहलैक ।

कतेक राति बिहल होएकैक । माय सँ पुछलियेक आओर हाकी केलहुँ ।
माय हमरा आगू धकेलैत बाजल—दुपहर राति बीति गेलैक वेढा । हमरा
मल्लिकार्क राति सँ निन्न नहि आएल, पलक पर पसेरी पड़ल अछि तहिना
भुकाए ; चल सुति रह । हमहुँ सुति रहब.....

पर में खिल देलक माए । पोआरक सेव पर बोरी ओछाओल रहैक ।
कनिषाँ एक दिन दबकल रह्य आओर सुतक बहना केने छल । पाठक के
धकेल कऽ छन्द सँ घर के छन्द कऽ देखिएक ।

बीर आगा मे जयैत छलैक, बसी काशी तेज छलैक । किरासनक ममक
सँ दिनाग भारी भऽ गेल । रानीजी सँ एतयो नहि भेलइन्ह जो बसी कम कऽ
धितऽयिन्ह !

फेर बेचारी पर दया लागि गेल—कता कऽ लेल गेल चिड़ये तऽ अछि ।
दोसरक घर मे की छुवाए, की नहि छुवाए । केकरा सँ की कहैक किनहर कि
देखैक ! महीना दू महीना तऽ बेचारी केँ अपन अधाम पहचानइ मे लागि
जयैतैक ।

बपने होय आला सँ उतारि लेलहुँ आओर ओकर सुँह खोलइल । बसी
पर आँगुर देते छुप ! मिता गेलइक माली, पत्त तेरी !

जे सुतक नाटक रचने छल ओकरा सँ नहि रहल गेलइक । खिल-खिला
कऽ 'सऽ लागल'.....

दिवरी छोरि कऽ हम ओछाउनक दिश गेलहुँ, ठिकिया कऽ ओकरा बोहि
मे कति लेलहुँ तऽ हमर सुँह ओकरा कनपड़ी पर पड़ल । हड़बड़ी मे दुसपुसा
कऽ हम बजलहुँ—उपाय तऽ नूँ ह बहिन सँ निकाललएँ मुदा एतेक ओर सँ
हँसब डीक नहि छलइक, माए आओर रेवनी की कहैत हरएक अपना मोन मे ।

हमरा अन्हार मे अनुभव भेल कि बेचारी लजा कऽ काठ भऽ गेल अछि ।
जुम्मा लइत हम कहलैक—छेर, कोनो बात नहि । कनी दियासलाई
कहाँ छैक लजा ?

ओ उठल । सिरहाना सँ माचीस निकालि कऽ जुवचाप जरोशक,
दिवरीक बाती सँ सीली केँ खुश कऽ फेर ओकरा मिता कऽ दोसर ठाम केँक

देलकैक । रीशनी केँ कम कऽ दिवरी केँ आला पर रखइत छलइक तखन
देखलैक, सुँह भारी भऽ गेल छलइक । माँटि सँ रगड़ि कऽ जखन अपन
बाँगुर इन साक कऽ लेलहुँ तखन उठि कऽ ओकरा अपना लग बेलेलहुँ ।

फिकिर कथीक ।—हम बजलहुँ—अपना घर मे यैत दू परानी तऽ छइल,
माकी हम डी आओर आव तू अएली है । लोहर खिलखिलाइत सुनि कऽ नाए
बजा खुश भेल होएतैक, आई ओकरा मोन सँ चिलाक सिद्ध उठरि गेल
होएतैक । देखिहै, दुहिना केँ आई सँ बहिन सँ नहि अएतैक । रहल रेवनी
से ओ बड़ गुप्ता छैक । ओ लोहर अहि दीठपनक कसहुँ बिकिर नहि
करतैक ।

आब ओकरा गुँठक साविकक दूरखी वापस भए गेल छलैक । बात-बातक
परक छैक भैया, एक बात आदमी केँ कता घेत छैक आओर दोसर बात
ओकरा हँस घेत छैक । लोलक-कवइक ब्रैस, मेहराक जाति आओर
गुरुराक पहिना राति—लान आओर डर केँ भला की पूछनाई !

हम कहलैक—बरक नाम तऽ बता । फेर लजा गेल । लोवारा
पूछलैक तऽ नहि सँ दाजल—सुगनी ।

सूना तऽ नूँ छैह—दुही उठा कऽ ओकर भुँड केँ अपना दिश कएकऽ हम
बजलहुँ—बड़ सुन्दर नाम छीक । हमहुँ अही नाम सँ तोरा कहबौक ।

इनकारक तोर पर ओ माथा हिलैलक ।

किएक ?—हम पुछलैक ।

कपडा केँ एक खूँट केँ अँगूठा मे कपटैत दाजल—ई हमर नइहर नहि
बलि, एतऽ ओहि नाम सँ बजाएब तऽ तब हमरा खँ उठारत ।

तऽ असगर मे सुगनी कहिकऽ बजएबौक, दीउ ने मंजूर ?

अहि देर ओ सुकुराइत डीढ़ आओर नचबैत नजरि सँ मंजूरक कएलक ।

अहि बीच ऊपर हाथी लगे हुए हैं। हम कहलिये—सुति रहल
आखोर, है.....ई रहलहु तीहर मुँह.....बजावन.....

पाँच सप्ताह जेब मैं निकालि कए ओकरा हाथ पर हम धए देखलिये।
जे रिवाज नेहर में नहि पूरा भेलैक, ओ—आखिर ऐहए पूरा भेलैक।
ओहिराति बाबा जोयदास भांग पिआ कए मति राति हमर हरिलेने छलाह।
अहि लेल ई स्वया माए हमरा बेरे छल।

बाब सुगनी के रजाई देने छलक, हम बेइ आँहि कए सुति रहलहु।
बेचारी के अलदीयो लगैत छलैक आखोर बात-बात में कजा जाइत छल से
कात। हम ओकरा सुति रहए देखलियेक। हमर सास्ती जीवनक ई पहिल
मौका छल। ओ हमरा बहुत खजकोटरि आखोर शान्त सुभाए पड़ल। बिना
माए के पाँच-पात साल बेचारी नहि जानी कोना कटम छल।

७

७

हिरागननक बाब हम निश्चय कएलहु कि गाँव नहि छोड़ आखोर दूर-
अक्षम जाऽ व नोकरीओ नहि करव। अहाँ कहव, नव कनियारेंक तोह लगैत
अछि। हँ, गैया, से तऽ चलैक। मूठ किए फटू जनानी हमरा बड़ सुनमन्ती
भेटल।

जहिवा सँ ओ जाएल, केनह समय बीतऽ लागल, किछु पते नहि चलथ।
अगिला बैसाख में हम रैवनी केँ बिआ कऽ देखलियेक, माय के दुःख जरूर भेलैक
मगर रास्ती तऽ दोहर नहि छलैक। आदमी हमरा बहीन के सेहो बड़ियाँ
भेटल छलैक। ओ पटना में एक होटल में काज करैत छलैक। पुरान
आखोर बड़ियाँ नोकरी छलैक। खाऽ पीव कऽ पाँच रुप नहीना बेतीए होइक,
रेवनी बहुत कानल छल, माय रोहो। बन्नी काकी दूभेलथिन—कछने देटी माऽ
कऽ जलमलह तखने आवे अकका कर्मक सँगक नतीव जोरैलह। कौदिन
देहर रहलऽ।

सुगनी माए के एहेक आराम पहुँचावलथलैक जे पूछी नहि। घरक
काज कोनो टा ओ दुद्धिया केनहि करऽ देत छलैक। दुपहर में खाए के
परचात आखोर रातिक सुतए काल सुगनी मजली में देल लऽकऽ माए के घेर
लग बैस जाइ छल, आखोर जातऽ लगैत छलैक। इनार, पर जा कऽ नहा
रैत छलैक। घालइ-गोबर छेत में देखाक रहितै तऽ अपने दऽअथितै। माए

के बाज लड़के मलिकाइनक आदिठाम जाय गिरहरीक झोंट-झोंट काजकड सेव । दुकान सँ लोहा लऽ आबव, खेत सँ लागऽ छिन्नी खोरि आबव, हमरा नजदूरी करैत काल जाएक पहुँचैय ।

ओही सुगनी के बड़ दुलार करणऽ लगलैक । माई—रूपैया अपने नहि राखए । मलिकाइनक ओहिठाम कामी बढ़ियो थरतु हाथ लागइ तऽ असगरे नहि खाए । कनियों समय घर खाए, समय घर छुटए । माय के एकर बड़ ध्यान रहैत छलैक ।

अपने खेत मे हम सब काज करऽ जाई छलहुँ । नहिसे किछु दिन तक माय सुगनी के खेत मे नहि जाए रहैत छलैक । परधन थालू ओ नामि भैल । करीब के ओहिठाम भइया नलरा-बाजी चुँसट पर प्रथा नहि चलइत छलैक । पुतोह होअए या घेटी, खेत मे काज करऽ जाइए पड़ैत; भाल चरावय पड़ै । दिगार पठार मे चरवाद करऽक श्रेष्ठ समय मरीच घरक लूनी के कहीं भेटतइक भइया । पइय जातिवला चाहे केहनो मरीच होइ, सुदा हुनका घरक सबी रोजी-धंधाक काज मे पुरुषक हाथ नहि बढा सकइत छलै । हुनका ओहिठामक स्त्रीगणक बेकाज बइसल रहैत छलैक । जतेक पइय खानदान होएतइक, सतेक बेनी बेकाज पएइइक । हमर स्त्रीगण सग मेहनत गजदूरीक दामा खाइत अछि । की हम कूँसि कहैत छी भइया ?

रेबनी साजुर रहए लागल तऽ अपन तीनू लकरी बेच लेलक, दल खपइया भेटलैक । चरवाह नहि अछि तऽ आम भाल-मवेशीक खातीर नाक पर रहैत अछि । बकरी सब साली आओर परेशान कए दैत छैक । माझिला मालिकक भारि सुभऽ पड़ल छल एक बेर । आम को रेबनी रहए वे ओकरा घर नजरि रखैत ? दू बहरी रहए, से भूइयाँ महाराज के बलि-घरलन्हि । मानल रहैन्ह ।

ओहि साल रबीक फसिल खूब बढियौ भेल । आमो खूब बढियाँ

फइल छल । बत्ती बाडू कतेको बगीचाक मालिक छलाह । हुनकर एकटा छोट गाड़ीक रखवारीक काज हमरा भेट गेल । चिनकऽ माय अंगरैत छल । पंचनीय हीन टा गाछ रहैक, ओहि मे आमात गाछ दूइबे-तीनटा रहैक बाँकी सग गाछ क आम बड़ मिठ, रसदार, पुश्तगर खूब । हँ खूब खेजहुँ, बैचयो खूब कएलहुँ । तेसर हिस्सा भेटैत छल । पाँच हजार सँ कम आम हमरा हिस्सा मे नहि पड़ल होएत, सभसय एक माय रातिकए गाछि मे सुतलहुँ, लग-पास गाछि मे गाछी रहए जाहि मे हमरे जहाँ पंचनीयो रखवार राति-दिन ओंगरैत खरी । सदानीयक मोन कहियो कहियो छवि जाइत छलैक परख छल तऽ आखीरकमात्र जगानी, दिन भरि काज करैत आओर रातिकए खूब तानिकए सुति रहए । एकराति हम रामखेलावन के अपना बचलौ गाछी मे राखि देलैक, आओर अपने घर आवि कए सुतलहुँ ।

इन हुन परानी नीलि अपना खेत मे तरुआ अढ़ाइ तीन मोन अन्दाज उपजएलहुँ ।

धानरोपक समय आवि गेल रहै । हम दू जनक काज करऽ लगलहुँ । मतलब जतेक दू तीन जन करितैक ओतेक हथ असगरे करैत छलहुँ । आठ छेर धान बोनि भेटैत छल एक ओटेक भोजन सेहो घर पर अवैत छल । चाळीस दिन मे अरयो आधमीक काज कएलहुँ । माए रना करैत रहै दुम्भीत परबैह । किएक एतेक सयैत छै वेदा ?

जवाब मे हम कनेक हँपिदैत छलहुँ आओर बीड़ी धूकैत अंगना सँ बहरा जइतहुँ ।

भादव, आश्विन, कातिक आओर भाषा अवहन साढ़े तीन मास पहिने ओतऽ कोनो कार्य नहि छलैक । अइ दिन मे किओ पूब भर चलि बबैछ, गिलीपुडी, दिनाजपूर, तथा ढाका दिय । किओ कलकत्ता दिस चलि जाइत

तब किसी घरे पर अचानक अछि पहन लोक मोथीक पटिया हुनैछ, गान-गाये की गूँजकहोरी बँटैत अछि आबै तऽ माँछ भारप बला टापी, गँज बजैरै हँहार करैछ ।

लेकिन हम कतहु नहि जाइत छलहुँ बीरी पीवेत छलहुँ तथा बाघ गोटी खेलाइत छलहुँ । ईमानशार तथा मजबूत काटी छलहुँ, एहि सँ माय पाछु पाँच-सात जनक जोनि हमरा भेट जाइत छल । हमरा तऽ इ सोरझा छलैक जे वक्ताचनमा खूब मन सँ काज करैत अछि । एक जनक तथा जन अछि ओ । कतेक लोक बलहन दीत—गथा अछि, अफिलक खुति नहि छैक । ओहि जन्म तेलीक बरत छल होएत । अछि भाइ, हम बरत रही, गथा रही । परंतु होशमनक बेइमान तऽ नहि मे छी, काम ओर तऽ नहिने छी, कोही तऽ नहि मे छी……अबल बात ई छै मँयाजे काज करैत काल हम सेइनी काज कऽ राखि दैत छलियेक । जाइ सरहै अपन कार्य करैत छलहुँ तहिना दोसरक ।

दोसर दिस सँ जे खराब अन्न तेलीजाइत छल तऽ हम फेर दैत छलियेक । गारि तऽ हमरा सँ एकबने नहि रहल जाइत । सुक-सुक जो इज्जरी हमरा हेइ जहर माहुर अछि ।

परंतु कहबो-कहिबो भुक्तहु परैत । आब ओ जमाना नहि जे खाशी ईमानशारी सँ काज निकलि जाइत । चालाक अर चाँद सगक चालवायो तँ बंचक हेइ चलाक रहब जरूरी भऽ जाइ छैक भैया ।

भात, रोटी आ' एक मुट्ठी बबोस काँकि कऽ कोनो तरहँ दुधर करैक छलइ । माइयो खुशी छल, सुगनी सेहो खुसिय छलै आ' हम तऽ खुशी छलौहँ एहि तरहँ भिरहसीक तीन बरीख शीति गेल । बीच मे एक बेर बड़ बाड़ि देल छलै मुदा हमरा लोकनिक सेत नहि दईथ, उपजो जलवा चढ़िने होई छल ततवा भेध कएल । मुदा एक बेर बड़ ओर भुक्तम गेलै । ओहि बेर महतमा

गांधी सेहो एलाइ, राधा बाबू गोतलिष्ट भऽ गेलाह । हम तखन ई सब किछु नइ बुझिये । ई भूइकम जे मेलइ से एकनो ओहिना मोन बइ आ' ओकर मोन पहिने रोइयो ठाढ़ भऽ जाइये । मायक मात छलइ । बरीब र बचेक समय । बड़ आसमई हुअ लगलइ । हमरा घरक चार हिलइ लागल । हम पुआर लग बइगल रही हमरे लग चुन्नी ओठल छल । हम दून् गोटे गप्प-गप्प करइत रही । हम तऽ किछु नइ बुझिये मुदा चुन्नी बाप-बाप चिचिबाप लागल । इनहरे सँ मनियार कका चिचिबाइत अँगना दिस भागऽ लगलाह । इह चुन्नी सँ पुछलिये की बात छइ ? ओ हमरा मुँह दूधइत कहलक, देखइ नइ छिनिन घर केना हिलइ छइ । जखी सँ घर सँ निकलि जो तँहुँ बड़ घुरियक छै । ई मुनिनहि हमरे तँ ओ हाथ बेरा गेल । चुन्नी अपना घर दिस भागि गेल आ' हम अपना घर दिस ।

सुगनी भीतर भुतल छल, माए ओकरा जा कऽ बाहर निकालि नेने छलइक । पन्द्रह बीरा गिनट तक घर ओहि प्रकार डोलइत रहलइक । हाथी घर चढ़ने छी कहियो ? नहि ? अरै, रेलगाड़ी पर तऽ खूब चढ़ने छेने ? कोनपुर सँ जे रेलगाड़ी पहिलेजा बाट तक जाइत छइक ओ कोन प्रकार डोलइत हिलइत चल्इत छइक ? बल, बेइ बुझि लियऽ । कोहि सँ किछु अचिके भैया ।

माय आओर सुगनीक दित सँ भीकिरि भऽ कऽ हम फेर मनियार काकाक गकानक दित दौगलहुँ । हुनकर दू घर भील बाधा छलन्हि, दू ठाम भील मे हल्लुक दरार पड़ि गेल छलन्हि । बेरौरी थोड़ेक अलग भय गेल छलन्हि । भील के साथे घर सँ । बल, मनियार काकाक एतने मोकसान भेइ छलइन ।

खैर, भगवान मालिक छथिन्ह सबहक । हमरा मुँह सँ निकलल—कि ओम्हर सँ रामखेलावनक छोटाका भाई सुवधा दोड़क जायल । हँकति-हँकति ओ बाजल बाड़ भाई, महिला मालिकक इनार पानि पोंक रहल छैक, धनुवा पलचनमा

पानि । आओर मालिक तम के कपटा मकान खसि गइल रहिन्ह, गरिबक कियो दबियो गेलन्हि.....

हम आ चुकी दौरलहुँ नासिकक हवेली दिस पहिला बेर पहिने बड़का दिग मेलहुँ एतऽ हहाकार भजल छल । डिप्टी साहबक नवकी घर वाली दोसर महलक नीचा मे सुतल रहथि । ओही गर्प हुनकर दुरागमन मेल रहिन्ह । निम्न टूटलन्हि तऽ जयमंगलाक मामा के पैरक आहूँ सुनि कऽ धरे मे रहि गेलीह । ईटक पुरान दिवात रहैक भरभरावऽ खसलह ते ओकरा नीचा मे पीचा कऽ भरि गेलैक । लोक कहुमा ईटा वाहर ईटा कऽ ओकर अचेत देह के वाहर निकाललक । सुलसी चौड़ा लग वचर शिरहना मे लुटा देल गेलइक । जयमंगला आओर ओकर माय भोकाति पाड़ि कऽ चिचियाय हांगल । सब केँ ठकभुरिया लागि गेलइ ।

महपुराक खान बहादुर केँ मकान रोही खसि पड़ल रहलिक । बली बाइक मोटिया थोड़ा दबि कऽ भर गेल रहैक । कोसाई पोलरिफ वचर थोड़ेक दूर हटि कऽ जे मैदान रहैक ओहि मे खासि भए गेलैक ओहि चेसरी अमातक बाझी धँलि कऽ भरि गेल रहैक ।

हमरा जबार मे बहुत हर्ष भेलइक । दश कील दशक, सीतामढ़ीक दिस तऽ एक तरहेँ प्रलमे मलि गेल । लोकड़ा जान नाब नुकसान मेल, पक्का मकानक बस्ती पर पहनट पड़ि गेलइक । सरकारी बंगला, पोस्ट आफिस थाना, कचहरी, जल, अस्पताल, स्कूल (स्कूल) बेकार भऽ गेलइक । सड़क फाटि गेलइक, सरकारक नानु नाइए डूबि गेलइक । जे जहाँ रहए से सब ओतहि डेह भय गेल । देवी-देवताक मंडल (मन्दिर) तक साक्षित नहि बचलइक भैया । आओर की कहूँ । एमहर सीतामढ़ी जौनहर जुंभेर तक देखी धका पड़लइक ।

पाछु सरकारी सभरि गेल । तम दोड़लाह । राजिन्दर बाइक डिहाई भेलन्हि । अवाहरखाल तक भोलन्टियर बनि कऽ सीतामढ़ी आवि गेलाह । बम्बईक सेठ खैराती होटल आवि कऽ खोलि देलकैक । कांसेस चन्दाक लेल अमीन निकाललक तऽ करीब तीस चालिस हजार रूपैया जमा भए गेलइक ।

पानि पोषऽ वाला पानीक स्वाद, ठेकड़ो जगह खराब भय गेल रहैक । अजीबे गन्ध अवैत रहैक । पहिने छोट छोट चं गाली नाके जथाय वैत छल । अंगली खासि मे भरि नोभाया प्राप्त-फूस, लत्ती-पत्ती नहि जानि की की सजैत छल, ओकरा लग चं जायब तऽ नाक मून्दि जेवर पड़त । नूट आओर सोनक पोषा केँ पानि मे राखि वैत छै । किछु दिनक बाद निकासति धिरेक तऽ थोतहु देह विकट गन्ध उठैत छैक..... भूचाल (भूकम्प) जहि इनार केँ खराब कऽ देने छलइक ओकरा पानि किछु ओहने गन्हाइत छलइक । हाय-हाय नचि गेलइक । सब सँ अहरी काज इनार सुखोवाई भय गेलइक ।

कांसेस जे रिजोफ फण्ड खोललकैक ओकरा तरफ सँ इनार खुनखाल लेल लाखीक रकम बॉटल गेलइक । हमरा इलाका मे रकम बॉटलक काज फूल बाइ के हाथ सँ भेलन्हि । एमहर के गौनक लेल हुनके अक्सर बना कऽ पठाल गेल छलन्हि । रामपुर भारी आओर नाथवर गाम ठहरल । बाल-बच्चा, रक्षीमण पुवख, धनिकगरीब, कुल मिला कऽ दू हजार आदमी बसैत छलैक । परंच भूकम्प सँ अहि बस्तीक एको इनार खराब नहि भेल धलैक । कुल बीस इनार छलैक । सुनलहुँ जे कि रिपोर्ट मांगल गेल छलैक, छोटका मालिक आओर अही बाबु, सुनरी विपिनबिहारीलाल दास सँ राय शान्त कऽक जिला कांसेस कमेटी के लिख देने छलन्हि । चारि इनार खराब भए गेलइ आओर बीस एक परिवार एहनो छल रहल होएतैक जेकरा थोड़ बहुत मरेत भेटक चाही ।

किएक अपने खति बड़लौक मकान गम के केर आद करक हाथत बेचारा दम के नइ छैक।

कुल बाबू मधुबनी सँ टमटम पर आएलाह, सोमो जाकइ अपने फूफाक घर जतरलाह। कहि देने छी, हमर छोटका मासिक हुनकर फूफाक सभैत छयिनह।

एक्के दिन ओ हमरा बस्ती मे रहल छलाह। हम जानि-बुझिकइ हुनका सँ नहि भेटल। मासिक सभक बीतए आओर बमनटोली से एक चकर लगोउने छलाह ओ, संग मे ई भीलटियर रहैन्ह।

जनेत छी, ओहि दिन फूस बाबू हमरा बस्ती मे किछ कए आएल छलाह।

रिश्तीक फल-विश सँ भगवान जानी कतेक रकम अहि गामक लोक हुनका भेटल छलैनह परन्तु किछु दिनक बाद मुन्शी श्रीक बैठा सँ जे हमरा पता लागल वैह आहाँ के बुझा-बैत छी। अहि सँ अहाँ के एतेक अन्वयज जर होयत कि लाखीक ओ रकम लोक सभ मे कोत प्रकार बाँटल गेल होएतैक। लीज मुनि लिख भैया :-

१—बधुअन पाठकक		क रकम लिखल		भेटलैक।
नाम पर	र०।	खलैक २०)		
२—दामो ठाकुर	४०)	२०)	२०)	२०)
३—मोसम्मात जानकी	३०)	२५)	२५)	२५)
४—तारानन्द सा	३०)	२५)	२५)	२५)
५—खोखाई गिहल	२५)	२०)	२०)	२०)
६—चदरानन चौधरी	४०)	२०)	२०)	२०)
७—पचकोड़ी था	२५)	२०)	२०)	२०)

१४६

बलचनमा

क रकम लिखल खलैक ३)

मिशलेक

८—बैबलसग महिष	२५)	२०)	२०)	२०)
९—बमोल सा	२५)	२०)	२०)	२०)
१०—बचने मिसर	२५)	२०)	२०)	२०)
११—मनियार गोप	२५)	२०)	२०)	२०)
१२—दुकोड़ी गोप	२५)	२०)	२०)	२०)
१३—कपिलेश्वर मइय	२५)	२०)	२०)	२०)
१४—दीदी अनात	२०)	२०)	२०)	२०)
१५—कलर केवट	२०)	२०)	२०)	२०)
१६—मोसोगांत कुन्नी	२५)	२०)	२०)	२०)
१७—बुद्ध चमारक नाम पर	२५)	२०)	२०)	२०)
१८—बोस अन्दल	२५)	२०)	२०)	२०)
१९—करीम बरुष	२५)	२०)	२०)	२०)
२०—नरगात हमीदा	२५)	२०)	२०)	२०)

बुनकहुँ भैया, बीच आदमीक नाम सवा पाँच गो बय्याक खैरात लिखल गेलैक परन्तु लोक सभ के भेटलैक तिरिफ दू सौ छ बय्या। ईनार-मुशारक नाम पर एक हजार बय्या भेटलैक। एक-एक के अलग-अलग बजा कए क्वी बाबू आओर दास जी बय्या भेटलन्हि। लोक सभ शकती आमदनी बूझि कए दसखत कए देलखिनह, अँगुठाक छाप दए देल के। जेकर जेहन भूँइ, जेकर जेहन काकाज, ओकरा ओहिना रकम भेटलैक। हमर मनियार हाका चुपचाप लेने छलाह, कुन्नी जैराती रकम लेबक खिलाफ अपने राय भगद कए चुकल छल। मासिक हमरा भाए के शैली पाँच बय्या देबए पारैत छलाह। पूछबाएल त हम बॉटि देखियक। मोसम्मात कुन्नी कंगल सामाजिक विषया स्वी छलैक, ओकरा खैरात भेटल छलैक। पूछला पर

पद्मचनमा

१४७

बाजल खुश। बाबा, मुझसे ई की बेहोश, बड़ा लोकक बास्ते आमदनीक एक टा आओर रास्ता निकलि गेलीक...

हनुआ छल हाथ में, पाठ डाटा जा रहल छलई। नमीन आबि गए हमरा कानक दित गुंह कर कऽ पुसपुकाएवऽ ई हम मुहमे करैत छथि बेदा, दैत छथिनह दू ओर कागज पर चढ़वैत छथिनह दल। इमान-धरम हिनका सम के छवि भेलोन्ह, बेल जरैक तेजीक आओर कटैक मर्यादाक। छोटका मालिकक सरबेटा आएल छल अफगर बनिकए खैरात बाँटए। हुअए नहि हुअए, हथार चँच मो ओ अहर मारि लेने हाएलैक... पता लगबिहै बेदा हमरा नाम की खपवा चढ़ल अछि।

चाची अहाँके भेटल कतेक? हनुके हाथ छै छाती ठीकि कए कुन्ती बाजल—हाथ गोमईयाँ छीने तऽ भेटल अछि।

हमरा ताबे तक कोनो खास बात होएतक बारे में कहौं पता लागि सकल छल। मुझे हिलबैत हम ओहि अनाथक दित ओहि फाड़ि-फाड़िक देखल लगलहुँ। छन भरिक बाद बगलहुँ—जाए दीओक चाची, की होअएत भाव पता लगा कए? राकसक घेठ में जे गोल से गोल।

कुल बाबू केँ एहि बात से हमरा आओर घुका भऽ गेल। काँधेलक विषय में लोचऽ लगलहुँ जे स्वराज भेलाक पश्चात् बाबू-भैया सब अपना में दही-मोछ बाँटताह, जे मग छलन मालिक बनल छथि सोह दब में भितरिया माल चरीताह। हमरा सबहक हिस्सा में तऽ हिस्सा परतैक।

राधा बाबू पर भइल बड़ि गेल किएक तऽ ओ सोसलिस्ट भव जेलाह। बरतमपूरा में जावऽ चारि दिन हम हुनका संगे सेहो एहि बीच रहि जाएत छलहुँ। ओकेक पैप लीडर से बातचीत मला हम की करितहुँ, परधन देखलहुँ जे आब ओ बोली-कमीन पहिरए लगलाह अछि, दाढ़ी तेसर दिन पर बसुस

लगलाथि अछि। सुनकिऐक जे असरम छोरिक शहर में डेरा जमओलाह। बनकाल किछु समझदार छल, साथ बएह राधा बाबूक संग रहैइ। ओकरहि से पता चलल जे बापे तक अन्दरे हीनका तनक गूठ छैन। एहि दल में बूढ़ लीडर नहि छैक, तम युवके छैक। रौंधी महारामा नै कोन बात में सीसलिस्ट गेल नहि रखैइ? अंग्रेजराज ने काँधेसे चाईछ ने सोसलिस्ट? परंच गाँधी महात्मा कल कारखानाक बिरुद्ध छथि। ओ एकरो खिलाफ छथि जे सेठ जगजिनदर, राजानशहा भा से जमीन-जबर्दाद, धन-तपसि के छीन कऽ अन्य लोक में बाँटि देल जाइ। बूढ़ भरि लहू नहि ओ बड़का चाई 'थ। मारि खाएव ठीक मारथ नहि ठीक अछि। इतिकऽ-भूकिकऽ जेना होए तेना अपन बात बनावी। सचाइ पर रहब तथा अगता गाँव पर तऽ एक दिन जाजिनक मोन अवश्य पिघल तैक... गाँधी महत्तमा हुनसान ककरो नहि चाईत छलाह जे गरीब के से धनीकहिक। ओ अंग्रेज से सेहो कराइ वार्ता नहि करथिन। हुनकर कहब छलैन जे एक दिन अंग्रेजक नति फिरि अओलैक, तखन ओ अपनहि ई देश छोड़ि चला जएताह, हुनका अधिक परेशान नहि करिअवन।

एहि, पर भैया सोसलिस्टक की कहब? हुनकर कहब ई रहैत जे दू चारिटा साधू महत्तमा के कतपला से अंग्रेजक हवस कथमपि नहि घमसैक। सम से जनता जखन भेद भाव छोरिक डार होएतैक तखने अंग्रेज हटत। पांच जनता आपसी भेद भाव कोना छोरल कोना कऽ एक होएत? लोक के जखन बिस्वास भऽ जएतैक जे जमिंदार महाजनक फायिल अन ओकरहि भेटतैक जखन रोटीक प्रश्न तऽ रहिनइ जएतैक। बालकचाक पढ़ाई-लिखाई... नढ़ावक फिकिर... खान पान तथा रहन सहनक ठौर ठिकाना... दवाइदार पथ पानिक इतिजाग... एहि सबक हेतु सभटा हलुक भऽ जएतैक, दरभंगाक महाराज होथि या पटनाक जाट लाईब—सुपत में अन्न किनकहु नहि

भेटतेन...सम काज करव आओर सभ धाम पाओत...कुल अपहु, थुइ
वेकार सगक जिम्मेवारी सरकार के छठस परतैक, पाइक बल पर किओ ककरो
खरिदुआ गुलाम नहि कमतैक—सोसलिस्ट भाई, जकर हर-कार, तकर परती !
जकर हुनर जकर हाथ तकर कल-कारख ना !

खलाल कहलक—हैं बालचन्द्र कमाय वाला छापत...एकर चससे ले
होइ !

सोसलिस्टक विषय मे ओहि दिन जे किछु हम बुझलिये न एखन ओतवहि
त हमर हृदय उछल लागल ! कहू ने गौथा केहन बढ़ियाँ गप छलै । छल
बाबू पटना मे एक बेर नून बनाइस काल खूब पिटाएल रहथि, तँओ गौधी
महतमाक पंथक गप हमरा बुझऽ मे नहि आएल । एहि तरहे अहूँ निटारहे
वेदन भइ जाएब, परचएकी बात बुझऽ मे नहि आएत ।

राधा बाबूक पहन सम, बात विचार मे जे केर फार सेलैन अछि ओहि
सँ ओ हुनकर स्त्रीओ खुशी बुझि पड़ैत छलीह । सर अथवा लगलहुँ तऽ बाबू
कहलनि—की करैत छेँ गाँव मे बैसि क ?

बाबा हाथ लै ओ हमरा दहिना कान केँ नहूँ नहूँ मलऽ जगलाह । हम
जकाकऽ डाढ़ भऽ छलहुँ । जन भरिक बाद ओ कहला—दू मासक पश्चात
हम महपुरा लचवाक खबरि देखौक तऽ जरूर भेंट करिहूँ । हमारा सँ हम ई
कहि चलि अयलहुँ ।

ओही माल गौधी महत्माक अवाइ रहनि । हम चुन्नी तथा रामखेलाबस
हुनकर दर्शन करऽ मधुवनी पहुँचलहुँ । भारी मेला छल पंचास हजार लोक
लायल रहथि महत्मा के देखऽ । छल-कल, केरा, अरसेबा (पपीता),
हाथक काटल सूत, सुगन्धित धानक माछ, सजमनि, मंडा.....सदाबक हेतु
नइ कहि कोन-कोन विरामीक चीज वस्तु लोक लायल रहऽ । लहर मंडारक

चलचलमा

१५०

लगक मैदान मे ऊँच जगह बनाएल गेल रहैक, ओही पर गांधीजी बैसल
रहथि । हम सीसोक गाछ पर चढ़लहुँ तखने हुनका भरि आँखि देखलहुँ ।
रमखेलीना गाछ पर नहि चढ़य जसैत छल तँ ओ उर्चाक-उर्चाक कऽ हुनका
देखनि आओर अपनाहि पर तगहाए । अरब एहि मे हमर कोन कसुर छल
पलथा मारि कऽ बैसल छलाह महत्मा हुनकर बोली हमरा कान तक नहि
पहुँचैत छल । दहिना हाथ उठा-उठाकऽ अकश्ये किछु बेर-बेर बुझबैत छलनि,
जे साफ देखाइ दैत रहै ।

पर अयँत अयँत राति भऽ गेल रहै । माय खाऽ कऽ सुति रहल छल, सुगनी
हमर बाट तकैत छल । एहिना होइ छल । लाखो समझावी बुझावी पर
ओ एहि बात हेतु राखी कहौं रहथि जे खाव पीबाक हेतु हमर बाट नहि जाकै
जरकाला तऽ छलैहँ भात तिट्टरिक चाउर भऽ गेल रहै ।

खाओकीस निचेन भेलहुँ तऽ सुगनी केँ सेही गौधी महत्माक विषय मे
बुझौलियेक । जोर ने ठहरल । फीरी भरि यदि कोनो नव विषय बुझाए तऽ
ओहि मे सँ छोटि कऽ बेचारीक कान मे जरूर छोटि कऽ ध देबाक चाहियेक,
की विचार अछि आहाँ केँ ?

पवित्रा बेलाख मे छोटकी मलिकाइनक बेटा केँ उपनयन भेल रहैन । लूथ
भोज भात खूब रमन चमन । हम ओर फजर दूगू गोटे मिलि कऽ आगक
एकटा गाछ कटलहुँ ओहि मे दू तीनटा डारि धलैक फारि कऽ हम डेरी लगा
लेलहुँ बीस पचीस मन सँ कम नहि छल होइत । मालिकक घराना रहैक ।
काज परीजनक दिन छलह । मालिक असगर मे हमरा सँ माफ़ी मांगि
सेजनि । ओहि वर्ष हमरा बहीनक जंग ओहन व्यवहार कएलनि ओहि सँ
हर मोन फारि देने रहथि । कोन मुँह सँ अपराधी हमरा सँ जमा मैंगलक
जा तऽ जंग रहि गेलहुँ । मलिकाइन पर हमरा ओतैक क्रोध नहि आएल जसैक

चलचलमा

१५१

एहि पल्लि पर.....उपनीत दिन हमरा गुलाबी रंग सँ रंगल दूटा चीती हमरा नलिकाइनक साथ सँ प्राप्त भेल। माय के बारह हाथक साथी भेटलैक सोलह टा तऽ खागरे मरल रहैक। चारिटा खसगी पीठल गेल रहै। चारि दिन तक ओ हवेली मनुआइने महकइत रहै। मागहलीक पिडक सामने देवाल पर खुनक फुहारक चिह्न सी देखनो सक देखवहक। हमर तिरहुतिया ब्राह्मण के जे सपाय रहैन्ह तऽ वेढाक उपनयन खुब धुन-धाम सँ करै छथि। दोन दाक, रसनचौकी, नटुआ, रंढीक भाच, कीतन, थिलटर, भोजक लडाइ अर्को पंडित सभहक सासुरार्य (शास्त्रार्थ) की नहि होइत छैक? सभ होइत छरक भैया। सभ सम्मन्धी रतावल जाइत छथिन्ह, सम्बन्धक स्त्री सभ के सेधी लिखाउन होइत छथिन्ह। गामक बिस कहियो-कहियो पड़ोसी गाम सभहक चिरावरी के संगीओल जाइत छैक। छोटका जातिवालाक कम भै हुनकर लइक आओर बांचल सुचल या अगिये पड़इत छनिन्ह। एही वएह भेलैक अलि भैया।

फुल बाहु आम भाजी लहर भऽ गेल लकाह, साइजिल सँ अपलाह, मँडवा पर शोडिक कात बैस कऽ जनेलक (उपनयनक) रसम रियाज देखेत रहकाह आओर उठलह तऽ घेर-गेर कऽ नलिकाइन गलखै करएलनिन्ह।

फेर ओ लगल चलि गेकाह। हुनकर माय के लिखायन भेल छलनिन्ह ओ पाँच छः दिन रहल छलनिन्ह।

किछु आओर खेत हम बँटाई पर लेने छलहूँ। फुल भितरक विषया जानकी अपन उपवाक जमीनक एक भाग हमरा बँटाई पर दऽ देलनिन्ह। ई चारि कट्टा जमीन छलैक। अहिवा सँ भितर मरलाह लहिये सँ छकोरी चाचा अहि खेत के उपजबैत आयल छलाह। सुख होइक चाहे महीनो भरि मेघ बरसेक, ई जमीन कहियो छोटा नहि दैत छलैक। कट्टा मोन धान होइते

छलैक, समय साल अगर बढ़िया भेलैक त फेर पूजु ने, सखन त आठ गोन सँ कन उपजिते नहि छलैक। अगर दु-तीन बरख त ई छकोरी नाचा सँ समुद्रि भइ रहल छलैन्ह। दू जवान लइका बंगाल मे भीकरी पर छलनिन्ह। काज चलवक जोग बपया पठबैत रहैत छलनिन्ह। अपन छमर लतर पार कए गेल छलनिन्ह बेचारे कए बेर रास्ता छै कि कऽ हमरा कहलनिन्ह तऽ हम तैयार भए गेलहुँ बात ई छलैक कि हमर बाप गाढ़ समय पर छकोरी के काज बापल छलनिन्ह। माय बाँधल छलैक। सावनह माघ, रातक समय। करैत आवि कए बेचारी के डति भेलैक। जहर भस-नलमे पसरऽ जगलैक, माय रहिरहि उठैत छलैक। छकोरी ताड़ी भीकए ओहि दिन बेहोश पड़ल छल। स्त्री बाल-बच्चा लऽ कऽ नदहर गेल छलैक, माएक सराध मे..... भोर होइते-होइते अभासक जीवक प्रान डूबि गेलैक। छकोरी के गोबधक प्रारचित लगलैक। पैह पण्डित बबुअन का पचास-बत्तवा लेलनिन्ह तखन जाए कए पतिवा दिखल गेलैक। सिमरिया घाट (रोवा) जाए पड़लैक, मय ठीक केश कटवऽ, पड़लैक, बाल-गाँवर खाए पड़लैक, दान-दच्छिना करवए पड़लैक, घर लौट कए सतनरायण भगवानक कथा सुनलैन्ह। चिरावरी क आओर समाज के तखन जाए कऽ छकोरीक बुअल पान-परसाय गरहाज (घास) भेलैक। आओर भैया, हमर बाप एहन समय पर से टाका नहि देने होइतैक तऽ छकोरी चाचा रामपुर छोड़ि-छाड़ि कऽ भांफि नेल रहितथि। बाबू हमर दाका सँ दू साल पर आएल छलाह। छकोरी आवि कऽ हुनका पैर पर खसि पड़लैन्ह आओर कनेत बजलनिन्ह—सालचन, ओ चाहऽ से लिखवा लिहऽ। नहि ने करीहऽ नहि तऽ कथार फोड़ि लेब आओर मरि जायव, तोर चामने। चलिकऽ अहि पाप सँ हमर उद्धार कए देह।... बाबू सुनबाप भीतर अएलनिन्ह, सैय टा स्वेधा लए कऽ ओकरा हाथ पर

देखलखिन्ह—दासीक मुँह सँ ई सभ हम छुनने छी । ते दहोड़ी आवि बोही उपकारक बढा लुका कऽ अपन माथा के हलुक कए लेखिन्ह । ओना ई कर्जा ओ हमरा बाबू के जीविने की लुकता कए देसे छलखिन्ह ।

पाँच कड़ा खेत बागी ठाकुरक हमरा नास ओहिना आवि गेल छल । अठाइवी लोक बोही खेतहरके देखए पतन्द करैत आँछि के मेहनती आओर ईगदार होईक । ठाकुर गँम मे आ । तस पालू छ ओ गहीना नहि रहैत छथि । घर वाली नइहर नेल छलैन्ह, बोस ईजाँ फेरलैक तऽ ओकरे तपेट मे आवि गेलैक बेचारी । दस सालक एक बेटा छलैन्ह ओकरा कसऽ-कसऽ होत फिरलखिन्ह । हारिकऽ ओकरो मनहाल मे छोड़ि एलखिन्ह । जमीन जाल मागूलिए छलैन्ह । इएह पाँच कड़ा भिट्ठा खेत, घर-आँगन-बाड़ी, बंस-बारि, कसकतिया के छ-सात गाछ, बग । लोक कहैत छनिह, ठाकुर दासओ पीवैत छलाह । हम कहियो नहि देखलखिन्ह, ई मांग ओ जरूर पीवैत छलाह । एकबेर की दिन मे दू-दू बेर ।

हमरा पर खूब खुशी छलाह । पालू बलिकए अपन घर-आँगनक रख-बारीक भार हमरे देखलखिन्ह । बाहर सँ अवितथि तऽ हमरा लेल कमीन-कुर्ता या बनिपानि जरूर लवितथि । एक बेर हम कहलखिन्ह—ई की देत छी मातिक, पोती दीब ।

पहिरल के छुबि कऽ बजलाह—गाइ रंगक ई तऽ हमरा पतन्द आयत नहि तक फेर साव निकालि कए राखब, तऽ लीहऽ कारिह ।

अगिला दिन फस्ट किलासक एक घोनी ठाकुर देखलखिन्ह तऽ हमर बाँहि फुलि गेल, मोने-मोन बजलहुँ—एँ एहन बढ़िओ पोती पहिर कऽ त निकलब ?

ओ हमरा छूट दए देने छलाह—चाहे जेसेक बौल कारितिलीक सुधा अपने मतलब के दोसरक लेल नहि, आओर ने बेचए बलाक लेल ! हमई ताल

बखचनमा

भरि मे मुस्किल सँ चारि-पाँच सँ बेसी बाँस जटैत रहल होएथैक ।

उपजक अपन हिस्सा ओ नगये लेनाइ पतन्द करैत छलाह ।

राधाबाबूक खबरी लए कऽ एक दिन महपूरा सँ एल बुढ़ पासी आयल तऽ हम ओतए गेलहुँ । ओहि बस्तीक डाक्टर रहमान इलाका भरि मे मशहूर छलाह । राधाबाबू हुनके ओतए ठहरल छलाह ।

जमीनार खान बहादुर सादुल्ला खाँ ब्रलाह । रैबत हिंदू-मुसलमान सभ जातिक छलैक । बाल-दस मौजेक मालगुजारी अवैत छलैक । लो खुद दाई तीन गो बीघा रखने छलाह, बाकी इलारी बीघा जमीन मसख लागल छलैन्ह । मसख बुकलएक भैया ? नहि ? अरे भाई, उपजक तोहड़न-बीसम या दसम हिस्सा मालिक बगल करैत छनिन्ह ।

महपूरा के छोड़ लोकतक तीन सय खेतिहर खान बहादुरक हजार बीघा जमीन पुस्त-दर पुस्त सँ हुँडा जोतैत आयल छलाह । आव काँपेसी अमल (शासन) आवए बला छलैक । तरह-तरहक अफवाह फैलैत छलै । खान बहादुर पहिने सँ चौक भए गेल छलाह । ओ अइ कोशिश मे लगलथि कि एकक ओतक खेत दोसरक नाम सँ बन्दोबस्त होइत चलि जाई । गुनचुप चारि छ बन्दोबस्त भइयो गेल छलैक ।

खेतिहर सभ मे कुनसुनाइत अपलोक । हुनके दिस सँ डा० रहमान जिलाक काँफेसी लीजर सभ के पास पहुँचलाह । मुश महतमा जीक चेला लोक एते रहमान साहेब केँ शानि आर संतोषक शर्जन पिचा कऽ चुप बैस रहलाह पर खाद बहादुर नहि बेमन रहलाह, भीतरे-भीतर जमींदारी दोब-बैच लकर बढ़ि गेलनिह । गरीब-किसानक ई जमीन अपना-अपना नाम चुप-चाप लिखा हो छलाह । बड़का-मकिला किसान जे अकसर हमरा दिश के नखन भूइहार, दोस आओर सूँड़ी महाजन होइत छलाह—देह हइए

बखचनमा

चाहेत छलखिन्ह गरीब समहक सुष्टी दू मुठो भात के। डाक्टर रहमान कहाँ तक बेलल रहित छ, गरीब लोक हुनका केना देखेदियेन्ह राधा बाबूक घर इनकर पटना कम जहलक दोस्त छलेन्ह। पहुँचलाह सीमें हुनका पास। आदि दिस मोतलखिन्ह सभ ने वइ गर्मी छलैत भेला। ओ के किछु कहैत छलखिन्ह ओकरा करक कोहिण हुनका दिस सँ होइत छलेन्ह। गनदुरक हुनका होइत चाहे कितान समहक आन्दोलन—सोतलखिन्ह भाई ओहि में आगू बहि कऽ हिस्सा लेत छलाह। से, राधा बाबू डाक्टर रहमानक बात मोन लगाकऽ सुनलखिन्ह आ खान बहादुरक खिलाफ लड़ाई शुरू करक रास्ता बता देलखिन्ह। कितान समहक संघर्ष अवधार में जमींदारक जाली काजक प्रचार, कम से कम पच्चास मोर्चाद्वार समहक बहाली; क्षीय-पक्षीय मोन बनाज आओह तेम टा सपेवा, इलाका भरिक किसानक एक भारी मीटिंग...

डाक्टर रहमान महर्षा दुमि अटलाह आओर कितान सभ के सभ किछु बुझा देलाखिन्ह। लोक लगले राधी गए गेलैक। ओहि जासिम जमींदारक सुमावला असगरे तऽ कियो कए नहि सकैत छलैक? ओकरा पीठ पर थामाक दरीगा साहेब छलखिन्ह, दरभंगाक कलहर साहेब छलखिन्ह, इलाका भरि के जमींदार, पण्डित आओर मोलगी साम—खान बहादुरक पच्छ मे छलखिन्ह। पच्छिमक दस सठैत जवान, नेपालक पाँच कुखरी बहादुर... उड़ ताकतवर छल—खान बहादुर। असगरे के ओकरा सँ भिड़ितक परछ तेम टा लाठी एक ठाम भऽ जाइक तऽ ओकर एक भारी बोझ बनि जाइत छैक। अपन-अपन प्रतीक क्षिकाजतक लेल कितान एक होअर लगलाह। पहिने हुनका दिस सँ रहमान साहेब जमींदार के कए बेर बुझा चुकल छलखिन्ह, आब कोनो रास्ता नहि छलैक। देपत समतयकऽ लेलकैक कि लाश खपए तऽ खतए, मगर अपन छेत दीगरक देखल मे नहि जाय देखैक।

बलचनमा

कितान क दिस सँ बहुत अधिक चेजारी भऽ चुकल रहैत ओ इलाका भरि मे मोटिल बंदि गेल रहैक। राधाबाबू मिटिंग सँ दू दिन पहिनिहि आबि डटलाह।

हुनका देखितहि बजलाह—एहि बेर हुनका जहलक लिखचरि छाब परत। एतेक कहि राधा बाबू सुखुरलाह आओर नजर मारि कऽ एक टा मुँह गर आदमी दित हुनकर प्यान लिखलनि। फेर कहलखिन्ह—ई रहल बलचनमा रहमान लाहेब एकर नाम लीखि शिबोक स्वयंसेवक से।

खादो क उठतर पैनाम, चरिखाना जमीज। भोज रहैक परंच बाड़ी साफ। केश ओतिया रहैक। ओहि समय हुनका हाथ मे बन्हेवाक रहै, पैनामा जाइ छलाह होएत। खूब दमिकऽ आत-पाल मे सोरमचा कऽ कहलनि ओ लीखि दिबोक नाम?

कहि तऽ देलहुँ एक बेर—जश्मा खोलैत राधाबाबू हाथ मे लेत बजलाह जाब पोखरि दिस सँ भऽ आउ तखन। धोतीक कोड़ सँ जो चरना साफ कएलनि, ओकरा नाक पर बेतबैत बजलाह—तीन दिन तक तीरा हम अपनहि सँगे रखबोक, फेर छुट्टी। जो आभन देखि आ।

तऽ की एतहु आभन छैक? हम चाँकि एम्हर-उम्हर देखल लगलहुँ। पास परोस मे ताफ सुधरा मकान रहैक। छोट-छोट। रास्ता पर दू तीन जगह गुर्गा देखाइ देलक, दू एक गुर्गाओ छलैक। कनीक हटिकऽ भीरक ओहि काठ काशी कुत्तिया-पीयर हट्टी चिबबैत छल। बथान पर नादि मे चारि टा मस्त बरद मुँह लगीने भूसा लानी खाइ छल। दोसर दिस गोला रंगक बोझो बान्हक छल। भूमीक देरी दू एक टा हर। बेचक मे दू दू गोठ रंगी। एक टा साधारण अशमीरा बन्द। तख्ता पर दबाइक गोली भरल किछु शीशी, रबरक नाली (आला) आओर उठतर डिब्बा खुट्टी मे टाँगल छलक।

बलचनमा

भैया आखिर डाक्टरक बैठकखाना छोड़ के गीने ? अपन-अपन औजार ककरामर नहि रहे छै क ?

जे हमरा घर सँ बजाय अमरे छल, वएह एस अमलक अछि आसरम दिस । गौबक एकदम बाहर, बगोचाक लग ।

बुरे सँ देखलियेक जे बौसक छोर पर भंडा पहराइत रहैक । लग जाकऽ नजरि ऊपर कऽ कऽ देखलहुं तऽ लालकंडा पर दूइ इधवारक चिन्ह देखाइ परै लागल— एकटा निशान छलै हाँसू आओर दोसर हथोरीक... सुधाक सूज पेट पर हथोरीक माथा ।

लाभन की छलै, पूरा घासक टेम्भेरी ओपझी रहैक ! खाकी जंधिया आओर लाल हाक कमीज पहिरने दूइ टा सबजवान बैसल रहै । ईटक चुनै माँटिक हाड़ी मानेस बजैत छलै खुद-बूद खुद-बूद खुद-बूद, खुद-बूद । दूइ ब्राउन बापक बिभा बेटी बंधा आनक सुखाएल डारि, फाटल सुखाएल बौसक लग जरैत रहै ओकर धुवौं सेहो ओहने कइ रहैक ।

स्वयंसेवक भइया सँ बरी कालतक बात करैत छलहुं । हुनका संगे हम कहिये छल्लि मिली गेलहुं । वो रोखी रोटीक लड़ाई में बहादुर छलाह । सोसलिस्ट पार्टी हुनका दरभंगा पठाओने रहइन । हमरे जेका ओही सब गरीब नाय-बापक पूत छलैक । एकटा ब्राह्मण दोसर गोआर । अवस्थी कतेक हमर ओहिसँ कन ओकर समेक नहि छलै । ओकरा में ओतऽ जाति-माँतिक भेद-भाव नहि छलै । एकक नाम दिनेश छलै दोसर के सूरजा । दिनेश हमरा चूरा फाँकऽ क हेतु देखल आ कहलक—भूख लागल होएतो क कामरेड ! एस जे हावे तक पेट में किछु ।

कामरेड—ई रात्र सऽ हम कहियो सुनगहै नहि छलियेक । आजक खातिर ओहि दिन ओकर मतलब हम बुझि नहि सकलहुं, परंतु दू दिनक बाद

पता चलल जे कामरेडक मतलब दूइक लड़ाइ साथी । एके मोर्चाक दू फौजी जवान एक दोसर के कामरेड कहिक शोर करैत । अपना हकक हेतु लड़ऽ बला हमरा गरीबक लेल कामरेड सँ घेरी फौजी लबज (लफज) नहि अछि ।

घोड़ेक कालक बाद हमराया बाबू लग बुरि चलि अएलहुं । हुनकर बोली कमीज के साबुन लगाकऽ खींच देलियेन । बाहर कपड़ा पसारिरे रही कि इम्हर भोजन हाजिर भऽ गेल । बरहमपूरा आभन में केवैको भास रहि चुकल रही, मुसलमानक संगलाइ में भरहेल तऽ नहि रहै सुधा डर रहै जेज फौजी बेरादरी देखि लेलक आओर इ खबरि गाँव घर में पहुँचि जाएत, आओर एकटा चखेरा धेकारे उठि जाएत । तँ—शारी घडाकऽ बैठकखानाक अन्दर बला कोठली में चलि गेलहुं, ओतहि खएलहुं खेसारीक दालि आओर भात रहैक, तरकारी छलैक रामकिमनी (तोरइ) क । भइया मुसलमानक ओहि ठाम जेहन मानस होइ छइक तेहन कतहु ने ।

माथ के खबरि देखक हेतु छुटी गंगलहुं तऽ बाबू कहलथि :—हँ ? हम जनेत छी जे तू ककरा खबरि करक लेल छुटी गंगे छै । हम लज गेलहुं आओर ओहि नीचा कऽकऽ बिश भऽ गेलहुं अपना गाँव दिस ।

मोटिंग में चारि सौ के करीब लोक आएल रहथि । आश्विनक लग बला मैदान में सभा भइये नहि तर्क छप, चर्चाओ में नहि । खान बहादुरक मनेजर ओकर एहन लभा पर अपना कटैत सभके लग कइ देलकैक । आव की छकड़ की आव भीटिंग नहि होएतैक । नहि, भेलइ । आओर शानदार मिटिंग भेलैक ।

अधेइ सभरक एकटा आदमी लोक के ललकारि के कहलकैक—ओ बड़ि हमर खेल, पाँच कइक ठुकरा छैक । ओहि में मरवाक नाइ रहलहा रहत छैक...आब भइया, ओतहि मिटिंग होयत ; आब मरवाक काटिक ओतहि बेस-बाक जगह बना लइल छी...विजलीक फूली सँ ओ आगू बढ़ल । देखिते-देखिते पच्चीस-तीस टा हॉलओ आबि गेल आओर लोक नाच काटस लगलकैक । किसान में भारी जोश खमरि गेलै । बाबू घंटाक अन्दर समूचा खेल साफ भइ गेलै । यीचीवीच तखतपोरा घसक लोडरक खेल जगह समाएल गेलै आओर मिटिंग के कार्य शुरू भइ गेल ।

गैआ ओ कोन आदमी नई जे अपन हरिवरे फखिल बरबाद कइक मिटिंग हेतु जगइ बमोलक ?

ओकर नाम लतीक छलै । नेहनवी, गरीब आओर ईमानदार । कुल डेढ़ बीघा जमीन ओ जोतै । देव-पैद नेताक त्याग तपस्याक खिस्सा तू

चलचनमा
जगजगजग

खुलने होएलह, परंच महपूराक गरीब किसान के एहि त्याग के भला कोन बर्जा देखक ? हरिवर फखिल कटवाक समय हमर तइ आँखि छल-छला गेल मैया ? हम तइ सपनो गे एहि तरीकाक गभ महितीच सके छलहुँ ।

लीडर पाँच गोटे आएल रहथि । पटना सँ स्वामी जी, गया सँ शर्माजी, मुजफ्फरपुर सँ मिश्रजी, कतहु के एक टा आओर बाबू झलाह, तमस्कीपुरक गैया बाबू आओर राधा बाबू । स्वामीजी बूझ कद के कमीक पिंडराम रंगक आदमी झलाह । कनका गेलआ रंगक रंगल । बात काल एना सुकाइन मानू खापड़ में मकइक लावा झुटि रहल हो ।

भीषम फल, दूध थप । हुनका खेल पाँच सेर दूध पाकल केरा एक बेर आओर मथिया भरि संतोसा-मेतू आएल रहैक । खाइत खूब रहथि भोगिदर बुकिलिय । साथ चैलला तइ एके बेर एतेक खंजीला खाइ गेलाह जे सामने में सीटी और छीलकाक डेरी भरि छाडी लागि गेल । सुदा, मिटिंग में स्वामी जी चिचिइला सेही खूब । मय खान बहादुर, मय दरोगा जी, मय एत० बी० बी०, मय कलेश्वर ओ तम के ललकारलखिन्ह । महाराज बहादुर के एहन रंगककनेह, की बताइ । सरकार के सेही खूब सीखावेदर केलखिन्ह स्वामीजी । पटना सँ टूटा अकलर रिपोर्ट जेवए आएल छलैक, ओ स्वामीजी के लेफचरक एक-एक अच्छर लिखैत छलाह—खान बहादुरक डेवदी सँ हुनकाजेल देवल आएल छलैन्ह । हुनके खेल किएक, हु कुरी आओर एक टूल (स्टूल) आओर सेही मंगयाओल गेल छलैक । कुरगी सभ पर एत० बी० बी० आओर डिप्टी मजिस्ट्रेट नेतल छलाह, टूल पर खजौलीक दरोगा जी ।

स्वामी जी किसान तम सँ कहलखिन्ह—“बाहरी लीडर सभ के भरोसे नहि रहू, अपन नेता अपने खुद चयु । मंगनी आओर छिपार के बाहरी नेता चलचनमा

बहुत देखलई, मगर किछु भेद-संज्ञाई नहि। मानलहुं कि नेता बदल-शिखल होइत छथि आओर अहाँ अपढ़-अनजान छी, परञ्च गहुम-चाउर, दूध-धी, तिलहन-दूर सब किछु अपने उपजबैत छी, लीयर लोक तऽ अहाँक कमाईक इकुआ खाए कऽ लेकचर देवऽ आबैत छथि आओर अपने दिहाण व देटक वदहअमी भेटबैत छथि। अहाँ आन अकिस सँ एतेक लऽ जनिते छीएक कि लेकचर चाई लाख देल जाईक, हुनका सँ ने एक दाना चाउर उपजावऽ होइत छन्हि, ने गहुँ आओर ने धीके दूध। लेकचर मुनि कऽ भूख-प्यास नहि मिटैत छैक। अहाँ सब लीयर सब सँ लाख गुना बड़ियाँ छी। अहाँ सब किछु उपजबैत छी तऽ अपने लीयर पैसा अपने ओहिठान पैदा कर। जे अहाँक आदमी होएत वैह अहाँक तकलीफ केँ भुक्त, ओकेँ पर न कटी बिनई से की जाने पीर पराई। कौसेय अहाँक दुख दद की दूखत? ओ खादी पहिर कऽ आओर गर मे मावा पहिर कऽ जमींदार सब केँ जहल पठप-बाक नाटक करैत छथि। पाछु जहल सँ निकलल वैह जमींदार कौसेयी अहाँ सब केँ रागि आओर संतोषक पाठ सिखबैत फिरैत छथि..... खबूँ। भाई, एहन लीयर सबकेँ फेर मे कहियो नहि पकव..... अहाँ अलगरे नहि छी, करोड़ोंक ताबाद अछि अहाँक। अहाँ जखन ठाढ़ भए जाएव आओर एक कंठ भए हुंकार — करबैक तऽ जालिम जमींदार सब केँ कलेजा धलैत लपटैक। ओ छथिए कतेक, दाखि मे नून केँ बराबर। ओ अपने बल नहि, सरकारी अफसरक बल पर जुकूम करैत छथि। अहाँ सिर्फ तीन काज कर— संवत्ति भए कऽ एक भए जाव, हान बाय तऽ बाय मगर जमीन नहि छोड़, आओर अदालत—कचहरीक दुई सिदे कहिनी नहि जाव..... किराने सभा अहाँक भदैंत करत, आइरक किसान लीयर अहाँक बीच भवैत जाइ रहलाह। किसान भाई, भाव अहाँ जागि गेल होएत। खान बहादुर हीअर

चाहे महाराज बहादुर कियो अहाँक हक नहि छीन बाजोत। अहाँ अपना तागत केँ चिन्ह, बाबू सब मिलि कए इन्किलाफ—”

अन्दावाद।—लोक सब मिलि कऽ अवाज लगलकैक। सब केँ मुँह पर तेज बर्सेमान छलैक, बाँखि चमकि रहल छलैक। खाती देर तक बाजल छलाह, किसान सब दम साथि कऽ सुनलन्हि।

खानबहादुरक मनेजर लोक सब केँ बीच चारि छः बरमाश सब केँ बैठा देने छलैक। शुरू-शुरू मे ओ तम ‘महत्मा गाँधी की जय,’ ‘भारत माता की जय’ आओर ‘रुदामी जी देव जाड़’ बगैरह किछु आवाज लगलकैक तऽ किसान सब केँ तब सामं भेलन्हि, बाँहि पकड़ि पकड़ि कऽ ओ सब गुन्डा सब केँ बैसा देखलन्हि। लोक सब केँ मराजी आओर कड़ा रख देखि कऽ फेर हुनकर हिम्मे नहि भेलन्हि।

स्वामीजीक बाद शर्माजी उठलाह, गया बला। लम्बा कद, पिरसियाम दूरत। घेतरीय प्रेश। देह पर कमीज, कुर्ता या गानी किछु नहि छलन्हि। बड़ई नीम सब कणड़ा, डोंड़ सँ लगल गेल छलन्हि। ओ कहलखिन्ह—

रहिमन चाक कुम्हार केँ मारी दिया न देन

बिल मे डंडा डालि केँ जो चाहे गद्दि लेन

“किसान भाई, संगला सँ किछु नहि भेटत। अपने ताकत सँ आहाँ अपने हक साथि सकैत छी। अहाँक तागत की अछि? एको अछि आहाँक तागत, संगठन। घर मे कनेत-कनेत अलगरे हाथ हाथ करैत करैत हजारो साल जीति गेल। सरकार केँ अहाँक रस्सियो भरि परलाह नहि छैक। ओ अहाँ सब सँ नहि, चोर डाकू सब सँ धरदाइत अछि। हुनका पछा नकान (जहल) मे हिराजत सँ रखैत छैन्ह। खेमाई बीनाईक, पहिरव-ओढ़व, दवाई दारुक मुका लेल सब इन्तजाम सरकार करैत छैक। मगर गहुँ बाहमती उपजा कऽ बलचलमा

होकर सन के छुटका आला करने खुद करते छथि । सरकार के आर्मीक कनिनी फिक नहि लेक । ओ मानु खुद इशारा करैत छैक किसान सन, चीरी कर आओर डाना रे गछने सोहर गुजर होयतीक—

समांजी बुझवैत कहलखिनह—“जमीन्दार बड़ प्रपंची, बड़ आलिस हीन छैक । अचअल (अचल) तऽ पहिने सोरा अन्दर अपने मे छूट करवाक कोशिश कुरैत होयतो, मरिह, वृ सभ अपन जमीन पर डटल रहि गेलै तऽ ओ पैसा बचा के संग करैक । अफसर सन ले निर्मल कऽ ओ सोरा सभ के कहक मोजक कोशिश करैत—समान, मोटिम, बारंट सबाध सभ भऽ सकैत छैक आर खबरदार, अपना खेल सँ मरिह हटव सुलाका जे नहि पड़ब आओर कनइगी आ कऽ सलही नहि करब । पुलिस आओर हाकिम सभ सँ साथ कहि बैयैक कि अही खेत सभ के गड़ल बना दिओक, हम पड़ल रहब, भागव नहि । ओहि गड़ल मे तऽ जेबाक अछि तऽ सभके तऽ जमियोक—बाल बच्चा, जवान बूढ़, मरै बीरत, माक-बरद, मेहु-चकड़ी, कुकुर-बिल्लाहि, कूहा-कबूत,—हमर सभ बन्धु सने जायत । सछने हम गड़ल का सकैत छी नहि तऽ टम-सँ-मरु मरिह होयब—के करवाक हो, एलहि कर । आओर अगर पुलिस बल खानला परकऽ काहए तऽ बूढ़, बच्चा मरै जीत एक बीमार के बड़िया प्रकीं पकड़ि कऽ चढ़ि जाय पड़त । सँचो आदमी के तऽ जेबाक हेतु हमारी जिम्माही आओर पचीसो लारी (बल, दृक) काही—फेर देखैक के अहाँ सभ के केना कतर तऽ जाइत अछि । आर आहाँ हुनर ई बात मानि ली आओर डटल रहक निश्चय कऽ ली त फेर आर्मीक खेल पर सँ आहाँ के इदमर काज तामत अहि दुनियाँ मे नहि छैक । जमींदार, तखानार, पुलिस मुन्डा—सभ थाकि कऽ पैठ जायत ।”

एकर बाद भारा समलोक—कनाद, पला खायत—एकना चलते जे किछु

होइक । इन्किलाब—जिन्दाबाद । जमीन केकर—जीतए बीअए लोकर । जमेजी राब—नाश हो । जमींदारी पर्या—नाश हो । किसान सभा जिन्दाबाद । सल भंडा—जिन्दाबाद । इन्किलाब—जिन्दाबाद ।

फेर बाँकी लीडर बजलाह । अन्त मे डाक्टर रहमान महपुरा जमींदार खानमहोदुर खुल्ला खों के अगाह करैत कहलखिनह कि ओ असन जालिनावा तालि सँ बात नहि असोवाह तऽ इलाकाक एक एक किसान आरू बड़वैक आओर हुनकर होन ओक कए देतैन्ह—दरोगा आओर एतऽ बी० ओ० मे, सेही डाक्टर रहमान साइब कहलखिनह—एकी बूढ़ सुनित (सुन) छल्लेक तऽ ओकर जिम्मेवारी अहाँ पर होयत । किसान के समझाव सँ पहिने आहाँ खान महादुरक लैत सभ के रोझिओक जे छल्लेभाम गारि वकैत सुनैत अछि ।

राधा बाबू रहमान साइब सँ पहिने जिता के अकलुर सभ के फटकारि चुकल छलखिनह । तीन बंटो सक सभा कहहत रहैत । खतम होयए सँ पहिने एक मौजवान चीन गजालक—

बुर्दिमा केसक हरान रे, किजिरिआ मारतक जान ।

करबा करिहँ खेती केहुँ शरि नेतई तम धान—रे किजि०

बरद बेचि रखबा के देखँ, छोड़ए नहि बइसान

जमींदार के छलुम रोकऽ, चेतऽ माई किसान—रे किजि०

गाँव के गरमा कऽ लीडर लोक अगिसे दिन जलि गेलाह ।

हमरी असीक एन्दह-धीप किसान सभा देखऽ आबत छलाह । किसान सभाक गार्गी रामपुरक लोक सभ मे सेही किछु आवय लगलैक । मुन्गीजीक बेटा थोड़-बहुत अंधेजी पढ़ि लिखि कऽ वेकुर बैसल छलक । ओही लीडर रामक मोधन सुनि आपत छल । आओर राधा बाबू सँ किछु बात सेही ओ कहने छल ।

महपुरा का किसान सब भितरे-भितरे भिड़क्य कपने छल की ओ लपना नाग
सँ लेल लिखा लेने अछि ओ लेल सब के आवाज करए तऽ करय दिवोक, परंच
फसल हमही काटय । परंच अमीनारक तरफ सँ कोनो किसमक खेत आवाज
नहि कथल गेलैक । लोग बुझि गेलैक जे फसले पर बाधा मातऽ चाहेत छथि ।

हमरा बस्ती के मालिक के सेहो कान ठाढ़ भए गेलैन्ह । एक-दू-क
एतहुँ हेर-हेर शुरू भेलैक । सबे के समय मालिक के परदादा आओर बत्ती
बाबूक दादा किसान सब के जोतल हजारो बीघा जमीन के बाँटल के लोर
पर दर्ज करा देने छलखिन्ह । बुका बाबा किसान बने पाँच छलाह अनिका
काश्तकारी हक सबे मे कायम रहल छलैन्ह । आम किसान एक लमीन देन
आयल छलखिन्ह परंच रसीद लेबक जरूरत ओ कहियो नै बुझलखिन्ह । बात
ढूँढैत छलैक त कहितथिन्ह—मालिक दईमानी घोड़े करताह ।

पाँच-एक सै बीघा जमीन छोड़ जात बला के संग एहनों छत्तीक जेकर दर
मोनहुँदा छलैक । फी बीघा बाग दू मोन रबी खरीक एक मोन । रसीद एकरो
नहि सेटैल छलैक । अलावा एकर किसान हजारो बीघा देटाई सेही जीवैत
आएल छलाह ।

मालिक सब रूढ़ दर रूढ़ मे बेचारा किसान सबहक कुंभ लुटैत छल खन्ह ।
अनाजक खोड़ा रुयेदा जमराजक समान अलूतैत छलखिन्ह । मगर आम
किसान महपुराक दिश नज्दीक लगौने छल आओर मालिक सब के नजरि सेहो
उभरे छलन्हि ।

अगिला अवहन मे फसलक जे खीना-खपटी भेलैक ओहिमे एक किसानक
लाज खलल छलैक । रोजास जे मारने छलैक ओ खान-बिहादुरक मोचवाजहि
छलैन्ह । पुलिस टुकुर-टुकुर ताकैत रहलकैक आओर हरगारा लापता
भए गेलैक । अखेर दफा १४४ के तोकक नाग पर दुःखीन दर्शन किसान सब
बलबलमा

के भिरभारी भेलैक । हुनका सब पर कए प्रकार के मुकदमा चलाओल
गेलैन्ह । फसल परंच किसान क घर पहुँच गेल छलैक ।

घान काटक दिन छलैक, अही सँ हम मलौति कए रहि गेलहुँ । नहि
तऽ चारि छः दिन महपुरा रहि कऽ किसान के संग दितिक । आओर
एयोग देखू भेबा कि ओही नाग मे सुगनी के बच्ची पैदा भेलैक ।

जमाइन आओर नाइन के इनाम-तिनाम देबए मे, छद्मी आओर
पड़ोसिन सब के लेल सिद्ध देवण मे पन्द्रह-एक रुपैया लागल होएत । बेसी
खर्च करक हमर ओकावे कडौ छल ?

बन्धीक जन्म लेला सँ नाय कनिह जरास भय गेलैक परंच मनिवार
काफा कहलखिन्ह—हमर विरादरी ब्राह्मण क, भूँइहार, राजपूतक नहि अछि
कि लड़की क माँ मे सिद्ध पड़नाई मुश्किल भए जाएत । कथिक भोज,
कथिक किरि ? एक रेवनी गेल तऽ दोसर रेवनी आवि गेल ।

ई बजैत चाचा अंगिन अएलाह । सुगनी रोद मे बैसल छल चिलका
के लेने । खयास सुनिबे ओ प्रोष के कनिह तरकास लेलक । बुड़इ बागु
आवि कए बगलाह—दुर्गा भवानीक दरसन करए अवरहुँ अछि ।

माय ओसारा दर घान उलसति छल । चट सँ ओ सुगनीक नगीच चलि
अएलैक आओर बन्धी के अपना हाथ मे लए कऽ मनिवार कका के सामने कए
देखलैन्ह, अपन मुँह फेरने रहल किएक तऽ बाबू हमर जगर मे मनिवार कका
सँ ताश्मरि झोट छलखिन्ह ।

बन्धी क कपार पर अडन्नी ताष्टि देलखिन्ह कका आओर कहलखिन्ह—
चेहरा-मुहरा चिलकुल बालोक मन छैक ।

माएक सामने ओकरा हम भरि अँखि कहियो नहि देखलियैक । लाज
लगैत छल । परंच असगर मे देरी तक ओकरा देखैत रहितियैक । केहन
बलबलमा

बढ़ियाँ लगेत छल । ताबड़ा गुलाबी कमलक समान अंगेत छल, ओकरा इन अम्मा छोड़ सँ, नाक सँ, पपनी सँ कपार सँ हलुके वगल करैत छलियेक—
बहि सँ भारी संतोष होइत छल । छाती मे बाँक कपार मे कहियो जानन थपि कइ लगैत छी अहाँ ? ई, तऽ बस बुझिशीरकि ओही प्रकारक तराबट—ओहि सँ किछ बेगीए कहियोक वरपी कि छूबत सँ सेटैत छैक । संतान कोनो नानूली बीच नहि होइत छैक भैया !

बियो वता देने होएतैक, एक बेर एकरा मावए बला पैरिजा आएल, दू आदमी छल । हुनकर दोसक सुराहीदुना छलैनै । पहर भरि ओ सोपर भैत रहशाह । डेढ़ घण्टा आबेर दू सेर धान सेतारिह तखने छठलाह, दू छ लागर होइत छै ईहो सम । बाबू लोकक हवेली तऽ नहि जानी बलैक समान लडा लए जाई छथि ।

हम किछ नहि बुझ सकलहुँ । पूछलियेक—की छोक रे ?

अरे छलुन भऽ गेल ! कहबो तऽ करै छियु ! हम खजन्ना कऽ भजलहुँ तऽ ओ भूया-भूया कऽ काम मे कहलक—जयमंगला (जयमंगला) के लहेरिया-संजवला दरजीवा उराकऽ लऽ गेलै ।

आश्चर्य सँ हम ओकर नुँह दबा देलियेक । एएह चारि पाँच दिन पहिने हम ओकरा पोखरि पर ठाढ़ देखने रहियेक आखिर इ भेलै कोना ?

चल, रखा मे कहबोक—रामखेलानन कहलक ।

कमीज पहीरी कऽ ओहरे देह पर कऽ केलहुँ आओर पर सँ बाहर निकललहुँ—हाथ मे लाठी छल । पता चलल जे पहिले लहेरियाभंग, फेरमधुवनी बरांगा आओर जयनगर (जनकपुर) तक जाय पड़त.....

राखा मे रामखेलानन सँ जे किछु वता जलल, से वता दिअ ? त लिअ, खु—

हमर बड़का मालिक बाबू मोहोशफर चौधरी के बेटी, बेटा इएह जयमंगला । ईहा मालिक के कतेको वर्ष पहिने स्वर्गवास भऽ गेलैन । ओठका बेटा कहील आओर छोठका छिन्टी मजिष्ट्रेट । बेटी कहिया सँ मतोमरत भेलैन कहिया ई बाँस लम मे रहऽ लगलैक । श्याम सुरति, बड़की शील, गोल-मटोल मुँह । देखऽ मे बहुत सुन्दर छलैक । अवस्था छल हैसैक चौबरी-पचीस के ।

लहेरियाभंगक एकटा नवलवान धर्मी हवेलीक सबदा कपड़ा सीधेत छलैक । खूब सूरत सुखलवान । ओकरा मामा के मधुवनी मे सिलाइक दोकान छलैक । बूढ़ा मालिक ओकरहि सँ अपन कपड़ा सिपवैत छलाह । ओकरा सँ सीख कऽ ओकर भागिन लखन शेरार भेलै तऽ नाए लेबाक तैव अनागी कपड़ाक हवेलीक अन्दर आवऽ जाए लगलैक । इधर इधर तीन वर्ष सँ मनीन लऽ कऽ ओ लहेरियाभंग मे रहऽ लागल । बीच मे दू तीन बेर एना गेलैक जे कपड़ा कतेको तरहक आओर बहुत गिवाबक छलैक, किछु कपड़ा किमतीआ छलैक । नवका दर्जी बड़ बढ़ियाँ सिपाइ करै छलै, पक्के रई तहिए ई मलिकाइन ओकरा अंगेत छलखिन । त, बैसक मे चलने एकटा कीठली तऽ अन्दरे सिपाइ करवाक हुकूम भेटलै । चारि चारि, छः छः दिन दूदतीन बेर ओ मालिकक ओहिठाम रहि चुकल छैक । मनीन अवद आओर जाइ । दर्जी के मजूरी भेटै छलै भोजनो भेटैत छलैक आओर नास्ता पानी सेहो... इहि बीच दूदक नजरि चारि भऽ गेलैक, दूनु दिज अपन रास्ता सेहो निकालि जेलक । बाहर ककरो दूछल नहि छलैक आओर भीतर लोहिया मे गुर पकैत छल ! एहिबेर धर्मी आएल तऽ साल २५५ करव अहिना आइल, मशीन बनवाक तखन काज कोन रहै ? दू तीन दिन रहलाक परचात ओ राति ई राँव भऽ गेल, जयमंगला सेहो गैब रहै । खानदानक नाक कटि भेलै भैया ! ग. लाठी लऽ कऽ लोहा भंगनू के ताकत तैव नीकललहुँ । लहेरियाभंग मे जे

कोठली इहाँ मेने रहए। निराया पर लहरा ओ दू मास पहिनहि छोड़ि देने रहै। मधुबनी मे ओकरा भावा सँ पृथलिके तऽ हुइवा अपना छोड़, छोड़ दाढ़ी पर हाथ फेर लागल, फेर कान झूलक आओर बाजल.....तो...वा। तोवा। ई की मुनबऽ आएल अछि हमरा ? या इ लाही।

किछु झिंक कऽ ओ एगटा भूता निकालि लेलक आओर ओकरा घुसाव लागल एहन हन् कऽ जेना कहरी पीठ बला होइ। फेर कोष मे आवि कऽ बाजल—सारक खाल खोँची लेवेम, आबारा कही के। दू तीन नाश सँ मेने अछि, मलीन बेचि कऽ खाऽ गेल।

हम ओतऽ सँ हटि गेलहुँ। भिजेतमे दुमन-धूमन टीतन पर अएलहुँ। सेर तीन-एक चूरा सेने छलखिन मलिकाइन, रामसेलाइन, ओकरा ओलिकऽ खाव लागल आओर हमहुँ। वड़ीओर सँ चूख लागल रहै। ओड़क-ओड़क खाव लेलाक पश्चात् दूग हरियर मिरचाइ मोन परल। खाव कऽ टीतनक बाहर सँ पानि पीबि अएलहुँ।

ओड़क कालक पश्चात् नाड़ी एलइक। हमसब दखन तक ठिकटे नहि कटएने छलहुँ। एकाएक हमरा एलल बेकारे हम सब भटकल। नयमंगला अहिना नहि नीकलल रहै, पाँच हजारक महना सेहो अपना मंगे लड़ाक लऽ गेल रहै। ओकरा सुँह मे घाम पा गहुँमक बाइल ईरीक ओहि वरति जोराक पैर भला के पाओत ? ओरि देख।

तमूचा दिन आओर तमूचा राति हम मधुबनी मे काटि बैलहुँ, ओ गाम गेलहुँ। रामसेलाइन जाकए वड़की मलिकाइन के लाकऽ डेरक नतीभा कहि देखलमि।

भूट किएक कहू, हमरा कोनो खास लक्ष्मीक नहि रहै। देख ने लागति छल, कतिकऽ काज करै छलहुँ। एतइ कष्टा के लगभग जमीन हाथ पर

दावि गेल छल, पाँच कष्टा अपन अलगे छल। संतोषी भाव छल, फरमाइल दूराकऽ वाली घरवाली भेटल छल, हिसति डोसति, वनति-भूकति सोनाक नूति छन सबकी भेटल छल। आओर की चाही ? पाँच-एक टा वातक जरूरत छल भइया। कहियो-कहियो टाका केँचाक संगी अचरी बुझाइत छल। पाँच १० महीना जेकतहुँ सँ आवि जाइत तइओ बालचन्द्र राउत वदेसर भइगइतधि। भूट किएक कहू भइया ? संगी नीके रहय कास-काल भेटइत रहय, परिवार छोड़ रहै, नीयत खराब नहि होइ। मोन मे दल-धीसक लेल जगह होइ... आओर की चाहीएक ? तऽ पाइक संगी कोना भेटा सकइत छकइ भइया ?

एक तऽ हम डीक केलहुँ एहि बेर कुसियारक खेती अवश्य करब। दोसर बाव के सोचि सोचि कए पछा करलहुँ से छलईजे वड़का पत्ता बला तमाभू क खेती करक विषय। हमरा घर सँ दक्षिण पंचकोरी बाबूक थोड़ेक जमीन नइक छलहक, ओकरा ओ बे—आबाद छोड़ि देने छनखीन। खाइत—पिबइत बाधगी छलाह, वेटा राज मे तइतीलदार छलखीन। सतरंज खेला-बाक मारी तोखीन छलाह। एहि मे पंडितजी हुनकर जोड़ीदार छलखिन, एएह पंडित ओअन पाठक ?

पूछलाक पश्चात् पंचकोड़ी बाबू कहलन्हि उम्माकू नहि, आलू उपजा एकइत छऽ तऽ डीक। नहि त नहि।

कच्छा सरकार—! हम वापस लएलहुँ। कतेक दिन तक सोलइत छलहुँ ओ जमीन लीवए या नहि। सरकार विहकुल लगमे छल। हमरा लेल इवह भारी गुण छल। मांग आओर चकोदक गाछ छलइक ओहि में, दू एक-भार शर मेहो छलइक हैत। खैर, भइया तम्बाहु बला बाव तऽ चढ़ि गेल। कुसियारक खेती करवाक अचरी क्षण ! दामे ठाकुर बला केस सेहो ओकरे सीग।

बलचन्द्रमा

१७१

पछिना साल एक बरद हाथ लागल छल ।

कूम मितिरानि घर वाली के एकटा पुरान भाव छलन्हि । साल बेर तऽ ओकरा हमरे लोका मे बच्चा भेल रहैक आओर मरल रहैक । आव ओरर चिन्ह बस यैह बरद मितिरानि घर मे छलन्हि । हमहरक कौको अरक तऽ बेचारी अस्वस्थ छल । बरदक सेवा ओकरा सँ पार नहि लगैत छलैक । भेलै ई जे चारि दौतिक लखाम बरद बेरद कमथोर पड़ि गेल छलैक । कराबधला तऽ बपे रहैक नहि, दिन-राति बेचारा खुट्टा मे बाधल रहैत छल ! मसोमास एक बर दिन मे ओकरा लोखैत छलैक, तेहो एहि लेल जे लगक पाँखरि मे सँ पानि पीआबए दू मुट्ठी पुआर मोरे आओर दू मुट्ठी लॉक कऽ ओकरा आगु धऽ देल जाइत छलैक । ई पुआर खाइत-खाइत बेचाराक मुख भौत भऽ आइव छलैक.....ओखि मे फाँची, कनपही लग भीचाक दिश मोड़क चिन्ह । हाऽ ओरर पर रोआदार जमाही मढ़ि कऽ कोनो समसायन देवता सामु अहि जीव के दुःखित बरदकबेधील आओर बदसुरत शकल घेने होई । खूटाक बाह कात धोवैक लगल छलैक जे मूत मोवर सँ हरदम गील रहैत छलैक । दूरे सँ सगक सुखावल, गील पुआरक अलीब गैल सोरा नाक के छेदैत अंदर चलि जइतऽ । तीन विशा कूम के फीमीदार ठाठ छलैक । अपन घुघुन सँ ओ बेचारा नहि जानि कि एक टाट के सामने छेड़ कए घेने रहैक । डीक ओलवे जलैक ओकर माथ निकलक हेल काफी छलैक । गलाक रस्सी भरिसक भाव के आओर आगु जाव सँ रोक्नेत छलैक । से भैया मितिरानि के दुःखित बरद टाटक ओहि छेड़ सँ माथ निकालि आवए जाव अला दिश एक टक तकैत रहैत छल—लाचारी तथा शल्प निगाह तँ ! ओहम नजारा हम कहियो नहि देखने छलहुँ.....महिमो भरि बेचाराक विषय मे सोचैत रहैत छलहुँ । बीच-बिच मे जाकऽ देखि अवैत छलैक—ओ अबरदस्ती जीव रहल छल । ऐहाती

दुनियाँक लाचारीक एक डेराउम सारन मोड़ जकाँ हमरा लगैत छल । आखिर एक दिन एगो हुमाएल जे आव जँ ओहि बरद सँ ओखि चारि होयत तऽ माथ फटि जायत.....पधिया भरि घाघ लऽकऽ लॉक खन हम बरद लग पहुँचलहुँ, साल सामने दऽ कऽ ओकरा हम कहलियेक नहि वेडा हम तोरा एहि तरहे नहि मरऽ बलोक । बस, बहुत भऽ चुकल ! आई तँ हम तोहर आओर दो हमर.....

ओ धिरे-धिरे घाल खाव लागल, बिनमास उठोओने खाइत छल । हम मितिरानि के नगीचा पहुँचलहुँ । ओ आवद जे किलतनातो ओझा कए गेबआक सहारा सँ तुलल छलीह । भादवक गर्मी छल । बौसक खपची सँ बलब बिगनि हाथ मे छलैक । आइद पावि कए उठि बैसलीह आओर आवाज चिन्ह कऽ बजलीह—की डौ रे बलचनमा ?

किछु नहि मालिकिन, घाल अगने छलैक मोड़े—हम कहलियेक ।

दऽ देखलिक बरद के आगो कऽ ?

हँ मलिकिनी, दऽ देखलियेक ।

अच्छा.....

अच्छा नहि मलिकिनी—मितार लऽ कऽ हम बजलहुँ—ई बरद आई-सँ हमर भेल.....

मसोमास हँसऽ लगलीह । हिनका लग मे जे बलचनमा दिन भरि धाकल अछि, ईसो-ठडूक गप कऽ कऽ मोन बहलाबह आएल अछि । किछु नहि फुरलैक तऽ बरदेक बाल उठा लेलक । बिगनि के मुँठ सँ पीठ मोचैत बजलीह दूर धुरहा । माही खेड़ बाल की ई बरद आव काटि सकतै ? मसोम तऽ अगिला जन्म मे तोरे हर बहलोक । घाघ खुअने धहीक, मोन नहि रखलोक ? ही-ही-ही-ही-ही, हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ होइ.....

उड़ना नारि कर हलकीह भिन्नः। हम मुदा मुन-मुन हलहं। ओही की हँसैक बात छलैक मर्या ?

हँसि-हँसि कऽ जहन हल्लुक भोजीह तऽ बजलीह—के लऽ जायत अहि बरद के ? चारि रगयाक खाल तऽ निकलत, हम बुधुआ (बुद्ध संसार) के बजलीह वाली छी । ओ आदिकए खोलि कऽ लऽ जाए ऐकरा, जावे तक जीअए तावे तक सबूर रखए पाछु....

नहि नलिखीनी, हम एकरा एकने खोलि कऽ लऽ आइत छी—एतेक कहि कऽ हुन ठठलहुँ तऽ ओ मुँह लटकावऽ बजलीह—किछु मए गेलैक एकरा तऽ नाहक के तोरा यउवक परामर्श नहि लागि जाउक । बाअ, हमरा तऽ बड़ डर लखैत अछि ।

डर कथिक भलिखीनी ? हम कहलएक—मगवाय करताइ तऽ चारि महीना मे एकर पाँता बदलि जयतैक । अहाँ किछु फिकर नहि करब... ओ हमरा धोखा दए, नहि मकैत अछि ।

अहि पर ओ बजलीह—से तू जान ! किछु जाँक कऽ कहलकैक—कालिह सवेरे लऽ जाइहै, दखन राति कऽ डीक नहि होबलकैक ।

हम कहलएक—अच्छा भलिखीनी । ओहिगति कऽ सुशीक मार हमरा नीद नहि आएल छल । एहन समय छल कि बहुत बड़का कास कऽ आएलहुँ अछि.....

सवेरे अचिका दिन बरद के अपना ओहिदाम लए आएल छलहुँ । महीना भरिह सेवा बेचाराक सूरत...शकल बदलि गेलैक । दू महीनाक बाद तऽ ओ मैदान मे दीड लागल । गादो, आसीन, कालिक थार रगहन.....चारिमासक बाद ओकर एकदमे काया पलटि गेलैक । ब्राह्मणी के कवेको कादमी हुमेलकैक आपस कए लीअ अपन बरद की ओ मलचमसाक आपस छैक ? लातीस-

पदचार चरमा से कम नहि लेब, है.....

मिलराइमि ककरी बातक स्थान नहि देखिखिन्ह, हमरा सेँ एक दिन कहलन्हि—बाबो, आब ई काज लेबए लायक भऽ गेलह । ठकीरी हमरा खेत के तोरा जिम्मा कए देने छह, ई बरबो तूही राखऽ बाबू—हमरा ओहिदाम जाएत तऽ फेर एकर उएह दशा होएतैक ।

ई मसोमात जानकैएक दवा छलैक जे ताँडर दोस्त बालचन्द्र राउत बरद बना कहाए लगलाह ।

एकटा बरद राखेलावन के रोही छलैक । हम ओकर सेँ अपन भोजि मिछैलहुँ । हु ओकरे दलैक । एक दिन ओ जीतेक छल, दोसर थिदम । हमरा संग अगन जमीन तऽ नभूलए छल । अकसर हमर हर-बरद दोसरक जमीन मे काज अवेत छलैक, एकरा जेल चारि आना रोज बतौर भाड़ाक भेटैत छल ।

कुसिपारक खेतीक लेल हमरा चुन्नीक समान बाता भेटि गेल । चुन्नी सम-वर्ष चारि-छः कड़ा कुसिपार जरूर गोइत छल । किछु मिल मे पडवेत रैयाम आओर किछुक दुई बनावेत छल । डेढ़ दू सौ नगद भेटिए लाइत छलैक ।

बामो डाकुर बाबा जमीन हुदिवा पोखरिक करीब पड़ैत छलैक । साठ दण बेर गोति कऽ हम खेद वैचार केतहुँ । दू बेर पोखरि सेँ पानि साबए पड़ल कीन हागा कऽ । सुखसा पर फेर जोतलएक । डेप सभ के धुरधुरा देखिएक । तखन जाए कऽ सीइ रेखा मे खंडी-खंडी कए कऽ कुसिपार गोइत गेलहुँ । हुन छलहुँ, रामखेलावन आओर चुन्नी छलैक ।

माइ देवक बाद, डाँड़िक बीच-बीच थोड़ेक-थोड़ेक पानि आओर देल गेलैक ।

महीना भरिक बाद पैम निकललैक तऽ खुसौक सारे हम नाचि गेलहुँ । घर आबि कऽ बहुत बेरी तक बचसी सँ खेलाइत रहलहुँ । कुसिचारक खेती है जे हम शुरू केलहुँ, अहि सँ सुगनी सेहो फुलि नहि मनावल । ओ ठेठ मुकमल बेटी छल । ओकर नेहर हमरा घरक जहाँ निपट्ट उग्रुत नहि छलैक । मुलौ सँ अहिवा कहियो हम बाहर जाकऽ नोकरी करक आबि छलैक । छठथैत छलैक तऽ ओकर भौह मुलेतीक समान भनि जाइत छलैक । आओर जखन कहियो हमरा मुँह सँ खेती-बाड़ी मे कोनो नव बात निकलै तऽ सुगनीक मुँह धलाकमलक समान खिल उठैत छलैक ।

रोसाख अखैत-अखैत कुसिचारक गाछ डार तक लहराए लगलैक । अहि वर्ष सगठाम कुसिचारक खेती बढ़ी-पौँ छलैक, कोनो रोग नहि, ने कोनो कीड़ा ।

सुन्शीजीक वेदा मनुवनी-दरभंगा आइले रहैत छलैक । एहिबेर वाचन मे ओ एक नव समाचार लक्षोशक कि अगिला साल कांघेसी लोक मिनिस्टर बनि जाएतह, अंशोजक अमलधारी छठि जणलैक आओर जमींदारी सेहो नहि रहि पओलैक.....

जमविहारी छलैक ओकर नाम, परमज गुलाब सँ लोक बचू करैत छलैक । जाहि दिन ओ दरभंगा सँ आएल छल ओहि लोककऽ हम ओकरा सँ भेंट केलहुँ आओर पूछलैक—बचू, मजिस्टर, कलक्टर तऽ तम के बूझ मे अखैत छइक, ई मजिस्टर की होइत छैक ?

मजिस्टर नहि, मिनिस्टर । ओ हँमि कऽ बाजल आहुत कायदा के अमल मे लाइक लेल मामूली हाकिम तम के देखभालक लेल आओर मुलुकक सरकार के चलावण के लेल मेम्बर लोक अपनो मे जोड़ि दस पांच आदमी सभ मे मुलिया चुनैत छथिन्ह वैह मिनिस्टर कहबैत छथि । सभ मुलुक भोट दऽ

तऽ लाखो करोड़ो मे सँ सेकड़ो सँ मेम्बर चुनैत छैक । सीपी मेम्बर अपना मे सँ दस-बीस घर सभ काज सलाहक जम्मेदारी सौंप देत छथिन्ह फेर हुनके बाहरक मुताबिक लोक सभ किछु करैत छथि ।

आब हमरा समझ मे आवि गेल कि मिनिस्टरक की मतलब होइत छैक स्वामी जी कहने छलाह कि अमींदार लोक कांघेसी बनि कऽ किसान सभ के ठकैत फिरैत छथिन्ह । हमर माथा ठनकऽ लागल की येह जखन मिनिस्टर भए जवनाह तऽ गरीब सभ के भलाई ऐतैक अहि सँ वा बड़का बड़का बाबू लोक सभ के ?

बचू सँ इहो पता लागल की कूज बाबू सेहो मेम्बरीक लेल डाढ़ होए-लाह, कांघेसी अही इलाकाक लोक सभ सँ भोट दिया कए फूल बाबू सँ जहेभवलीक मेम्बर बनावए चाहैत छथि ।

हम सोचए लगलहुँ, भए सकैत अछि कि मेम्बर बनि चुकला पर हमर छोटकी मलकादम के येह भतीजा बाबू मिनिस्टर सेहो भऽ जाइत, तखन तऽ कैत । भूइडोलक बाद रिलिफ फण्डक रुपया लए कऽ ई बाबू लखि हमरा बस्ती मे केइम खेरात वोटल मेल छल तेवर गाल, से आहाँ के बताए सुवल छी मैया । एहन मेम्बर सँ तऽ हमरा ईलाकाक बँटवारा भऽ जाइत, तऽ पानि मे आगि लागि जायत.....

गाँव मे रोज दू एक टा अखबार आबऽ लागल । बटमा सँ सात-सात दिन पर निकलऽ वला अखबार 'कौति' किसान आओर मजदूरक विषय मे खुलि कऽ लिखै छलै । ओकरा पौँती-पौँती सँ असन्तोषक चीन्गारी नीकलइ छलइ । दू सँवा पढाक ओ अखबार पहिले बचूए मंगवाएब शुरू कएलाह । ओ कहलकैक जे अहपूराक किसानक विषय मे कौति मे कइयो बेरि छपि गेल छैक । कांघेसी अखबार वा शेट जमींदारक अखबार एहन खबरि सँ बिस्-

रिश्ते कड नहि छपवैत छथि ।

'क्रान्ति' मंगल कड नोकलैत छैक । हमरा मरती के विरहस्पति आओर लोनक दू मनकड रहै डारपुन के अण्ठाक । बच्चू के ई अण्ठपर विरहस्पतिक भेटि जाइछले । ओइदिन लोकनक ओकरा बैठक मे बेला चुटैत छलैक । लालटेन जरा कड बच्चू हमरा लमके क्रान्ति के विषय मे सुनवैत छलाह । लूट-पलामे पौँछ छ गोटे तऽ छला तारानन्द बाबू, तंगील झा, रमकैलोगा, तीरी अमाए, कपिलेश्वर नइख आओर हन । कहिओ कहिओ चुन्नीओ शामिल भऽ जाइत छथ । तारानन्द मामूनी रहस्य छलाह, कर्ज-वर्ज नहि छले । बंभीश झा के छलनि पहलमार्गिक लोख... भागस बढियाँ करे छलाह, खागकड गोम आओर मांझक । बरक मरीय छलाह, दरभंगा—मुलपारपुर रहि रहि के बीच-बीच मे होइलक नौकरि आओर बर्हीदारक आहिठान कुस्तीक दावपेच देखवैत छलाह । तीरी, कपिलेश्वर आओर रामखेलान हमरहिर्का आधा खेतगधर आओर आधा किसान छल । बच्चूक बाप चुन्नी थिनिन बिहारी लालबास मधुबनी इस्टेट मे एकाउन्टेन्ट छलाह । बढियाँ आगदनी छलेन । तऽ हमर ई मंडको मन जगाकड बच्चूक मुँह सँ एखबारक एक-एक पौँति सुनल करे छल.....

किछु दिनक बाद बच्चू कतहु मरिहक रहमान साहेब क फाल सँ, किसान समाक रसीद लडाऽ जनलक इकनी दय अककटी लैल, बस आइ तँ तौ किसानक नेम्बर बनि गेलह ।

अपना टोल मुहल्ला मे हम दस आवसी नेम्बर बनेलिक । मसोमाल कुन्नी सुनलैन्हि अपने आवि कऽ एकनी दऽ मेखीह आओर रसीद लऽ मेखीह । कहलनि वाला देवताक प्रसादक हेतु इ लूटकी भरि चिबास हमरो मरीयीकी के ।

मगूचा गाँव मे पचास-एक नेम्बर छलह होएत । महुराक किसान के

पड़ाईक इएत अवसर छले । मालिक आओर देव-देव किसान के खोह कड बाँकी समक हिलचस्पो गड़ोलीक दशाकाक आन्दोलनक तरफ रहैक । मनियार ताका सँ शेखअब्दुल तक, सारानम्ब बाबू सँ लऽ कऽ तीरी अमाततक आओर कूश्र मिलीरक मसोमाल सँ भेगीन नखोमात हनीदा तक... सब मेम्बरी रसीद लेलनि आओर एक-एक आना देखलिन ।

तहिना मालिक तथा वही बाबू अपना खिलाफत आन्दोलन के ओना-मासी भंग चुकलाह । छलैहो बात तीके । हीनका समक सूद दर रूत पर जनता उवाह भऽ गेल छल । एक टाका बर्ष भरि मे डेढ़-तीने दू टाका आओर एक मन धान मास-बूढ़ मास मे डेढ़ मन भऽ आइत छलन्हि ।

छोटका जमीनार सँ आओर कलाह होइत छैक, एक लऽ करैल फेर ओहि पर नीम चढ़ल । किछु नहि पूछू भैया ! ममिला मालिक भारी कंचुक छलाह । तो देखतहुन लऽ कहि उठितह हापराम, मैस जोडी पीयर-दौस... इएह डेढ़लाख टाकाक आदमी छथि ?

हं भैया, इएह डेढ़ लाखहुक मालिक छथि बाबू-जसोबर चौधरी... आओर विश्विषी बाबू के जगानी भीरानी लम्बला पचास हजार टाकाक धुश होएतैक । तमिलना मालिक के अपन खेत छलैत चारि से बीघा ।

मालिकक चार गड़ो क डेढ़ हजार बिघा काश्त जसोब धेनीपट्टीक नकदीक छलइम, जकरा ओतेक किसान मुशोभित कएने छल, आओर दिनका समके मालमुजारी भेटैत छलैत । एतऽ अपना ओहि ठाम डेढ़ से ए बीघा जमीन रैयत ओतेत छल, मनहुँडा । दोसर दिस जालफरेस सँ छोट किसानक मरोसी जमीनक अधिक हिरता ममिलवा मालिक पहिनिह हरपि मेने रहथिन । विश्व बाबू के जमीनक सेवरे बीघाह हिस्सा बेइमानीक प्रसाद छलइम । हुनकर परदादा भारी पंडीत छलथिन, पछिम सँ खूब कमा कऽ जनने छलथिन । दादाक

गौच हजारक सम्पति पोसाक अन्नल मे बाँचि कऽ एक सालक भऽ गेलइन ।
 यम एक हजारक बन्धु जागुरहु मे हाथ लागल छलैन बिल्ली बाधू केँ । स्त्री
 एहन नागमंसी जे नाक-चाप केँ एके सन्तान ।

ओ एहि चित्र केँ सोचिओ नहि सकै छलाह जे कि मालिकक मुकाबला
 केँ जाय सकैछ । महपूराक किसानक लड़ाई सँ हमर ओखि खुजि गेल हम
 ए तऽ कऽ लेलहुँ जे बिलो भरि जनोन आय मालिक केँ हरपऽमहि देखै ।

गौचक पक्षिण, एकदम करीब, खेतक एक ठा धड़ियाँ डुकड़ा छलइक
 नब्बे बीघा केँ । एहि जमीन मे सभ किछु उपजैत छलइक । धमनी, मरुआ,
 सारिबीओ, कुपियाओ, तिसीबी, राइडिओ, अम-गहूम रोहो, ऊधीर रोहो, कुयी
 रोहो । इ जमीन तीस-एक जुगलमान न्यार आओर मलाई सभक अधिकार मे
 रहैक परस चक्षाकी सँ मालिकक परदाश एकरा अपना भागे चढ़्या लेलखिन ।

बोहि तीतो किसानक नाम एक दिन एकाएक अदालतक सम्मन अएलइक
 तऽ गौच भरि मे बिजली दौड़ि गेलइ । कामज देखला सँ बत्ता चललइक जे
 चारि कर्ष पहिले बेसी मालगुजारीक नालीय कऽ देखलइक मालिक ।

परेशान करवाक ई एक ठा धड़िया बहाना छलैक, किसान मालगुजारी
 सालक साल देत जायल रहैक ।

हमर विचार मेल जे सम्मन लऽ ली परबच कचहरी कियो नहि जाइ ।

दोसर दिन बरहम स्थान मे लोक जमा मेल । हम महपुरा जाय डाँकदार
 रहमान केँ बत्ता अनलिबनि पचास-एक किसान मिलि कऽ सपथ खपलहुँ
 जमीन नहि छोड़ब, चाहे किछु भऽ जाय । बरचू केँ निकरेटरी बनाएल गेलैक
 हम बनलहुँ स्वयंसेवकक मुखिया—क्रोध सँ पहिनहि जरदारे चूलल गेलाह ।

मालिक सब केँ स्वयंसेवक बल रहैक, शरीफा, एल० डी० ओ० आओर
 कलकटरक बल चलइन । ओ सुरु मे एहन चालि चललाह जाहि सँ किसान

हिम्मत हारि कऽ बैसि जाथि ।

फसिल तैयार भेलइक तऽ ओहि पर इका १५५ लागि गेलइक । इ लोरी
 मिलेटरी आपल । जमीन नजदीक बला धमीचा पर लम्बु गानि गेलाइक ।
 खेत पर पड़ल छलइ ।

एहन मोका पर समीपान हुनोश बड़ बहादुरी देखलकैक । जकर ई जमीन
 रहैक ओहि किसानक ओहि ठाम तँ दम-पन्द्रह ठा जनाना केँ बत्ता कऽ कऽ
 गेलैक आओर चारि कट्टा तैयार फसिल चान काटि लेलक । जारक सति
 शकड़ जरि रहल छल । कप्टी बला दूनु सिपाही गाछ पर औठगल सुतल रहथ ।

महपूराक किसान खुशेआम दिन दहारे फसिल काटय चाललकैक, जाहिमे
 एक आधमीक खून रोहो भऽ गेलैक । अपना ओहि ठाम हम सभ बदलि गेलहुँ ।
 जमींदार ओर सरकारी अफसर दुयोधन ठहरलाइ हुनका युधिष्ठिर, पराहत नहि
 कय सकै छलखिन मैया । पिटाइ पर पिटाइ खावध आओर सेइ कतरी आँखा
 जेल चलि जाएब बहादुरी नहि । एहन सीधाई सँ पूजा होऽ तँ जमीन मुइयोक
 मोक भरि सेटवाक नहि रहै ।

दरोशा पड़ोसक मुसहर केँ फसल काटयक हेतु तैयार कएलक तँ हम, बरचू
 लोरी बरैरह हाथतोरि कऽ समझोलिअइ । बड़ मोक सोध आओर ईमानदार
 होइत छथि । हमर मध्य गानि गेलाइ—बनलाह हमरा मुखिया सँ कार्लि
 मालिक कहलकैक दूई बीघा हम तोरा, आओर बाँकी आधमी केँ पर पिछु दन
 कक्षा क खेत लिखि देत छिएक, कतेक घर छँ तँ खय ?..... मुखिया हाक
 कहलकनि नहि सरकार दोसरक पेट काटि कऽ देब तऽ नहि दिय । हँ, अपना
 खेत मे तँ देवद चाहैत छी तऽ ठीक छैक.....है हम तोहर फसिल रोना कऽ
 कटअइ ।

मुसहरक गुँह तँ महापूराक बात मुनि कऽ हमर सीना आरी चौड़ा

मड गेल भैया ।

अफसर सब सोच विचार मे परि गेलाह । किसान के एकता लोरवाक चालि सेही चलल गेल रहैक । मालिक दिस सँ आओर बिली बाबू सन पैदा बिद्वान दिस सँ सेही किसान सभ पर दबाव डालल गेल रहैक । मजिस्टर आओर एम० डी० ओ तऽ बीच बीच मे अवितहि छलाह । मालिक अपना मुन्शी बला हिसाब भीरेनहि छलाह । मिलेटरी वाला कमिल कटवा कऽ कोयक लग डेरी कैल गेलइक ।

माय के आओर सुगनी के मलिकाइन अलग-अलग सँ भजा कऽ हुथल-खिन आओर कहलखिन परि बालचन अपना हरकत के नहि छोड़त तऽ घर फूंकवा देबोक.....

एकदिन नोडायल थोखि सँ माय आबि कऽ छेल । हम झोलती मे ठुका पीचि रहल छलहुं । पूछलियेक—की छोक माय ?

ओ कहलक—मलिकाइन तोरा पर बड़ तमसावल छथुन कहलखून जे जे संच मंच सँ नहि रहत तऽ घर फूंकवा देबैक ।

घर फूंकवा देती—हम कहिक कऽ बजलहुं—हुनकर चायक घर छैन्ह ! जो बैस...नेल की कर छलैहें ।

कोरा मे गरमा कऽ भूंगरिया सति रहल छल, भूंगिया हमर सुन्नी । अठ्ठारह भागक वेटी । हमर कहकल आवाज सुनितहि ओ जागि गेल आओर कानऽ लागल । हुकाक खोली हम टिका देलियेक । माय अन्दर जायस चलि गेल तऽ बागल—बागल करी के । घर ककरो फूकि देब सोक बात छेक ? हमरे की जमीन्दारक बग चलत जे ओ समक घर फूकि देखिन ।

भूंगिया के तऽ जा कऽ हम सुगनी लग दऽ अएलियेक । लाठी पठएलहुं आओर सति परलहुं आसामक दिग । सुगनी चलैत काल मना कयलक तऽ हम

न-हलियेक वत् एतेक बेरावे किएक छै ।

आसरम बरहम स्थानक लग सिलबोनी मे छलइ । शोल अन्डलक अपन रामा आओर तसुर शोल सकदमक चिरायल मे ई जमीन भेटल छलइ पन्द्रह ठा । आसरमक हेतु समूचा सीमबोनी शोल दऽ देलकैक । शच्चू आओर जमीन बा बाँस देलखिनइ । चूरी बाप के तमसाएक बर सँ दुब बोझ नार देलकैक । हम ताबेक सेर मरि जोर ।

हम ओतऽ पारी पारी सँ सूतैत छलहुं । ओहि राति हमर पारी, शच्चू जमीन भा आओर शोल डेढ़ पड़ पड़ राति तक रहलाह—बीच मे अलाव छोड़ि एकान्त मे चारु बीस बैसकऽ रोज राति तक विचार कएल जाइ छलइक । ओहि राति एकटा नव खबरि दुआएल—रेयाम कोठीक चीनी मिलक मैनेजर पर अपन बीसा (छांटका मालिक) के कहला पर फूल बाबू दबाव देलखिन अछि जे कि रामपुरक फलान्कला किसानक कुसियार नहि लेन...

हमरा समक हेइ भारी सूतीबत आबि गेल छल । हमरे सज बीसीक कुसियारक फलज तैयार रहै—बड़ निमन फसिल । तपे भरि सँ एहि फसिल पर आश लगौने छलहुं । एक-एक किसान अपन मोनी भरि करीब पसीना सुखेने होयत तहन आकऽ कही ई रत भरि घर तैयार गेल । ककरो सय, ककरो दू सय, ककरो पाँचसय तक भेटऽ वाला छलैक, एही पैसाक बल पर जाकिम जमीन्दार के सेहो हम सब एखने सँ अँठठा देखवैत छलियेक ।

धानक सैकड़ा मन फसिल मिनेटरीक कब्जा मे छलै आओर कुसियारक एहि खेत पर एहि तरहक कंकट सझरा रहल छलैक... ओ सब चलि गेल छलाह । हमरा श्रद्धा काल तक निज नहि गेल । दूई स्वयंसेवक—कहिशो-कहिशो तीन, चारि, पाँच तक—ओतऽ दिन राति जोक रहै छलैक परंच हमरा सेहँ एक-के पार सँ बेराबेरीक ओतऽ पुनव जरूरी रहैक । इ दूनु स्वयंसेवक भाइ

देकुल से पठाएल गेल छलाह । ओन् जमीनारक खिल्लक किसानक मोचो भइ मजबूत रहे । एतहु जोरदार अंदोलन होबक हेतु छलैक, एहि हेतु किसान सभाक जिलाक-कोन्विल गुरुङ्ग मे दूइ नवजवान के हमरा बीच पठौलक । तीधा-सामीथ्री, साग, लकड़ी, दूध, तेल, लकड़ी, फटा, धी, हाकी भडा सभ इतकाम आसरम मे हमरा समदिस से छलै । ओ भोर सौँक हमरा नवजवानक आगू-आगू नारा लगबैत फिरैत छलाह—गाँवके अन्दरो आबोर कहरा बाली जमीन क चौगिर्दे में हो । कहियो-कहियो पात परोसक घस्ती मे जाक ओलोक एबुका हाल कहि अवितथिन, आ सगे सुद्धीया अनाज सेहो अलुलैत अवितथि । हप्ता मे दूइए बेर परोसक गाँव मे नीकलितथि । तेओ खुब प्रचार भइ गेल छलैत ।

मोर्छटियर भाइ सूति रहल छलाह आबोर हम चिन्ता से सूति नहि सकै छलहुँ । पोआरक सेवावट पर परल नजर रही । मइपूराक एक किसान जान से भरल छल, एतहु कफरो सास खलि सकै छलैक—हम सोचैत छलहुँ—कफरो किएक अतेको के सास खलि सकैत छइक । आहि मे हमहुँ भइ सकै छी ! देजा-प्लेग फकरैत छैक तऽ ओहि मे आदमी तरपि तरपि कइ मरि जाइत छइक, विपपर सौँप कटे छइक ? नाबी हमेशाक हेतु हूँ जाइत छइक, सोनाता में कोली महरानी कि कजला मे राताराती अतेको के अपना पेठ मे तय लइत छथिन, विजलका ले के छइ आबोर बेजर (बज) खसैत पड़क तऽ ओहि मे कफरो जानो चलि जाइ छइक—बबूक गोस-हमीक चेहरा सजसि पर नाक्य लागल—सूनीक खिलखिलाहट काम मे गुंजि उठल—मायक हाथ तरहत्थी गाल पर फिरैत बुझायल ! सोचैत-सोचैत माया झन-झन करय लागल तऽ हम छटि गेलहुँ । मंजीक उपरका लेबी मे बीरी परल छल ओकरा निकालहुँ आबोर बाहर पतानी मे आबि कइ बैसलहुँ आँगुर से उठा कइ देखलहुँ तऽ अन्दर

आगि छलइ ।

दूइ सुद्धी पुआर ओछाओन मे सँ खीच अनलहुँ घूर सँ चीनगारी निकालि फूकि-फूकि कइ पुआर धक्कयलहुँ आबोर बीरी खलैलहुँ ।

आब ऊपर आकाश बित मँह कएलहुँ, एकटा बड़का बूढ़ शीसीक माथ फूकि आवल रहैक ठीक हमरे माथ पर । इनोरियाक तेरस रातिक वृषहर छलइक । गाँव-घर, खेत बाग, बड़, पीपड़, तार सब फक-फक ! सभ पील सभ लम्हर, सभ साफ ! धक-धका कइ वेसुव पहल धरती पर सन्दर्भा भरि-भरि सूप दूव उछलइत छलखिन । बली बाइक बेगक बला नवका खपरैल मकान हासे मे चूनेटल गेल छलइ, ओ तऽ सभमे अधिक खसर लगइत छलइक । ऊपर मामूली खपरा एक पौति छलैक तऽ दोसर खसर खपराक । ओइ मकानक चार एत तऽ पाने मजरि लीचैत छलैक परंच एखन बड़ा गजब करै छलैक । पात-परोस मे चारि छ कोम तऽ ओहन खूबसूरत मकान आबोर कोनो नहि छलैक । अपन मइया भला कोना देखाइत ।...मकिला मालिक आबोर बली बाइक मकान संग पोआरक तीन-चारिटा टाल रहैक तार जकाँ उँचाइक गोत धर बूझ । हूँ हूँ हुनका तमीन जायदाइक सभ से पैघ भवाह इएह छलै कीने ?

जखन-जखन फूकरक आवाज सँ रातिक सन्नाटा टकरा जाइ तऽ हमर मन अपना खोल मे लोट अघिबै । बूढ़ शीसीक फूकल माथक छौँह सँ बित के एक प्रकारक तलछी मेटैत छल, तगे छल जे अपने कोनो पुरखा आशीर्वाद दऽ रहल होइ—एना माथ पर फूकि कइ । जाहि नव रास्ता पर हम रैर बढे लहुँ अछि ओहि पर चलि जाबक हेतु एतेक माफ इशारा पाबिकइ हमर रीढ़ एकदम सोफ भइ गेल । सीना तनि गेल छल बाँहि केलाक किछु काल तक जपन छाहीं देखैत छलहुँ.....

आब बिभाग हल्लुक भऽ गेल छल पैर अपने आप आश्रमक मड़ेवा दित
बढ़ि गेल। अन्तर आबि कऽ गोआरक ओहि पैचावती ओझाओन पर कृत
रहलहुं, टटोलिकऽ गरांत ठिकिया जेलहुं ओ अपना जगह पर ओहिना पड़ल
छले.....

आश्रम ने नूकाकऽ हम सभ एकटा गरांत रखै छलहुं। मालिक के खुनी
नीगाह सँ हम नशिकित नहि छलहुं। बन्धु, बन्धोत, रामचंदावन, अन्धूरी
आओर हम—हमरा पांचो गोटे के पुलिसो फंसवऽ चाहैत छल, मालिको
हमरा अपंग बनएवाक मनसूबा बन्दैत छलाह। धुनाव मे कापेसक भारी जोत
भऽ गेल छलैक। अचेज हाकिमक बरत। आव स्वदेशी गिनीटरक हुकूमत
कायम होमऽ जाव रहल छलैक। सन् सैतीम (१९३७ ई.) केँ शुक्र होई
होइत कापेसी जमींदारक भाई बन्धु आओर सार सखर मूँध पर ताव देवअ
लागल छलैक।

कापेसी जमींदारे केँ फायदा करैक—स्वामीजीक ई बात हमरा रग-
रग मे समा गेल। हम पुलिसो केँ चिन्हैत छलियेक आओर जमींदार लडैती
केँ—जमींदारक सह पावि कऽ पुलिमवला हमरा तरह-तरहक मूकधमा मे
फंसवय चाहैत छलाह। मालिक कमी नजरि मूँशीक हीवाबी नजरि एलैह।
जमानाक रफतार केँ परखवाक अफिल हुनका मे कहाँ सँ अद्वितनि। हुनकर
खयाल छलैम जे बस रामपुर मे पांचे आदमी केँ कायू मे रखवाक काज छैक—
नहि आवऽ कायू मे तऽ नारपीठ, जेल, खून..... जैनाहीए रास्ताक कांटो
हटाती। राति दिन आठो पहर अपना दित, अपना जन्ताक मिगरानी दित
हमरा दित सँ चौकसी रहैत छलैक। इ गरांत ओहि चौकसीक एकटा सङ्कट
अछि।

दूनु स्वयंसेवक देखबनि छल पड़ल रहथि, एकक नाक वजैत छलैम फो

कर.....कर.....को.....को.....क.....

बामा बांझिक सिरमा बनाऽक हमहुँ आखि बन्द कएने छलहुं। नीक
आबि रहल छल की चोरवत्तीक तेज रोशनी आखि पर पड़ल हम धरफडा केँ
छडि बैलहुं। एक हाथ सँ गरांत सभारति कइकि कऽ बजलहुं—केहि
तोहर बाप—आबाज आएल एहन—मारि देऽ गार के, लगा!

स्वयं सेवक के भङ्ग-फोरवाक समय नाहि रहल। हम गरांत लऽ कऽ सीपकी
लहुं बाहर। दस हाथक दूरी पर दूटा कारी मजीठ आदमी देखब पड़ल दूनु
शेवार ठाढ़ छल। “चोर-चोर” चो ११० ११० ११० ११० ११० ११० ११० ११०
ओर “दोर ११० ११० ११० ११० ११० ११० ११० ११० हम एक दिन दवरलहुं तऽ दोहराजमनी
ऊपर मोछ फसवऽ बला जाल फेकलक। हब ओहिना हला करैत रहैलहुं। गला
पैर एकदम जाल मे फसि गेल छल गरांत बेकार छल। शकरीवाद। इमफ
ऊपर चारिटा लाठीक भरपूर बार पड़ल। गरांत सँ जाल के केहरिबहाइत
काटि अकर देलायेक परंच ओहि सँ हमरा कोनो मदद भेटल होए सैबसल मंथि
एतबहि मे भारिक दोसर दोरि शुक्र भऽ गेलैक। वो दोहराजमनी नहि
रहै ओकरा पाछु ओओरो कलेकी आदमी रहै जे पलानी क केहिपुमि मंथि
इमहरका एक मुँह सँ निकल्ले—बलचनमा, माफी मोम चलिना मोलिक
निफ १९३८ कऽ आ
ओहि ठाम।

दोसर आवाज अछलैक—ने ने एना नहि कर! चलिना माफी मोम चलिना मोम
सखर मंथर कऽ लेत आओर पाछु निपत्ता भऽ जायत सार।

हम कहलियेक—हम तोहर की बिगारलिब अछि। तूँ मेहनति मजुरी
कऽ कऽ पेट पाले रह्य आओर हमहुँ। जाल हटालैह आओर वांझि कऽ लऽ
चलऽ जहाँ तऽ जयवाक होऽ.....

ओकरा भरिसक बाजब मना कएल गेल रहैक। डीलकोल, काफी मोटाएल

जप...

DATE DUE

... ओहि मे

सँ एक गोटेक हाथ अपना लग पावि कहन जाकरा कब्जा मे दौत जाटि लेलियेक । बाप-बाप करति ओ ओतहि खसि परल तैओ ओकर कब्जा हम नहि छोड़लियेक ।

जीवन अनमोल चीज छैक भैया । परंच एहन गोका पर अपन कीमति की होइ छैक । कहिओक जे है ।

ओहि कात मृत्यु के सोझा ने देखिकऽ पिरनी जँका हमर दिमाग नाचि रहल छल बेटी, घरवासी माय, कुसिवार क फसिल पलानी मे रूतल भोलैंटियर जिनका मूँह में भरिसक कपड़ा ठूलि देल गेल रहैक आबोर कमाएवला खाएल, एकर चलति जे कि फिछु होई.....घरती ककर ५ जे जोखए, बाचन करए तकर । किसानक आजादी आकाश सँ छलरि कऽ नहि अएतैक । ओ परगट हएत नीचा—जोतल घरतीक भूरभूरा देव के कोरि कऽ.....बूढ़ा शीतो एखनो तक हमर माथ घुमेत छल.....

की एतयहि मे आश्रमाक प्रछुआर सँ एकटा आदमी आरल ओकरा हाथ मे नेपासी खुखरी (तलवारि) छलैक ।

हम बान्हल छलहुँ । जाल सँ राम अंग ओझाएल छल । हँ दौत सँ एक गोटेक कब्जा जपने रहियेक ।

पहिलका हमरा माथ पर जोर सँ साठी नारलक एक दहि, दोसर बेर... हम बेहोश भऽ क जमीन पर लुइकि गेलहुँ !



1973-74
871-473
05/12/73